प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणको डी.एल.एड. कोर्स
(२ वर्ष) (दूरशिक्षा माध्यम)

विषय वस्तु ज्ञान अनि नेपाली भाषा शिक्षण पद्धतिहरू
CONTENTS AND METHODS OF TEACHING MOTHER LANGUAGE - NEPALI

पश्चिम बंगाल प्राथमिक शिक्षा परिषद
आचार्य प्रफुल्लचन्द्र भवन
डिके – ७/१, सेक्टर २, सल्टलेक
विधाननगर, कोलकाता – ७०००९१

পশ্চিমবঙ্গ প্রাথমিক শিক্ষা পর্ষদ

প্রথম প্রকাশ : ডিসেম্বর, ২০১২
দ্বিতীয় প্রকাশ : ডিসেম্বর, ২০১৪

Neither this book nor any keys, hints, comments, notes, meanings, connotations, annotations, answers and solutions by way of questions and answers or otherwise should be printed, published or sold without the prior approval in writing of the President, West Bengal Board of Primary Education.

প্রকাশক
অধ্যাপক ড: মানিক ভট্টাচার্য্য, সভাপতি
পশ্চিমবঙ্গ প্রাথমিক শিক্ষা পর্ষদ
আচার্য প্রফুল্ল চন্দ্র ভবন
ডি. কে. - ৭/১, সেক্টর - ২,
বিধাননগর, কলকাতা - ৭০০ ০৯১

Prelude

It gives us immense pleasure to announce that a Two-year D.El.Ed Course, ODL Mode (approved by N.C.T.E) is about to commence as a result of the collaborative efforts of the WBBPE with the Govt. of West Bengal in the School Education Deptt. after having overcome all the obstacles. This is going to solve the problems of the existing in-service untrained Primary Teachers of our state in the context of N.C.F. - 2005, N.C.F.T.E.-2009 and RTE Act-2009 as well. It has been decided that this two year teacher-training course will be conducted in the Open Distance Learning Mode under the aegis of the West Bengal Board of Primary Education for the next three years. Following the order of the School Education Department, W.B., a team of experts comprising eminent educationists, representatives of N.C.T.E and IGNOU has very sincerely prepared the syllabus, study materials, guide books for the trainees and the Coordinators and Counsellors of the 2 year D.El.Ed Course (ODL Mode) under the supervision of WBBPE. The curriculum and Syllabus of the core papers, four method papers with one compulsory optional paper out of two and four practical papers have been framed. Separate year wise study materials have been prepared for each paper and approved by NCTE.

The WBBPE will be glad if these study materials and guide books, which have been developed following the norms of the Open Distance Learning Mode, prove to be fruitful.

The WBBPE welcomes constructive suggestions and feedback for the improvement of these publications. The West Bengal Board of Primary Education would also like to convey sincere gratitude to all the eminent academicians from the NIOS, NCTE, IGNOU, SCERT, West Bengal DIETs, PTTIs and the Syllabus Committee and all others involved in the process of composition, editing and publication of these books.

December, 2012

President
West Bengal Board of Primary Education

আমাদের কথা

জাতীয় পাঠক্রমের রুপরেখা - ২০০৫, জাতীয় পাঠক্রম রূপরেখা শিক্ষক শিক্ষণ ২০০৯ শিশুর বিনাব্যয়ে বাধ্যতামুলক শিক্ষার অধিকার আইন - ২০০৯ এর প্রাসঙ্গিক ধারা উপধারা মাথায় রেখে আমাদের ২ বছরের দূর শিক্ষার মাধ্যমে ডি. এল. এড. কোর্সের পাঠক্রম, পাঠ্যবিষয় ও আনুষঙ্গিক বিষয় ও রুপরেখা স্থির করা হয়েছে। এই তিনটি আবশ্যক বিষয় যাতে শিক্ষক শিক্ষিকাগণের ধারণা, কার্য্যপ্রণালী ও চিন্তনের মধ্যে আসে, আমাদের বর্তমান কোর্সের মূল উদ্দেশ্য সেটাই। RTE Act বা শিক্ষার অধিকার সংক্রান্ত আইন সম্বন্ধে সব শিক্ষকের স্পষ্ট ধারনা থাকা প্রয়োজন। শ্রেণি কক্ষে শিক্ষক যে প্রণালীতে বা পদ্ধতিতে বিষয় উপস্থাপন ও আলোচনা করবেন, তাতে তাঁকে মনে রাখতে হবে, শিক্ষার্থীর আগ্রহ, মনোযোগ, জিজ্ঞাসাকে সঙ্গী করে নিয়ে তিনি পাঠে অগ্রসর হচ্ছেন। শ্রেনি পাঠনের বেশ কিছু সময় যেন শিক্ষার্থীদের সক্রিয় অংশগ্রহণে ব্যয় করা হয়।

শিক্ষার্থীদের বিষয় জানবার অধিকার আছে। মনে রাখা দরকার পঠন-পাঠন হবে শিক্ষার্থী বান্ধব এবং শিশু কেন্দ্রিক। অনুসৃত হবে কর্মভিত্তিক, আবিস্কার ও অনুসন্ধানের মাধ্যমে পঠন-পাঠন প্রক্রিয়া। শিশুকে সমস্ত রকম মানসিক ভীতি ও উদ্বেগ থেকে মুক্ত করে স্বাধীন ভাবে মত প্রকাশে সাহায্য করতে হবে। শিশুর বিনাব্যয়ে বাধ্যতামূলক শিক্ষার অধিকার আইন, ২০০৯-এর ২৯নং ধারার আটটি উপধারা এই প্রসঙ্গে স্মরণ করা যেতে পারে। মূল্যায়ণ প্রসঙ্গে বলা হয়েছে যে শিশুর জ্ঞানের উপলব্ধি ও প্রয়োগ ক্ষমতার নিরবিচ্ছিন্ন সার্বিক মূল্যায়ণ করতে হবে।

শিক্ষক/শিক্ষিকা হিসাবে আপনার নতুন ভূমিকার কথা আপনি মনে রাখবেন-এই অনুরোধ।

আমাদের সার্বিক প্রচেষ্টা সফল হবেই।

ডিসেম্বর, ২০১২

অধ্যাপক ডঃ মানিক ভট্টাচার্য্য
সভাপতি
পশ্চিম বঙ্গ প্রাথমিক শিক্ষা পর্ষদ

Preface for the Second Edition

Modules of Two Year D. El. Ed Course were first prepared in the year 2012 for the teachers' training of in-service Primary Teachers of West Bengal through ODL mode. The modules were very much popular to its clienteles and were effective in imparting training. In the mean time the curricula of Primary Education and of regular Two Year D. El. Ed. have been changed. With a view to incorporate those changes in the Primary Teachers' Training the content and style of presentation have also been changed in the modules of Two Year D. El. Ed. (ODL) Course for the next session. Hope this module would enjoy more support from its clienteles. Any suggestion for the improvement of this module will be thankfully received.

With best wishes to all,

Prof.(Dr.) Manik Bhattacharya

December, 2014.

President

WBBPE

2YEARS ODL SYSTEM BRIDGE COURSE
FOR PRIMARY SCHOOL TEACHERS
CONTENTS AND METHODS OF TEACHING MOTHER LANGUAGE - NEPALI

विषय वस्तु ज्ञान अनि नेपाली भाषा शिक्षण पद्धतिहरू

उद्देश्यहरू

१) प्राथमिक स्तरमा नेपाली भाषा अनि साहित्यको पाठ परिचालन दक्षता अर्जन गर्नमा सहायता पुर्‍याउनु।

२) विभिन्न स्तरका भाषा शिक्षणका समस्याहरूसंग परिचय गराउनु अनि समाधान गर्ने दक्षता अर्जन गर्नमा सहायता पुर्‍याउनु।

३) बाल साहित्य सम्बन्धि ज्ञान प्रसारित गराउनु।

४) रूचिसंगत दृष्टिकोण अनि युक्तिसंगत मानसिकता गठनमा सहायता पुर्‍याउनु।

५) मातृभाषाको महत्व, व्याकरणको मूल नीति अनि वाक्य ज्ञानसंग परिचय गराउनु।

६) प्रारम्भिक स्तरमा मातृभाषा (नेपाली)– का पाठ्यतालिकाहरूसित अवगत गराउनु।

१. पद्य

१.१ घड़ी – पारसमणि प्रधान

१.२ ऋतु – रामभक्त शर्मा

१.३ सबैको म छात्र – तुलसी बहादुर छेत्री

२. गद्य

२.१ हाम्रा चाड़पर्वहरू

२.२ नेपाली भाषाका कुरा

३. व्याकरण शिक्षणको उद्देश्य र व्याकरण सिकाउने सजिलो तरीकाहरू

३.१ भाषाको परिभाषा

३.१.१ भाषाका रूपहरू – कथ्य र लेख्य

३.१.२ वर्णनात्मक शब्द – वर्ण – पद – वाक्य

३.१.३ लिपि – देवनागरी

३.१.४ पद – परिचय

३.१.५ समास

४. मातृभाषा शिक्षण पद्धति

४.१ प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणको लक्ष्य, उद्देश्य र आवश्यक्ता

५. भाषा शिक्षणका विभिन्न स्तरहरू

५.१ भूमिका

५.२ सुनाई

५.३ बोलाई

५.४ पढ़ाई

५.५ लेखाई – लेखनको महत्व...

५.६ भाषा शिक्षणद्वारा विद्यार्थीहरूका सामर्थ्य विकास

५.७ हिज्जे – शुद्ध हिज्जे गर्नु र लेख्नु

५.८ हस्तलिपि – सुन्दर हस्तलिपिको महत्व, क्यालिग्राफी।

६. मातृभाषा शिक्षणका विभिन्न पद्धतिहरू

६.१ वर्णक्रमिक

६.२ शब्द क्रमिक

६.३ वाक्यक्रमिक

६.४ बालगीत

६.५ कथा भन्नु

६.६ अभिनय/अनुकरण पद्धति

६.७ सारसंक्षेप

६.८ भाषा शिक्षणमा सहायक उपकरणहरू

६. ९ प्रगति जाँच

७. पद्य

७. १. गरीब – लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा

७. २. मीठो बोली – बाबुलाल प्रधान

७. ३. भानुभक्त – मोतीराम भट्ट

८. गद्य

८. १. भारतको झण्डा

८. २. समयको महत्त्व

८. ३. मदर टेरेजा

८. ४. कम्प्युटरको चमत्कार

९. व्याकरण

९. १. १. भूमिका

९. १. २. समोच्चारित वा भिन्नार्थक शब्द

९. १. ३. पर्यायवाची वा प्रतिशब्द

९. १. ४. विपरीतार्थक वा विलोभ शब्द

९. १. ५. अनेकार्थक शब्द

९. १. ६. सार शब्द वा वाक्य संक्षेप

९. १. ७. सार संक्षेप

९. १. ८. प्रगति जाँच

९. २. वाक्य गठन पद्धति

९. २. १. भूमिका

९. २. २. वाक्यका खण्ड – उद्देश्य र विधेय।

९. २. ३. वाक्य भेद – सरल, मिश्र र संयुक्त।

९. २. ४. सार संक्षेप

९. २. ५. प्रगति जाँच

९. ३. चिन्ह प्रयोग

९. ३. १. भूमिका

९. ३. २. अल्प विराम (,)

९. ३. ३. अर्द्ध विराम (;)

९. ३. ४. पूर्ण विराम (।)

९. ३. ५. प्रश्न–चिन्ह (?)

९. ३. ६. विस्मयादिवोधक – चिन्ह (!)

९. ३. ७. कोष्टक – चिन्ह ( )
९. ३. ८. अवतरण चिन्ह (" ")
९. ३. ९. निर्देशक – चिन्ह (–)
९. ३. १०. योजक – चिन्ह (-)
९. ३. ११. लाधव – चिन्ह (०)
९. ३. १२. विलो – चिन्ह (')
९. ३. १३. सार संक्षेप
९. ३. १४. प्रगति जाँच
९. ४. उखान, तुक्का र वाक्यांश (वाग्धारा) को महत्त्व अनि प्रयोग विधि
९. ४. १. भूमिका – उखान तुक्का र वाग्धाराको परिभाषा र महत्त्व
९. ४. २. उखान, तुक्का र वाग्धारा प्रयोग विधि
९. ४. ३. सार संक्षेप
९. ४. ४. प्रगति जाँच
१०. शिक्षण पद्धति
१०. १. १. भूमिका
१०. १. २. व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता
१०. १. ३. पाठ्यपुस्तक आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा र असुविधाहरू
१०. १. ४. सार संक्षेप
१०. १. ५. प्रगति जाँच
११. केही मातृभाषा शिक्षण पद्धतिहरू
११. १. भूमिका
११. २. कथोपकथन पद्धति
११. ३. आलोचना पद्धति
११. ४. अनुबन्ध पद्धति
११. ५. सार संक्षेप
११. ६. प्रगति जाँच
१२. उच्चारण र हिज्जे भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू
१२. १. भूमिका
१२. २. उच्चारण मूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू।
१२. ३. हिज्जे भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू
१२. ४. सार संक्षेप
१२. ५. प्रगति जाँच
१३. मूल्याङ्कन
१३. १. भूमिका

१३. २. प्राथमिक शिक्षामा मूल्याङ्कनको विशेषता
१३. ३. जाँच
१३. ४. सामर्थ्य अनुरूप मूल्याङ्कन
१३. ५. प्राथमिक स्तरमा मूल्याङ्कन : परिकल्पना, प्रक्रिया र उपकरण
१३. ५. १. परिकल्पना
१३. ५. २. प्रक्रिया
१३. ५. ३. उपकरण
१३. ६. मूल्याङ्कन र मान निर्णय
१३. ६. १. तात्क्षणिक/उप–एकाई अनुरूप मूल्याङ्कन
१३. ६. २. सामयिक मूल्याङ्कन : परिकल्पना
१३. ६. ३. पार्विक मूल्याङ्कन
१३. ६. ४ सामग्रिक मूल्याङ्कन
१३. ६. ५. वाह्य मूल्याङ्कन
१३. ७. संशोधनी पाठ : पछि पर्नेलाई केही उपायहरू
१३. ८. पाठ सारांश
१३. ९ प्रगति जाँच
१४. पाठ योजना (Lesson plan)
१४. १. भूमिका
१४. २. बृहत पाठ योजना तयारी अनि प्रस्तुतिकरण
१४. ३. बृहत पाठ योजनाका नमूना

पद्य

अध्याय १ विषय – घड़ी

कवि पारसमणि प्रधान

(१)
टिक् टिक् टिक् गर्दै भन्छ बेला बताई
"समय नगर कैल्यै व्यर्थमा नष्ट भाई!
समय यदि गरौला व्यर्थमा नष्ट ऐले
दिइ धन पछि फेरि पाइने छैन कैले।"

(२)
पढ़ पढ़ किन गर्छौं पढ़नलाई बियाँलो?
अलमल किन गर्छौं पाठ घोक यो चाँड़ो।।
वर र पर नहेरी लेखी सकेर
पर पर जाऊ, खेल लौ केही बेर।।

१. १. शब्दार्थः

बेला = समय। व्यर्थ = त्यसै। नष्ट = खेर।
बियाँलो = ढिलो। थोक = पढ़। चाँड़ो = छिटो।

१. २. सारांश :

घड़ीको पल पलमा निस्कने आवाज टिक् टिक्ले समय व्यर्थमा कहिले पनि नष्ट गर्नु हुँदैन भन्ने सन्देश दिइरहेको कविले घड़ीको टिक् टिक् आवाजमा महसुस गर्दछन्। अहिले हामीले यदि समय नष्ट गर्‍यौं भने भविष्यमा आजको समय फर्केर आउने छैन र जति नै रूपियाँ पैसा खर्च गरे पनि आजको समय पाउन सकिने छैन।

आज अल्छी गरेर पढ़न छाड्नु हुँदैन। आजको पाठ आज नै याद गर्नुपर्छ। परीक्षा आउने समयमा पढ़छु भनेर कहिले पनि बस्नु हुँदैन। पहिला आफ्नो पढ़ने र लेख्ने काम सकेर मात्र केही क्षणको निम्ति खेल्न जानुपर्छ।

हामीले प्रत्येक काम समय हुँदै गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश यो कवितामा पाइन्छ।

१. ३. कवि परिचय :

कवि लेखक परिचयको अध्यायमा पारसमणि प्रधानको शिर्षकमा हेर्नुहोला।

१. ४. भाव विस्तार :

"टिक् टिक् टिक गर्दै भन्छ बेला बताई
समय नगर कैल्यै व्यर्थमा नष्ट भाइ।"

उपर्युक्त पध्यांशमा कवि पासरमणि प्रधानले घड़ीलाई हेरेर अति नै उपदेशात्मक कविताको रचना गरेका छन्। यो कवितालाई हेर्न अघि कविता लेख्दाका समयका परिप्रेक्ष्यलाई हल्कासित भएपनि हेर्न आवश्यक छ। तत्कालीन समयमा हाम्रो भेकमा धेरजसो हिन्दी भाषाको माध्यममा नै शिक्षाप्रदान गरिने चलन थियो। कवि पारसमणि प्रधान शिक्षा विभागसित सम्बन्धित पेशामा संग्लग्न भएपछि यहाँको शिक्षा व्यवस्था पूर्णरूपमा नेपाली भाषाको माध्यममा बनाउनलाई प्रयासरत भए। सम्बन्धित विभागबाट आदेश पाएपछि उनी एकलैले प्रथम श्रेणीदेखि दशौं श्रेणीसम्म नेपालीमा पाठ्यपुस्तक लेख्न शुरू गरे। तत्कालीन नेपाली समाजलाई शिक्षित र जागरूक बनाउनलाई धेरै नीतिमूलक रचनाहरू आविष्कार गरे– जुन आज हाम्रो पिंढ़ीलाई पनि अतिग्राह्य छ। यस्तै कविताहरूमा घड़ी पनि एउटा कविता हो जसद्वारा हामीले समयलाई पटक्क व्यर्थमा खेर फाल्नु हुँदैन भन्ने सन्देश दिन्छ।

१. ५. शिक्षण विधि :

कविता शिक्षण विधि हेर्नुहोला।

१. ६. घड़ीका प्रकारहरू :

१) हाते घड़ी,
२) टेबल घड़ी,
३) देवल घड़ी,
४) क्लक टावर,
५) सूर्यघड़ी, इत्यादि।

१. ७. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) घड़ीले हामीलाई के सिकाउँछ?
२) व्यर्थमा समय नष्ट गर्नाले के हुन्छ?
३) के समयलाई पैसा दिएर किन्नसकिन्छ?
४) कति बेला खेल्नुपर्छ?
५) अति आवश्यक तीन प्रकारका घड़ीको नाम लेख।

१. ८. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१) व्याख्या गर्नुहोस् –

"समय यदि गरौला व्यर्थमा नष्ट ऐले।
दिइ धन पछि फेरि पाइने छैन कैले।"

२) घड़ी कविता लेख्दा नेपाली समाजको शैक्षिक पृष्ठभूमि कस्तो थियो?

३) सूर्यघड़ी कस्तो हुन्छ?

१.२. विषय – ऋतु

कवि रामभक्त शर्मा

(१)
कुहू... कुहू गर्दै कोइली बोल्छ।
बसन्त ऋतुलाई आव्हान गर्छ।।
सरर गर्दै बग्छ समीर।
फूलमा घुमी मुग्ध छ भ्रमर।।

(२)
त्यसपछि ग्रीष्म ऋतु आउँछ।
कलिलो पालुवा छिप्पिन थाल्छ।।
सूर्यको उत्ताप बड्दै जान्छ।
पानीको कृषक आशा गर्छ।।

(३)
वर्षा ऋतुमा पर्दछ पानी।
पानीको अभावमा मर्छन् प्राणी।।
पानी पर्नाले सप्रन्छ बाली।
सबले मन देऊ खेतमा खालि।।

(४)
वर्षा पछि बादल हट्दै जान्छ।
शरद ऋतुमा दशैं आउँछ।।
तिहारमा घर झिलिमिली पार्छन्।
अन्न–बाली लह–लह हुन्छन्।।

(५)
पहाड़ी अञ्चलमा अन्न पाक्छ।
अन्न धेर भए अनिकाल भाग्छ।।
जाँगरिलो फल हुन्छ मिठो।
हेमन्त ऋतुले बताउँछ छिटो।।

(६)
दिन छोटो र रात लामो हुन्छ।
शिशिर ऋतुमा धेर जाड़ो हुन्छ।।
यस ऋतुमा मकै छर्न थाल्छन्।
ऋतु सकिए सब खुश हुन्छन्।।

१. २. १. कविताको सारांश

उपर्युक्त कवितामा वर्षभरिमा परिवर्तन हुने ६ वटा ऋतुको वर्णन गरिएको छ। पहाड़ी इलाकामा हुने ऋतु परिवर्तनमा ऋतुहरूकी रानी बसन्त ऋतुदेखि शुरू गरेर शिशिर ऋतुसम्म नै वर्णन गरिएको छ।

१. बसन्त ऋतु : कोइलीको सुमधुर गीतले बसन्त ऋतुको आगमनको आभास पाइन्छ। यो ऋतुमा शीतल मन्द समीर चल्दछ जसले मौसम अनुकुल भएर प्रकृतिमा विभिन्न थरीका फूलहरू फुल्दछ औ ती फूलहरूमा भमराहरू घुमी घुमी रस चुस्ने गर्छन्। यो ऋतुलाई ऋतुराज पनि भनिन्छ।

२. ग्रीष्म ऋतु : यो ऋतुको आगमनपछि विस्तारै गर्मी बड़दै जान्छ र पालुवाहरू पनि छिप्पिन थाल्छ।

३. बर्षा ऋतु : यो ऋतुमा पानी पर्दछ जसद्वारा प्रकृतिका समस्त अवयवहरू झार–जंगल, पशु–प्राणी सबैको भनौं जीवन सञ्चार हुँदछ। पानीद्वारा नै खेतीपाती गर्न सकिने हुनाले कृषकहरू खेतबारीमा ध्यान दिन्छन्।

४. शरद ऋतु : यो ऋतुमा न बेसी गरम, न ठण्डा हुन्छ। यही ऋतुमा हाम्रो मुख्य चाढ़ दशैं र त्यौहार आउँदछ। खेतबारीमा लगाइएका अन्नबाली पनि लह–लह भई पाक्न शुरू गर्छ।

५. हेमन्त ऋतु : यो ऋतुमा पहाड़ी अञ्चलमा अन्नबाली पाक्दछ र खेतीवालाहरूले आफ्ना परिश्रम अनुसारका अन्नबाली संग्रह गर्दछ।

६. शिशिर ऋतु : यो ऋतुमा दिन छोटो र रात लामो हुन्छ। यो ऋतुको अन्त–अन्तमा कृषकहरू मकै छर्न थाल्छन् अनि शिशिर ऋतु सकिएपछि फेरि बसन्त ऋतुको आगमन हुने हुनाले सबै खुसी हुन्छन्।

१. २. २. कवि परिचय

कवि रामभक्त शर्मा एक चर्चित बाल साहित्यकार हुन्। उनका बाल कवितामा बालसुलभ भावना र सरल अनि मीठो भाषामा लयात्मकता साथै सत्य तथ्यलाई असाध्य सुलभ तरीकाले वर्णन गरिएको हुन्छ। उदाहरणको रूपमा उनका यही कविता छ ऋतुलाई लिन सकिन्छ। जसमा प्रकृतिको अकाट्य नियमलाई सरलतम रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ।

१. २. ३. भाव विस्तार

"कुहू... कुहू गर्दै कोइली बोल्छ।
बसन्त ऋतुलाई आव्हान गर्छ।।"

उपर्युक्त पद्यांशमा सोझो अर्थमा हेर्नु हो भने कोइलीको गीतले वसन्त ऋतुलाई बोलाउँछ भन्ने बुझिन्छ। तर कविताको वास्तविक मर्म बुझ्न सकिन्छ र वास्तवमा कविको भाव पनि बसन्त ऋतु कोइलीको मनमोहक स्वर जस्तो मीठो र सुन्दर छ भन्ने बुझिन्छ।

"वर्षा ऋतुमा पर्दछ पानी।
पानीको अभावमा मर्छन् प्राणी।।"

उपर्युक्त पद्यांशमा सोझो अर्थ बर्षा ऋतुमा पानी पर्दछ र पानी नभए प्राणी मर्छन् भन्ने बुझिन्छ। तर कविताको वास्तविक भाव भने वर्षा ऋतुमा पानी पर्दछ– पानी पर्ने ऋतु भएर नै यो वर्षा ऋतु हो भन्ने बुझिन्छ अनि पानीद्वारा नै सम्पूर्ण चराचर– झार–जंगल, पशु–प्राणी बाँच्दछ र पानीको अभाव भए यो प्रकृति नै नष्ट भएर जानेछ भन्ने बुझिन्छ।

"जाँगरिलोको फल हुन्छ मिठो।
हेमन्त ऋतुले बताउँछ छिटो।।"

उपर्युक्त पद्यांशमा कविताको वास्तविक भावमा के बुझिन्छ भने जाँगर भएमात्र मीठो फल पाउन सकिनेछ। बर्षभरीमा कृषकले गरेको परिश्रम अर्थात् जमीनमा लगाएका अन्नबालीहरू जति मेहनत गरेर लगाएका हुन्छन् यो हेमन्त ऋतुमा त्यसको फल देख्न सक्छन्।

१. २. ४. शिक्षण विधि :

श्रेणी कोठामा यो कविता पठन–पाठन गर्दा विभिन्न पद्धतिहरूको सहायता लिन सकिनेछ। जुन कुरा विस्तृत रूपमा कविता शिक्षण पद्धतिमा उल्लेख गरिएको छ।

१. २. ५. महिना अनुसार ऋतु :

फागुन – चैत – वसन्त
बैशाख – जेठ – ग्रीष्म
असार – साउन – वर्षा
भदौ – असोज – शरद्
कार्त्तिक – मङ्सिर – हेमन्त
पुष – माघ – शिशिर

१. २. ६. शब्दार्थ :

समीर = हावा। कृषक = खेतीवाला। अभाव = नहुनु।
अञ्चल = जग्गा, स्थान। पालुवा = मुना। मुग्ध = मोहित। उत्ताप = गर्मी।

१. २. ७. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

क) कुन ऋतुमा कोइलीको बोली सुनिन्छ?
ख) हेमन्त ऋतुमा के पाक्छ?
ग) दशै, तिहार कुन ऋतुमा आउँछ?
घ) दिन छोटो र रात लामो कुन ऋतुमा हुन्छ?

१. २. ८ एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) खाली ठाउँ भर्नुहोस् :–
दिन..... र रात हुन्छ .....।
..... ऋतुमा धेर हुन्छ .....।
यस ..... मकै छर्न थाल्छन्।
ऋतु सकिए ..... खुश हुन्छन्।

१. ३. विषय : सबैको म छात्र

कवि तुलसी बहादुर छेत्री

(१)
छरी ज्योति बल्नु, नलिई गर्व सेखी
सँधै जोश राख्नु, सिकें सूर्यदेखि।
चलोस् घोर आँधी, सबै होस उजाड़
बनी धीर बस्नु सिकाउँछ पहाड़।

(२)
छ घट्नु र बड़नु, बसें तब दुक्क,
सिकें चन्द्रबाटै, म हाँस्नु मुसुक्क।
बनी प्राणधारा सुधा झैं बहन्छ,
सँधै काम गर्नु भनी वायु भन्छ।

(३)
सदा पुष्ट फल्नु, खपी घाम पानी,
भनी वृक्ष भन्छ, भएको कहानी।
सदा कोइलीले सिकायो मलाई,
मीठो सुबोली सदा बोल्नलाई।

(३)
बुझें विश्व सारा महा पाठशाला,
यहीँ छन् हजारौं गुणी ग्रन्थमाला।
यसैबाट चुन्छु सदा शुद्धमात्र,
सबैदेखि सिक्छु सबैको म छात्र।

१. ३. १. कविताको सारांश

उपर्युक्त कवितामा कविले प्रकृतिमा पाइने समस्त चराचरबाटनै सही र उपर्युक्त शिक्षा हासिल गर्न सकिन्छ भन्ने सन्देश अति नै सरल, लयात्मक र सहज रूपमा प्रस्तुत गरेका छन्। कुनै प्रकारको गर्व, घमण्ड नलिएर जोशसहित अरूको भलाई गर्नु भन्ने पाठ सूर्यबाट सिक्न सकिन्छ भने पहाड़ले हामीलाई जस्तै आँधी आएपनि अथवा जस्तै विपत्ति आएपनि धीर भएर बस्नु भन्ने सिकाउँछ। घट्नु र बड्नुको जस्तै परिस्थितिमा पनि सँधै खुशी भएर बस्नु र हाँस्नु भन्ने कुरा चन्द्रमाले सिकाउँछ अनि हावाले निरन्तर काम गर्नु भन्ने सिकाउँछ।

सँधै एक भएर पुष्ट भई रहनु भन्ने बृक्षले सिकाउँछ भने मीठो बोली वा सुबोली मात्र बोल्नुपर्छ भन्ने कुरा कोइलीबाट सिकिन्छ।

यो विश्व नै एउटा महापाठशालाको रूपमा कविले पाउँछन्। विश्वमा भएका सारा विषयवस्तुले हामीलाई धेरै ज्ञान दिन्छन् जो हजारौं गुणी ग्रन्थहरूभन्दा धेरै छन् भनी कवि भन्दछन्। यो प्रकृतिमा भएको सम्पूर्ण विषय

बस्तु नै ज्ञानको स्रोत र भण्डार हो भन्ने कुरा जान्न सकिन्छ तर यो ज्ञान भण्डारमा राम्रा नराम्रा सबैथोक छन् अनि यी ज्ञानभण्डारबाट राम्रो कुरा मात्र म छानेर लिन्छु भनी कवि भन्छन्। यी ज्ञानभण्डारबाट नै सबैकुरा सिक्ने हुनाले म सबैको छात्र हो भनी कवि स्वीकार्छन्।

१. ३. १. कवि परिचय :

कवि तुलसी बहादुर छेत्रीलाई बाल कविता विधामा एक सशक्त कविको रूपमा राख्न सकिन्छ। बाल कविताबाहेक पनि उनी 'अपतन' साहित्यका एक कर्मठ साहित्यकारमा दरिन्छन्। सम्पूर्ण जीवन नै एक शिक्षकको रूपमा विताएकाले उनी शिक्षा अनुरागी र शिक्षाका उद्घोषक पनि थिए। साहित्यका समस्त विधामा कलम चलाउने श्री छेत्री एक सफल र सशक्त भारतीय नेपाली साहित्यकारको रूपमा उभ्याउन सकिन्छ। उत्तर बंग विश्वविद्यालयमा नेपाली विभागका प्रथम विभागाध्यक्ष रहेर विश्व विद्यालयमा नेपाली विभागलाई प्रतिष्ठापित गर्ने उनी एक सफल व्यक्तित्व थिए।

१. ३. ३. भाव विस्तार :

"छरी ज्योति बल्नु, नलिई गर्व सेखी
सँधै जोश राख्नु, सिकें सूर्यदेखि।"

उपर्युक्त पद्यांशमा कविले खुबै लालित्यमय भावमा सूर्यका क्रियाकलापबाट सिकेका विषयहरू वर्णन गरेका छन् कि आफैमा जलेर अरूलाई प्रकाश दिनु भन्ने परोपकारका कुरा सिक्दछन् जसमा कुनै प्रकारको गर्व वा घमण्डको लेशमात्र पनि नहोस्। सधैँ सधैँ जोश राखेर नै काम गर्नुपर्छ भन्ने कुरा पनि कविले सूर्यबाटै सिक्दछन्।

"बनी प्राण–धारा सुधा झैं बहन्छ
सँधै काम गर्नु भनी वायु भन्छ।"

खुबै लालित्यमय भाषामा हावा (वायु)–बाट सिक्नुपर्ने कुरा कविताको माध्यमबाट कवि व्यक्त गर्दछ। हावा बिना मानिस त के सम्पूर्ण पशु–प्राणी, चराचर सहित उद्भिद्सम्म बाँच्न सक्दैन। यही हावाको बहाईले नै यो चराचर बाँचेको छ जो अमृतको रूपमा रहेको छ अनि यो कार्य गराईमा अनवरतता हुनुपर्छ भन्ने कुरा हावा (वायु)–बाट नै सिक्न सकिन्छ भन्ने सन्देश उपर्युक्त पद्यांशबाट पाइन्छ।

"बुझें विश्व महापाठशाला,
यहीँ छन् हजारौं गुणी ग्रन्थमाला।"

उपर्युक्त पद्यांशमा कविले यो विश्व अर्थात् ब्रह्माण्डलाई ज्ञानको भण्डारको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् जुन चाहिँ महापाठशाला हो भनी वर्णन गरेका छन्। यो ब्रह्माण्डका प्रत्येक वस्तुलाई नै ज्ञान र प्रेरणाका स्रोत मान्दै यहाँ भएका सम्पूर्ण बस्तुहरूबाट ज्ञान लिनपर्ने कुराको उल्लेख कविले गर्दछन्। तात्पर्य, हजारौं हजार गुणी ग्रन्थहरूको भण्डार नै यो ब्रह्माण्ड हो भन्ने कुरा उनी स्वीर्काछन्।

१. ३. ४. शिक्षण विधि :

यसलाई श्रेणीकोठामा यो कविता पठन–पाठन गर्दा विभिन्न पद्धतिहरूको सहायता लिन सकिनेछ। विस्तृत रूपमा कविता शिक्षण पद्धतिमा उल्लेख गरिएको छ।

१.३.५. शब्दार्थ :

सेखी = अहंकार। गर्व = घमण्ड। उजाड़ = उराठलाग्दो।
धीर = धैर्य, स्थिर। सुधा = अमृत। ग्रन्थमाला = पुस्तक।

१. ३. ६. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१, सूर्यले के सन्देश दिन्छ?

२, 'छ घट्नु र बड़नु' सित चन्द्रमाको के सम्बन्ध छ?

३, कोइलीले के सिकाउँछ?

४, सबैको म छात्र कसरी भइन्छ?

१. ३. ७. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१, व्याख्या गर्नुहोस् :

"छ घट्नु र बड़नु, बसें तब ढुक्क,
सिकें चन्द्रबाटै म हास्नु मुसुक्क।"

२, खाली ठाउँ भर्नुहोस् :

क) सदा ..... फल्नु, ... धाम पानी,
भनी ..... भन्छ भएको .....।

ख) बुझें ..... सारा ....।
यहीँ छन् ..... गुणी ....।

ग) बृक्ष र कोइलीले के के गर्न सिकाउँछ?

घ) सबैको छात्रले विश्वलाई के बुझेको छ?

गद्य

२. १. विषय : हाम्रा चाड़ पर्वहरू

हाम्रो देशको नाम भारतवर्ष हो। अघि यो देशलाई हिन्दुस्थान पनि भनिन्थ्यो। आजकल यो देशको छोटो नाम 'भारत' मात्र राखिएको छ।

यो जम्बुद्वीप भारत प्राचीन कालदेखिनै कृषि प्रधान देश थियो। आज पनि अधिकांश जस्ता भारतवासीहरू खेती गरेर गाउँमा नै बस्छन्। तिनीहरू घाम, पानी, जाड़ो, गर्मी सहेर अन्न–बाली उब्जाउनलाई परिश्रम गर्छन्। कोही बेला रूखो–सूखो खाएर, कोही बेला आधापेट बसेर भए पनि खेतीवालाहरू खेतबारीमा काम गर्न छाड़दैनन् यही कारण उहिलेका हाम्रा पुर्खाहरू र ऋषिहरूले खेतीवालाहरूका सुविधा अनुसार चाड़–पर्वहरू राखिदिएका छन्। यसैकारण मुख्य र धेरैजस्ता हाम्रा चाड़–पर्वहरू बित्दो काम नभएको, फुको फाल्टो अनि सहकाले ऋतुहरूमा पर्दछन्।

हाम्रा जातीय चाड़–पर्वहरू त धेरै छन् तर मुख्य–मुख्य मात्र मान्दै आइरहेका छौं। ब्रत र सामूहिक रूपमा मनाइने पर्वहरूबाहेक हामीले मनाउँदै आएका प्रमुख चाड़–पर्वहरू चैते दशैं, असार पन्ध्र, साउने सक्रान्ति, विजय दशमी, तिहार र माघे सक्रान्ति हुन्।

हिन्दु जातिको मात्र होइन, मुस्लिमहरूको 'ईद', 'बकरीद', बौद्ध धर्मावलम्बीहरूको 'बुद्ध पुर्णिमा', 'लोसार', ईसाईहरूको 'गुड फ्राइडे' र 'क्रिसमस डे' आदि चाड़–पर्वहरू पनि खेतीवालाहरूकै सुबिधा अनुसार राखिएका छन्।

चाड़–पर्वले मानिसहरूलाई टाढ़ा–टाढ़ाका आफन्तहरूसंग भेटघाट गर्ने र बिग्रिएको सम्बन्ध सुधार्ने मौका दिन्छ। के धनी, के गरीब चाड़–पर्वमा मीठो र पौष्टिक खाद्य पदार्थहरू सेवन गरेर विश्राम र आनन्द लिने मौका पाउँछन् अनि रमाइलो गर्ने मौका पनि पाउँछन्। चाड़–पर्वले विभिन्न धर्मावलम्बीहरूका माझमा पनि प्रेम र सद्भावना बड़ाउने सुयोग प्रदान गर्छ।

हामीले कुनै चाड़बाड़, उत्सव आदि पर्वहरूमा सित्थै खान पायौं भन्दैमा लोभले अपच हुनेगरी खान हुँदैन। "अमृत पनि धेर खायो भने विष हुन्छ" भन्ने कुरा मनमा राखौं।

२. १. १. शब्दार्थ :

जम्बुद्वीप = भारतको पुरानो नाम। प्राचीन = पुरानो। कृषि = खेतीपाती। परिश्रम = मेहनत। अधिकांश = धेरैजसो। मुख्य = प्रमुख। पौष्टिक = पोषिलो। खाद्य = खानेकुरो। आनन्द = खुशी। सद्भावना = मेलमिलाप। उत्सव = चाड़–पर्व। सित्थै = बिना मोलमा पाएको। अमृत = अमर हुने।

२. १. २. सारांश :

हाम्रो देश भारतको नाम प्राचीन समयमा जम्बुद्वीपदेखि भारतवर्ष, हिन्दुस्थान हुँदै भारत भएको हो। भारत कृषिप्रधान देश हो। यहाँका अधिकांश मानिसहरू खेतीपाती गर्छन्। यसैले हाम्रा चाड़–पर्वहरू पनि खेतीपातीको समयमा नभएर विश्रामको समयमा पर्दछ हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, बुद्धिष्ट सबैको चाड़–पर्वहरू विश्रामको समयमा नै पारेर राखिएको छ। चाड़–पर्वले आफ्नो आफन्तमा धेरै प्रगाढ़ सम्बन्ध फैलाउँछै प्रेम, सद्भावना फैलाउने मुख्य साधनको रूपमा पनि चाड़–पर्वलाई मान्न सकिन्छ।

चाड़–पर्वमा आफ्ना आफन्तलाई मात्र नखुवाएर इष्ट मित्रलाई पनि खाना–पिना खुवाउँछौं। यसरी सित्थैमा खाना पाउँदा अपच गरी खान भने हुँदैन। नत्र "अमृत पनि धेर खाए विष हुन्छ" भन्ने भनाई चरितार्थ हुनेछ।

२. १. ३. हिन्दूका प्रमुख चाड़–पर्वहरू :

चैते दशैं = चैत्र महिनामा विजया दशमीकै अनुरूप यो चाड़ पालन गरिन्छ।

असार पन्ध्र = असार महिनाको १५ गतेको दिन दही–चिउरा खाएर यो चाड़को पालन गरिन्छ।

साउने सक्रान्ति = साउन महिना लाग्दा यो दिनलाई खेतीवालाहरू लुतो फ्याँक्ने दिन भनी पालन गर्दछ।

विजय दशमी = (दशैंको टीका) हिन्दुहरू यो चाड़लाई अति नै हर्षोल्लासको साथमा पालन गर्दछ। यो दिन घरका ठूला बड़ाले सानाहरूलाई टिका लगाई आशिर्वाद दिन्छन्। टाड़ा परदेशमा भएका छोरा–छोरी आफन्तहरू पनि दशैंको टीका थाप्न आउने गर्छन्। असल–असल पकवान बनाएर आफ्ना–आफन्त र परिवारहरू मिलेर खान्छन्।

तिहार : यो चाड़मा चेलीहरूले माइतीलाई टीका, फूल–माला लगाई आशिर्वाद दिने गर्दछन्। दशैंको टीका झैं यसमा पनि असल तरीकाले मनाइन्छ।

माघे सक्रान्ति : यो चाड़मा तरूल–कन्दमुल उसिनेर खाएर उत्सव मनाइन्छ।

ii) मुस्लिमका प्रमुख चाड़–पर्वहरू :

क) ईद

ख) बकरीद

iii) बुद्धिष्ठका प्रमुख चाड़–पर्वहरू :

क) बुद्ध पुर्णिमा = गौतम बुद्धको जन्म, दीक्षा र महाप्रयाणको दिन यो पुर्णिमा भएकोले यसलाई चाड़को रूपमा मनाइन्छ।

ख) लोसार = हिन्दुहरूको दशैंको रूपमा झैं मनाइन्छ।

vi) ईसाईहरूका प्रमुख चाड़–पर्वहरू :

गुड फ्राइडे = प्रभु यीशु बौरी उठेको दिनलाई पर्वको रूपमा मनाइन्छ।

क्रिसमस डे = प्रभु यीशुको जन्म दिन चाड़को रूपमा मनाइन्छ।

२. १. ४. शिक्षण विधि :

गद्य शिक्षण विधिमा विस्तृत विवरण दिइएको छ।

२. १. ५. भाव विस्तार :

"आज पनि अधिकांश जस्ता भारतबासीहरू खेती गरेर गाउँमा नै बस्छन्।"

भारतवर्ष कृषिप्रधान देश हो। यहाँ प्राचीन कालेदखि नै धेरै जसो मानिसहरू खेतीपाती गर्छन्। यहाँ प्रायः ९० प्रतिशत जनगण खेतीपाती गर्छन्। यसैले भारतमा शहरको भन्दा गाउँको जनसंख्या अनि नै धेरै छ।

२. १. ६. एकाई अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) भारतलाई प्राचीनकालमा के भनिन्थ्यो?

२) कृषि प्रधान देश भन्नाले के बुझिन्छ?

३) कसको सुबिधा अनुसार चाड़–पर्व राखिदिएका छन्?

४) खेतीवालाहरू कसरी परिश्रम गर्छन्?

५) तिमीलाई कुन चाड़ किन मनपर्छ?

२. १. ७. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१. हिन्दुहरूका मुख्य चाड़हरू के के हुन्?

१) ..... २) .....

३) ..... ४) .....

५) ..... ६) .....

७) .....

२. मुस्लिमहरू चाड़ लेख्नुहोस् :

१) ..... २) .....

३. बौद्धहरूका चाड़ लेख्नुहोस् :

१) ..... २) .....

४. ईसाईहरूका चाड़ लेख्नुहोस् :

१) ..... २) .....

२. विस्तार गर्नुहोस् :

"अमृत पनि धेरै खाए विष हुन्छ।"

३. तलका कुन कुन चाड़ कुन महिनामा पर्छ?

क) चैते दशैं

ख) विजया दशमी

ग) ईद

घ) बुद्ध पुर्णिमा

ङ) क्रिसमस्।

एकाई – २. नेपाली भाषाका कुरा

नेपाली भाषाको परिचय :

हामी जुन भाषामा बातचीत गर्छौं त्यसको नाम नेपाली भाषा हो। सारा पृथ्वीमा प्रायः धेरैले नै नेपाली भाषामा बातचीत गर्छन्। नेपाली भाषा बोल्ने मानिसहरू भारत, नेपाल र भूटानमा बेसी छन्। हाम्रो छिमेकी देश नेपालको राष्ट्रभाषा पनि नेपाली हो।

नेपाली भाषाको दुइवटा रूप छन्। एउटाको नाम गद्य र अर्कोको नाम पद्य हो। जुन भाषामा छन्द र दुइ लाइनको अन्तमा मेल छ त्यसलाई पद्य भनिन्छ अनि जुन भाषामा छन्द नभएर बोल्ने स्वभाविक रूप छ त्यसलाई गद्य भनिन्छ।

नेपाली भाषाको गठन :

(१) ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्यको मूल कुरो ध्वनि र वर्ण

भाषा गद्यमा वा पद्यमा लेख्न पर्दा मसी–कलम, पेन्सिल वा चकद्वारा कतिपय चिन्ह लेख्न पर्छ। यही चिन्हहरूलाई वर्ण भनिन्छन्। तर ती चिन्हहरू के को हो?

वास्तवमा भाषा व्यवहार गर्न पर्दा हामी मुखले बोल्छौ र कुनै कुरो भन्ने समयमा हाम्रो नाम–मुखबाट कतिवटा आवाज निस्किन्छन्। त्यही आवाजलाई असलमा ध्वनि भन्दछन्। ध्वनि धेरै बेरसम्म स्थायी हुँदैनन्। नाम–मुखबाट निस्किने साथ त्यो हावासित मिसिन्छन्। अहिले ध्वनिलाई यन्त्रको सहायताले रिकर्ड गरेर अनेक दिनसम्म राख्न सकिन्छन्। तर यी सबै यन्त्र त भर्खरै मात्र निस्किएका हुन्। यो यन्त्र अविष्कार हुनभन्दा धेरै वर्ष पहिले मानिसले अल्पस्थायी ध्वनिलाई कसरी दीर्घस्थायी गर्न सकिन्छ भनेर सोँच–विचार गरेका थिए। अन्तमा मानिसले एउटा–एउटा ध्वनिका निम्ति एक एक प्रकारका रेखा कोरेर चिन्हहरू तयार गरेका छन्। ध्वनि हराएता पनि ती चिन्हहरूलाई असल भाषामा वर्ण भन्दछन्। त्यसोभए वर्ण ध्वनिको चिन्ह वा ध्वनिको लिखित रूप हो।

वर्ण दुइ प्रकारका छन् :

उच्चारणको हिसाबले वर्ण दुइ प्रकारका छन्। कतिवटा वर्ण उच्चारण गर्दा आवाज वा ध्वनि छात्ती, घाटी र मुखबाट सिधै निस्केर आउँछन्, निस्कने समयमा कहींपनि वाधा पाउँदैन। जस्तै– अ, आ, इ, ई आदि। फेरि कतिवटा वर्ण उच्चारण गर्दा छात्तीभित्रबाट निस्केको हावाले घाँटी र मुखको विभिन्न ठाउँमा बाधा पाएर एक प्रकारको आवाज वा ध्वनि बनिन्छ। जस्तै– क, त, प आदि। क उच्चारण गर्दा हावाले घाटीभित्र बाधा पाउँछ, त उच्चारण गर्दा दाँतको फेदमा र प उच्चारण गर्दा दुइ आँठको माझमा बाधा पाउँछ।

जुन वर्ण उच्चारण गर्दा मुखभित्रको हावाले कुनै बाधा नपाइ बाहिर निस्कन्छन् त्यसलाई **स्वर वर्ण** भन्दछन्। फेरि जुन वर्ण उच्चारण गर्दा हावाले घाँटी र मुखभित्र विभिन्न ठाउँमा बाधा पाउँछ त्यसलाई **व्यञ्जन वर्ण** भन्दछन्।

एक–एक प्रकारको वर्णलाई एक एक गरेर ठीकसँग सजाएर राखिन्छ। यसरी वर्ण सजाएर राखेकालाई **वर्णमाला** भनिन्छ। स्वर वर्णहरू मात्र सजाएर राखेकालाई स्वर वर्णमाला र व्यञ्जन वर्णहरूमात्र सजाएर राखेकालाई व्यञ्जन वर्णमाला भनिन्छ।

नेपाली वर्णमाला :

पहिलो श्रेणीमा पढ्दा तिमीहरू 'किशलय' किताबमा नेपाली वर्णमालासित परिचय भएका छौं। फेरि नयाँ गरेर ती वर्णमालासित परिचय गरौं :

नेपाली स्वरवर्णमाला	नेपाली व्यञ्जनवर्णमाला
अ आ इ ई	क ख ग घ ङ
उ ऊ ऋ ए	च छ ज झ ञ
ऐ ओ औ	ट ठ ड ढ ण
	त थ द ध न
	प फ ब भ म
	य र ल व श
	ष स ह ड़ ढ़
	क्ष त्र ज्ञ :

वर्णबाट शब्द :

हामीले पहिले नै जानेका छौं कि जब हामी बोल्छौ तब मुखबाट कतिवटा ध्वनि निस्केर आउँछन्। तर हामीले ख्याल गर्‍यौ भने ती ध्वनिहरू लगातार आउँदैनन्, अलि अलि रोकिन्दै आउँछन्। अझै याद गर्‍यौ भने थाहा पाउँछौ कि ध्वनिहरू जहितहि रोकिन्दैनन्। कुनै ध्वनि वा एकाधिक ध्वनि मिलेर एउटा टुक्रा भाव प्रकाश हुन्छ त्यही नै ध्वनि समष्टि थामिन्छ, त्यसपछि फेरि नयाँ ध्वनि तीनपल्ट तीन ठाउँमा रोकिन्छन्: 'म', 'भात', 'खान्छु'– यी तीनवटा ध्वनि समष्टि नै पूरा बातको तीनवटा टुक्रा वा अंश हो।

जुन ध्वनि समष्टिबाट एउटा पूर्ण भाव प्रकाश हुन्छ त्यसलाई नै वाक्य अनि वाक्यभित्र अर्थ भएका टुक्रा अंशलाई शब्द भन्दछन्।

त्यसोभए शब्द वाक्यको अर्थबहनकारी टुक्रा भयो। यी सबै टुक्रा ध्वनि वा ध्वनि समष्टिबाट बनिएका हुन्छन्। यी ध्वनि वा ध्वनिसमष्टिलाई लेखेर देखाउन पर्दा ध्वनिको ठाउँमा वर्ण र ध्वनिसमष्टिको ठाउँमा वर्णसमष्टि व्यवहार हुन्छन्। लेख्ने समयमा शब्द वर्ण वा वर्णसमष्टि हुन्छ अर्थात वर्ण वा वर्णसित अझै वर्ण गरे शब्द बनिन्छ।

यहाँ एउटा कुरो याद राख्न पर्छ कि जुनसुकै वर्ण वा वर्णपछि वर्ण राख्नाले शब्द बनिन्दैन। जस्तै 'ई' एउटा वर्ण हो तर यसबाट कुनै अर्थ निस्किदैन। यसकारण 'ई' एउटा वर्ण भएतापनि यसलाई शब्द भन्न सकिन्दैन। 'ए' र 'क' दुइवटा वर्ण, यसलाई ठीकसित सजाएर नराखे अर्थ निस्किन्दैन। जस्तै– क + ए = कए – यहाँ कुनै अर्थ हुँदैन। यसकारण 'कए' वर्णसमष्टि भएतापनि शब्द होइन। तर ए + क = एक – यहाँ अर्थ पाउन सकिन्छ 'एउटा'। यसकारण 'एक' वर्णसमष्टि एउटा शब्द हो।

यसबाट बुझ्न सकिन्छ कि जुन वर्ण वा वर्णसमष्टिबाट कुनै अर्थ पाउन सकिन्छ त्यसलाई नै शब्द (लिखित) भन्दछन्। अनि उच्चारणको ध्वनि जोड़ेर अर्थ खुल्ने टुक्रा तयार हुन्छ त्यसलाई उच्चारित शब्द भन्दछन्।

शब्दबाट वाक्य : हामीले पहिले नै जानेका छौ, शब्द वाक्यको अर्थ भएको टुक्रा हो अर्थात शब्दपछि शब्द राख्नाले वाक्य बन्दछ। तर यहाँ यो पनि देखिन्छ कि शब्दपछि शब्द जताभावी राख्नाले वाक्य बन्दैन। जस्तै– म घर।

यहाँ दुइवटा शब्द एउटापछि अर्को छ तर कुनै भाव स्पष्ट भएको बुझिन्दैन। यसकारण यहाँ एउटा शब्दपछि

अर्को शब्द जोड़ेतापनि वाक्य बनिएको छैन। यी दुइवटा शब्दको पछि 'जान्छ' शब्द योग गरेपछि मात्र भाव स्पष्टसित बुझ्न सकिन्छ र यो एउटा वाक्य हुन्छ। म घर जान्छु।

वाक्य भेद :

अर्थ पूरा बुझिने पदहरूको समूहलाई वाक्य भन्दछन्।

वाक्य तीन प्रकारका छन् :

(१) सरल वाक्य (२) मिश्र वाक्य (३) संयुक्त वाक्य।

सरल वाक्य – सरल वाक्यमा एउटा मात्र प्रधान क्रियापद् रहन्छ। जस्तै– हरि आयो। म घर जान्छु।

मिश्र वाक्य – मिश्र वाक्यमा एउटा मुख्य वाक्य र अरू अधीन वाक्य रहन्छन्। जस्तै– जो घमण्ड गर्छ, त्यो लड्छ। जसले पढ़ेको छ, त्यसको जहाँ पनि कदर हुन्छ।

सयुक्त वाक्य – 'जो घमण्ड गर्छ, त्यो लड्छ। यो मिश्र वाक्यमा 'त्यो लड्छ' मुख्य वाक्य हो। यो दुइभन्दा अधिक सरल वाक्यहरू हुन्छन्, त्यसलाई संयुक्त वाक्य भन्दछन्। सरल वाक्यहरूलाई 'वा', 'तर', 'अनि' आदि संयोजकले जोड़ेका हुन्छन्। जस्तै– राम गयो अनि हरि आयो। त्यो गरीब छ तर ईमान्दार छ।

विराम – चिन्ह '

विराम चिन्ह भनेका उच्चारण र अर्थ अनुसार वाक्यभित्र ठाउँ ठाउँमा राखिने संकेत हुन्।

नेपाली भाषामा मुख्यत : निम्नलिखित विराम चिन्हहरूको प्रयोग हुन्छ–

(१) पूर्ण विराम (२) अल्प विराम (३) अर्ध विराम

(४) प्रश्न चिन्ह (५) विस्मयादिबोधक चिन्ह (६) कोष्टक चिन्ह

(७) उद्धरण चिन्ह (८) योजक चिन्ह।

क्रिया :

क्रियाको अर्थ काम हो। काम बुझाउने शब्दलाई क्रिया भन्दछन्।

क्रिया वा काम वर्तमान भूत र भविष्यत् समय अनुसार हुन्छ।

जस्तै : (१) म भात खान्छु। (२) मैले भात खाएँ। (३) म भात खानेछु।

यहाँ 'खान्छु' शब्दले अहिलेको काम बुझाउँछ। त्यसैले यो वर्तमान कालमा छ। 'खाएँ' शब्दले भइसकेका काम बुझाउँछ। त्यसैले यो भूतकालमा छ। 'खानेछु' शब्दले अब हुने कामलाई देखाउँछ। त्यसैले यो भविष्यत् कालमा छ।

यसकारण काल तीन प्रकारका छन्। (१) वर्तमान काल (२) भूतकाल र (३) भविष्यत्काल। तर प्रत्येक कालका फरक फरक रूप हुन्छन्।

सामर्थक शब्द वा पर्यायवाची शब्द :

समान अर्थ बुझाउने शब्दलाई 'पर्यायवाची' वा 'समार्थक' शब्द भन्दछन्। केही पर्यायवाची शब्दहरू :

गरीब – दरिद्र, निर्धन, दीन, कङ्गाल।

आगो – अग्नि, अनल, पावक, हुताशन, दहन।

सूर्य – रवि, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, प्रभाकर।

जल – पानी, नीर, सलिल, वारि, अम्बु।

आकाश – नभ, गगन, अम्बर, व्योम, आसमान।

इच्छा – चाह, कामना, चाहना, रूचि, अभिलाषा।

आश्चर्य – अचम्म, उदेक, ताजूब, विस्मय, गजब।

धेरै – खूब, ज्यादा, प्रशस्त, अधिक, अति।

सफा – सुग्धर, निर्मल, कञ्चन, चोखो, शुद्ध, पवित्र।

मेघ – जलघर, बादल, वारिद, नीरद, पयोघर।

विपरीतार्थक शब्द :

उल्टो अर्थ बुझाउने शब्दलाई 'विपरीतार्थक शब्द' भन्दछन्। जस्तैः

शब्द –	**विपरीतार्थक शब्द**	**शब्द –**	**विपरीतार्थक शब्द**
कम्ती –	बेसी	निन्दा –	प्रसंशा
जन्म –	मृत्यु	धनी –	गरीब
मान –	अपमान	असली –	नकली
उपकार –	अपकार	लाभ –	हानी, नोक्सान
काँचो –	पाकेको	जय –	पराजय
पाप –	पूण्य	स्वाधीन –	पराधीन
कड़ा –	नरम	न्याय –	अन्याय
आरम्भ –	शेष	स्पष्ट –	अस्पष्ट
गुण –	दोष	साँचो –	झूटो

समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द :

उच्चारण प्राय : एकै तर अर्थ भिन्न भएका शब्दलाई 'समोच्चारित शब्द' भन्दछन्।

जस्तै–

समोच्चारित शब्द अर्थ

आदि – पहिला

आधी – आधा

अर्ती – उपदेश

अर्थी – मुर्दा बोक्ने खाट

नाड़ी – नसा

नारी – आइमाई

विना – नभईकन

वीणा – सितार

गर्व – अहङ्कार

गर्भ – कोख

दीन – गरीब

दिन – समय

बाग – बगैंचा

बाघ – जानवर

दूध – पिउने कुरा

दूत – समाचार वाहक

फुल – अण्डा

फूल – पुष्प

खाली – रित्तो

खालि – मात्र

देखि – बाट

देखी – देखेर

विष – विख

बीस – दुइ दश

२. १. सारांश

हामीले बोल्ने भाषा नेपाली हो। अन्य भाषा सरह नेपाली भाषाको पनि पद्य र गद्य रूपहरू छन्। सर्वप्रथम बातचित गर्दा हाम्रो मुखबाट ध्वनि निस्कन्छ। यही ध्वनिलाई लिखित रूपमा सजाउने चिन्ह विधिलाई वर्ण भनिन्छ। नेपाली भाषामा यस्ता दुइ किसिमका वर्णहरू छन्– स्वर वर्ण र व्यञ्जन वर्ण। केवल ध्वनिबाट मात्र कतिपय कुराहरू स्पष्ट हुँदैन। यसर्थ, ध्वनि समष्टिबाट भाव प्रकाश हुनेलाई वाक्य अनि वाक्य भित्रका अर्थ भएका टुक्रा अंशलाई शब्द भनिन्छ। यसरी शुरूमा ध्वनि, त्यसपछि शब्द र अन्तमा वाक्य बनिने क्रमले हामीले बोलिने वा लेखिने कुराको सार्थकता रहन्छ। वाक्यहरू सरल, मिश्र अनि संयुक्त हुन्छन्। क्रियापद प्रधान रहने सरल वाक्य, एउटा मुख्य वाक्य र अर्को अधीन वाक्य रहने मिश्रवाक्य; तर, अनि, किनकि, वा, आदि शब्दहरू लगाएर जोड़िने वाक्यहरू भएमा संयुक्त वाक्य हुन्छ। उच्चारण र अर्थ अनुसार वाक्यभित्र ठाउँ ठाउँमा राखिने संकेतलाई चिन्ह भनिन्छ।

व्याकरणमा काम बुझाउने शब्द क्रिया, समान अर्थ बुझाउने शब्द पर्यायवाची शब्द, उल्टो अर्थ बुझाउने शब्द विपरीतार्थक शब्द, उच्चारण गर्दा एउटै जस्तो लागे पनि अर्थ भिन्न हुने शब्द सम्मोचारत शब्द भनिन्छ।

२. २. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू

(क) १, पद्य र गद्यमा के अन्तर छ?

२, नेपाली भाषाको गठन कसरी भएको छ?

३, शब्द के लाई भनिन्छ?

४, वाक्य कति प्रकारका हुन्छन्? के के?

५, विभिन्न चिन्हको प्रयोग कतिबेला गरिन्छ?

६, नेपाली भाषामा कतिवटा स्वर अनि कतिवटा व्यञ्जन वर्णहरू छन्?

भिन्नता छुट्याऊ :–

(ख) १, स्वरवर्ण र व्यञ्जन वर्ण

२, मिश्र वाक्य र संयुक्त वाक्य

(ग) तलका शब्दका तीन–तीनवटा पर्यायवाची शब्द लेख :–

उपस्थित; कोसिस, जीविका।

(घ) तलका शब्दका उल्टो शब्द लेख

आकर्षण, उत्थान, गरिमा, ध्वंस, प्रत्यक्ष।

(ङ) तलका सम्मोचारित शब्दहरूको अर्थ लेख

१, उपयुक्त	२, गूढ़	३, वैध
उपर्युक्त	गुँड़	बैद्य

एकाई – ३, भाषा अनि व्याकरण

गठन

३.१. भाषा अनि व्याकरणको परिभाषा
३.२. भाषाका रूपहरू – कथ्य र लेख्य
३.३. वर्णनात्मक शब्द – वर्ण–पद–वाक्य
३.४. लिपि – देव नागरी लिपि
३.५. पद परिचय
३.६. समास
३.७. सार संक्षेप
३.८. प्रगति जाँच

३. १. भाषा अनि व्याकरणको परिभाषा :

मनको भाव तथा विचारहरूलाई परस्परमा आदान–प्रदान गर्न सकिने सार्थक ध्वनि समूहलाई ***भाषा*** भनिन्छ। आफुलाई जन्म दिने माता अनि उनको जाति–सम्प्रदायले बोल्ने भाषालाई मातृभाषा भनिन्छ, जुन भाषाको माध्यमद्वारा संसारको समस्त वस्तुहरूले ज्ञान प्राप्त हुँदछ अनि अन्य सबै भाषाहरू आफ्नो मन मस्तिष्कमा रूपान्तरित हुने गर्दछ।

भाषालाई शुद्ध रूपमा बोल्न र लेख्न सिकाउने केही नियमहरू हुने गर्दछ। यस्तो नियमहरूका संग्रहलाई ***व्याकरण*** भनिन्छ।

३. २. भाषाका रूपहरू – कथ्य र लेख्य :

आफ्नो मनका आशय वा विचारहरू अरूसंग दुइ प्रकारले व्यक्त गर्न सकिन्छ– बोलेर अनि लेखेर।

सामुमा उपस्थित व्यक्तिहरूसित बोलेर विचार विनिमय गर्न सकिन्छ जसलाई कथ्य वा कथित भाषा भनिन्छ अनि टाड़ामा रहेका व्यक्तिहरूसित सम्पर्क स्थापित गरी विभिन्न प्रकारका सम्वादहरू प्रायः नै लेखेर प्रकाश गर्न सकिन्छ जसलाई लेख्य वा लिखित भाषा भनिन्छ।

३. ३. वर्णनात्मक शब्द – वर्ण–पद–वाक्य :

३.३.१. **वर्ण** – भाषाका सार्थक ध्वनि समूहबाट वर्णनात्मक शब्द बनिने गर्दछ। यसैले शब्दको ध्वनिलाई स्पष्ट पार्न प्रयोग गरिने चिन्हलाई वर्ण वा अक्षर भनिन्छ। हाम्रो भाषामा वर्ण दुइ प्रकारका हुन्छन्– स्वर वर्ण अनि व्यञ्जन वर्ण।

स्वर वर्ण – अरू वर्णको सहयोग नलिई आफै उच्चारित हुन सक्ने वर्णहरूलाई 'स्वर वर्ण' भनिन्छ, जस्तै–

अ, आ.....ओ, औ।

व्यञ्जन वर्ण – स्वर वर्णको सहायता लिएर मात्र उच्चारण हुने वर्णहरूलाई 'व्यञ्जन वर्ण' भनिन्छ, जस्तै– क् + अ = क। ख् + अ = ख। यस्ता वर्णहरू हाम्रो भाषामा जम्मा ३८ वटा छन्– क..... ज्ञ।

३. ३. २. पद : एक अथवा अनेक अक्षरहरूको मेलबाट उत्पन्न भएर जुन ध्वनि कानले सुनिन्छ त्यसलाई पद वा शब्द भनिन्छ, जस्तै– म, यो, किताब, सेतो, गयो, पनि, अहो।

शब्दहरू दुइ प्रकारका हुँदछन्– सार्थक र निरर्थक।

सार्थक शब्द – जुन शब्दको अर्थ बुझ्न सकिन्छ त्यसलाई सार्थक शब्द भनिन्छ, जस्तै– आगो, पानी, हावा, आकाश, धरती आदि।

निरर्थक शब्द – जुन शब्दको अर्थ बुझिन्दैन तर ध्वनि मात्र बोध हुने गर्दछ त्यसलाई निरर्थक शब्द भनिन्छ।

व्याकरणमा सार्थक शब्दहरूको मात्र विवेचना गरिन्छ।

३. ३. ३. वाक्य : शब्दहरूको समूह जसबाट अर्थ स्पष्ट हुँछछ त्यसलाई वाक्य भनिन्छ, जस्तै– हरि घर गयो। सरला पाठशाला जान्छे। यी शब्द समूहबाट अर्थ स्पष्ट हुने गर्दछ, यसैले यिनीहरू वाक्य हुन्।

प्रत्येक वाक्यको दुइ खण्ड हुने गर्दछ– उद्देश्य र विधेय।

उद्देश्य – वाक्यको त्यो भाग उद्देश्य हो जसको विषयमा केही भनिन्छ, जस्तै– नानी खेल्दैछ। यो वाक्यमा 'नानी' उद्देश्य हो।

विधेय – विधेय वाक्यको त्यो भाग हो जसले उद्देश्यको विषयमा केही भनेको हुन्छ, जस्तै– नानी खेल्दैछ। यहाँ 'नानी' को विषयमा 'खेल्दैछ' भनिएको छ। यसैले 'खेल्दैछ' विधेय भयो।

३. ४. लिपि– देवनागरी र नन्दीनागरी :

विभिन्न प्रकारका ध्वनि प्रतीकहरूलाई चिनाउनलाई प्रयोग गरिने विभिन्न आकार–आकृतिका सांकेतिक वर्णहरू लेखिने ढाँचालाई लिपि भनिन्छ। संसारका विभिन्न भाषिक गोष्ठी तथा सम्प्रदायका मानिसहरूले बेग्ला बेग्लै प्रकारका लिपिहरू प्रयोग गर्ने गर्छन्। हाम्रो भाषा जुन लिपिमा लेखिने गर्दछ त्यसलाई **देवनागरी लिपि** भनिन्छ। तर यसको साथसाथै मराठी भाषाले प्रयोग गर्ने गरेका नन्दीनागरी लिपि पनि आंशिक रूपमा हाम्रो भाषामा प्रयोग गरिएको देखिने गर्दछ, जो यस प्रकार छन्–

देवनागरी	नन्दी नागरी	देवनागरी	नन्दी नागरी		
ञ्प्र	अ	ल	ल	देवनागरी	नन्दी नागरी
झ	झ	द	छ	७	९
ण	ण	५	५		
श	श	८	८		

३. ५. पद परिचय

व्याकरणमा विवेचना हुने सार्थक शब्द वा पद बारे माथि ३. ३. २. मा उल्लेख गरिसकिएको छ। विकार अनुसार शब्दका दुइ भेद हुने गर्दछ– विकारी अनि अविकारी।

३. ५. १. विकारी शब्द

भिन्न–भिन्न अवस्थामा विकारी शब्दको रूप परिवर्त्तन हुने गर्दछ। यस्ता विकार प्रायः संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया र विशेषण शब्दहरूमा हुने गर्दछ, जस्तै– 'छोरी आउँछे। छोरीहरू आउँछन्। छोरीहरूलाई बोलाऊ।' यी वाक्यहरूमा 'छोरी' शब्दलाई अनेक रूपमा प्रस्तुत गरिएका छन्– छोरी, छोरीहरू, छोरीहरूलाई। यस प्रकारको परिवर्त्तनलाई विकार वा रूपान्तर भनिन्छ। सार्थक शब्दमा यसरी हुने परिवर्त्तन लिङ्ग, वचन र कारकले गर्दा हुने गर्दछ।

३. ५. २. अविकारी शब्द

भाषामा कतिपय यस्ता शब्दहरू छन् जसमा विकार वा परिवर्त्तन हुँदैन, जस्तै– आज, भोलि, अब, अनि, अघि, पछि, जब, तब आदि। यिनीहरूका रूपमा लिङ्ग, वचन, कारक आदिले गर्दा कुनै परिवर्त्तन हुँदैन। यस्ता शब्दहरूलाई अविकारी शब्द वा अव्यय भनिन्छ।

३. ५. ३. विकारी शब्दको भेद

१) संज्ञा– कुनै मानिस, बस्तु, स्थान, भाव बुझाउँने शब्दलाई संज्ञा भनिन्छ, जस्तै– सुनिता, टेबल, कालेबुङ, मिठास आदि।

२) सर्वनाम– संज्ञाको साटो प्रयोग हुने शब्दलाई सर्वनाम भनिन्छ, जस्तै– म, तँ, तिमी, उ, त्यो, हामी, आदि।

३) विशेषण – संज्ञा वा सर्वनामको गुण, दोष, अवस्था र संख्या बुझाउने शब्दलाई विशेषण भनिन्छ, जस्तै– सेतो, कालो, राम्रो, मीठो, छुच्चो, दयालु, दुइ, तीन आदि।

४) क्रिया– संज्ञा वा सर्वनामले गरेको काम बुझाउने शब्दलाई क्रिया भन्दछ, जस्तै– आउँछ, जान्छ, गर्छ, हिड़छ, खायो, गयो आदि।

३. ५. ४. अविकारी शब्द वा अव्ययका भेद

१) **क्रिया विशेषण**– जुन शब्दले क्रियाको अवस्था बुझाउँछ त्यसलाई क्रिया विशेषण भनिन्छ, जस्तै राम्ररी, सरर, पिलपिल, बिस्तारै आदि। राम्ररी पढ़। विस्तारै हिड़।

२) **सम्बन्धवाचक**– सम्बन्धवाचक अव्ययले वाक्यमा संज्ञा वा सर्वनाम शब्दको सम्बन्ध अरू शब्दसित बुझाउँछ, जस्तै– मसित पैसा छैन। गाग्रोभरि पानी छ। यहाँ 'सित' 'भरि' सम्बन्धवाचक अव्यय हुन्।

३) **संयोजक**– जुन अव्ययले दुइ शब्द वा वाक्यलाई जोड़छ, त्यसलाई संयोजक भन्दछ, जस्तै– र, अनि, औ, किनभने, किनकि, यसर्थ, आदि। यदु र मधु गए। कमला अनि विमला दिदी–बहिनी हुन्।

४) **विस्मयादिवोधक**– ती शब्दहरू विस्मयादिवोधक अव्यय हुन् जसले हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भाव प्रकट गर्ने गर्छन्, जस्तै– अहो!, हेर!, छिः! धन्य! आदि।

३. ६. समास

दुइ वा दुइभन्दा अधिक शब्दहरू मिलेर एउटा सिंगो अर्थ लाग्ने शब्द बनिए त्यसलाई समास भनिन्छ। समास भनेको संक्षिप्त हो। जस्तै– दयाको सागरको छोटो रूप 'दयासागर' हुनेछ। यो एउटा सामासिक शब्द हो। यसरी नै छोराछोरी, राजकाज, लामखुट्टे आदि सामासिक शब्दहरू हुन्।

समास ६ प्रकारका हुन्छन्।

३. ६. १. तत्पुरूष समास

तत्पुरूष समासमा पछिल्लो शब्द प्रधान हुने गर्दछ, जस्तै– राजपुत्र (राजाको पुत्र)। यसमा राजा शब्द प्रधान नभएर पुत्र शब्द प्रधान छ। यसरी नै आधादिन, राजकाज, घरजुवाईं, डरछेरूवा, हेर्नलायक, अफाप, अबोला, घरधन्धा, विन्तीपत्र, आदि शब्द तत्पुरूष समास हुन्।

३. ६. २. कर्मधारय समास

जुन समासमा विशेषण– विशेष्य (संज्ञा) को अथवा विशेषण–विशेषणको योग रहन्छ, त्यसलाई कर्मधारय समास भनिन्छ, जस्तै– सान्नानी (सानो + नानी), जेठोबाठो (जेठो+बाठो)। यहाँ सानो विशेषण हो अनि नानी विशेष्य फेरि जेठो र बाठो दुवै विशेषण हुन्। यसरी नै लाल मोहर– लालमोहर, राजा जस्तो हाँस–राजाहाँस, गहुँ जस्तो गोरो– गहुँगोरो, ठूली नानी– ठूल्नानी, आदि कर्मधारय समास हुन्।

३. ६. ३. द्विगु समास

जुन समासमा पहिलो पद संख्यावाचक विशेषण हुन्छ अनि दोस्रो पद संज्ञा हुन्छ त्यसलाई द्विगु समास भनिन्छ। जस्तै– दुइ बाटो– दोबाटो; पञ्च अमृत–पञ्चामृत; चार तर्फको मेल– चौतर्फी; बाह्रै मास भइरहने–बाह्रमासे; तीन भुवनको समूह– त्रिभुवन आदि।

३. ६. ४. द्वन्द्व समास

जुन समासमा दुवै पद समान हुन्छन् त्यसलाई द्वन्द्व समास भनिन्छ। यस्ता समासमा 'र, पनि, वा' अव्यय लुप्त रहने गर्दछ, जस्तै– गंगा र जमुना– गंगा–जमुना। यसमा दुवै पद प्रधान छन् अनि 'र' लुप्त भएको छ। यसरी नै पाप वा पुण्य– पाप–पुण्य; राजा र रानी – राजा–रानी; काठ र पात– काठ–पात; राम र लक्ष्मण– राम–लक्ष्मण, आदि द्वन्द्व समास हुन्।

३. ६. ५. बहुब्रीहि समास

जुन समासमा अन्य अर्थ प्रधान हुन्छ अर्थात् जसले आफ्नो शब्दिक अर्थलाई छोड़ेर भिन्न अर्थ बोध गराउँछ त्यसलाई बहुब्रीहि समास भनिन्छ। जस्तै– लम्बोदर अर्थात लामो उदर वा पेट भएको। यहा लामो र पेट

दुवै प्रधान छैनन् तर यसले अन्य कुनै व्यक्ति बुझाउँछ जसको लामो पेट छ अर्थात् गणेश। यसरी नै दशानन– दश आनन (मुख) भएको; चतुर्भुज– चार भुजा भएको; लाम्खुट्टे– लामो खुट्टा भएको; नीलकण्ठ– नीलो कण्ठ भएको; चौपाया– चार पाउ भएको; लम्कन्ना– लामो कान भएको, आदि बहुव्रीहि समासका उदाहरणहरू हुन्।

३. ६. अव्ययीभाव समास

जुन समासमा अघिल्लो भाग अव्यय हुन्छ त्यसलाई अव्ययीभाव समास भन्दछ, जस्तै– प्रतिवर्ष– प्रत्येक वर्ष; प्रतिदिन– प्रत्येक दिन; वेथिति– थिति नहुनु; बेजोड़– जोड़ी नहुनु; बेहिसाब– हिसाब नहुनु; भरसाल– साल भरि वा पूरासाल आदि।

३. ७. सार संक्षेप

यस एकाईमा हामीले सिक्यौं–

* भाषा र व्याकरणको परिभाषाको ज्ञान।
* कथ्य भाषा र लेख्य भाषाको प्रयोग।
* हाम्रो भाषाको वर्ण, पद र वाक्य गठनबारे जानकारी।
* हाम्रो भाषामा प्रयुक्त लिपिबारे संक्षिप्त जानकारी।
* पद परिचयमा विकारी र अविकारी शब्दहरूबारे ज्ञान साथै समास सम्बन्धित संक्षिप्त जानकारी।

३. ८. प्रगति जाँच

१. भाषा केलाई भनिन्छ?

२. हाम्रो भाषामा कति प्रकारका वर्णहरू छन्? के के?

३. वाक्यमा कति खण्ड हुने गर्दछ? उदाहरण देऊ।

४. हाम्रो भाषामा लेखिने लिपिलाई के भनिन्छ?

५. विकारी शब्दहरूको भेद उदाहरण सहित लेख।

६. समास कति प्रकारका हुन्छन्? प्रत्येकको उदाहरण प्रस्तुत गर।

४. एकाईं मातृभाषा शिक्षण पद्धति

प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणको लक्ष्य, उद्देश्य अनि आवश्यकक्ता

गठन

४. १. भूमिका

४. २. लक्ष्य

४. ३. उद्देश्य

४. ४. आवश्यकता

४. ५. प्रगति जाँच

४. १. भूमिका

कुनै पनि कार्य गर्दा कतिपय आवश्यकता पूर्तिको निम्ति त्यसको लक्षित उद्देश्यलाई ध्यानमा राखेर सम्पन्न गरिन्छ। यसरी नै विद्यालयमा मातृभाषा शिक्षण कार्य सम्पन्न गर्दा पनि विद्यार्थीवर्गको मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक तथा उनीहरूको सर्वाङ्गीन विकासलाई ध्यानमा राखेर कतिपय लक्ष्य, उद्देश्य र आवश्यकता परिपूर्ति गर्नलाई पठन–पाठन कार्य सम्पादन गरिन्छ।

४. २. लक्ष्य

१) शुद्ध भाषा, स्पष्ट उच्चारण साथै श्रुति मधुर वाणीमा बोल्ने दक्षता हासिल गर्नु।

२) सठीक हिज्जे साथै स्पष्ट र सुन्दर हस्तलिपिमा लेख्ने दक्षता हासिल गर्नु।

३) व्याकरण अनि रचनाहरू सम्बन्धित नियमहरूको पूर्ण रूपमा ज्ञान प्राप्त गर्नु।

४) वाग्धारा अनि उखानहरूलाई उपयुक्त स्थानमा प्रयोग गरी भाषालाई संतुलित ढंगमा प्रकाश गर्ने क्षमता हासिल गर्नु।

५) मातृभाषाका स्रष्ठा तथा साहित्यकारहरूका जीवनी र रचनाहरूबारे प्रशस्त ज्ञान हासिल गर्नु।

६) आफ्नो मातृभाषाको साहित्यिक इतिहासबारे पूर्ण ज्ञान प्राप्त गर्नु

४. ३. मातृभाषा शिक्षणको उद्देश्य

१) श्रवण – अरू मानिसले बोलेको कुरा सुनेर बुझ्न सक्नु।

२) कथन – शुद्ध अनि स्पष्ट उच्चारण गरी आफ्नो मनको भाव प्रकाश गर्नु।

३) पठन – हस्त लिखित तथा मुद्रित पत्र–पत्रिका तथा पुस्तकहरू स्पष्ट उच्चारण सहित भूल नगरी स्वाधीन रूपमा पढ़न सक्नु।

४) लेखन – अभिज्ञता प्राप्त ज्ञानको आधारमा शुद्ध हिज्जे अनि सुन्दर हस्तलिपिमा लेख्न सक्नु।

५) वाक्यगठन – शब्द भण्डार बृद्धि गर्नु साथै नयाँ शब्दहरूलाई अन्य वाक्यहरूमा प्रयोग गर्न सिक्नु।

६) चरित्र गठन – साहित्य पाठको माध्यमद्वारा असल चरित्र गठन गराउनु।

७) शिष्टचारबोध – दैनिक जीवनमा व्यवहारिक र शिष्टाचारपूर्व भाषा सिकाउनु।

८) सुसंस्कारबोध – महापुरूषहरूका जीवनी तथा अन्य उत्कृष्ट रचनाहरू पढ़ेर सुसंस्कृत तथा आदर्श मानसिकता गठन गराउनु।

९) स्वजातियताबोध – मातृभाषा शिक्षाद्वारा विद्यार्थीवर्गको मनमा सानैदेखि स्वजाति प्रेमको भावना जागृत गराउनु।

४. ४. मातृमाषा शिक्षणको आवश्यकता

भावना र चिन्तनमा आधारित मानिसको उच्चारण अव्यवहरूद्वारा प्रस्फुटित हुने मातृभाषाले प्रत्येक व्यक्तिको जीवनमा महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ किनभने जन्मदेखि मृत्युपर्यन्त मानिसले अरूसंग आफ्नो मनको भाव तथा बिचार विनिमय गर्ने मातृभाषा मात्र सबैभन्दा सरलतम् साधन हो। अन्य भाषाको प्रयोग गरेर पनि यो कार्य गर्न सकिन्छ तर भाव प्रकाशन र रहस्योद्घाटनमा भने सरलता हुँदैन। यति मात्र होइन, जनसमुदायको बृहतांश यस कार्यको निम्ति सक्षम हुँदैनन् अथवा सबैको मस्तिष्कमा मातृभाषाबाट अन्य भाषातिर शब्दहरू तत्कालै रूपान्तर गर्ने क्षमता पर्याप्त मात्रामा हुँदैन।

प्रत्येक व्यक्तिको मानसिक, बौद्धिक, भावात्मक, नैतिक अनि सांस्कृतिक विकासको मार्गमा मातृभाषाले व्याकरणसम्मत मातृभाषाको प्रयोगद्वारा नै कुनै पनि व्यक्तिको व्यक्तित्व जुनसुकै स्थानमा वा पदमा रहँदा उन्नत र आकर्षक बनेको लक्ष्य गर्न सकिनेछ।

शिक्षा प्रतिष्ठान (विद्यालय) हरूमा मातृभाषा केवल एउटा पाठ्य–विषय मात्र होइन तर अन्य समस्त विषयहरूको बोध क्षमताको मेरूदण्ड हुने गर्दछ अर्थात अन्य सबै विषय ज्ञानको अध्यापन तथा पठन–पाठनको आधार हुने गर्दछ।

यसर्थ, प्रत्येक व्यक्तिको जीवनमा हरक्षण विचार विनिमयको साधन रहेकै कारणले मातृभाषा शिक्षण सबैको निम्ति नितान्त प्रयोजनीय माध्यम हो भन्नुमा कुनै अत्युक्ति हुने छैन।

४. ५ सार संक्षेप

यस पाठ एकाईंमा हामीले प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणका लक्ष्य, उद्देश्य र आवश्यकताबारे विषद जानकारी हासिल गर्न सक्यौं।

४. ६. प्रगति जाँच

१, प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणका लक्ष्यहरू के के हुन्?

२, मातृभाषा शिक्षणका उद्देश्यहरू उल्लेख गर।

३, मातृभाषा शिक्षणको आवश्यकताहरूबारे विवेचना गर।

एकाईं – ५ भाषा शिक्षणका विभिन्न स्तरहरू

५. १. भूमिका

५. २. श्रवण (सुनाई) – प्राथमिक स्तरमा श्रवणको महत्त्व

५. ३. कथन (बोलाई) – आदर्श कथन

५. ४ पठन (पढ़ाई) – पठनको महत्त्व – सस्वर र मौन पठन।

५. ५. लेखन (लेखाई) – आदर्श लेखन – अनुलेखन, प्रतिलेखन, श्रुतिलेखन।

५. ६. हिज्जे प्रणाली – शुद्ध हिज्जे लेखन

५. ७. हस्तलिपि – सुन्दर हस्तलिपि लेख्ने अभ्यास गठन र यसको महत्त्व

५. ८. सार संक्षेप

५. ९. प्रगति जाँच

५. १. भूमिका

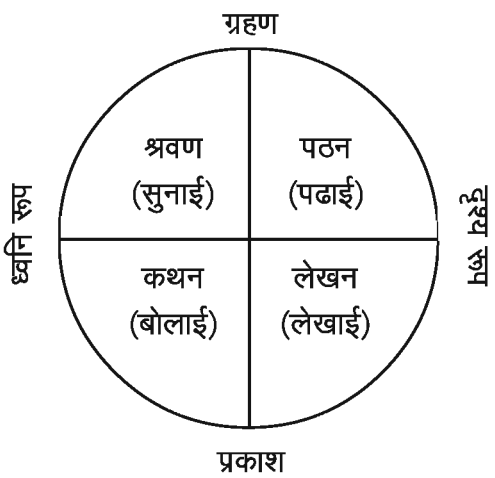

भाषा शिक्षणका चार स्तरहरू (अंगहरू) हुन्, श्रवण, कथन, पठन र लेखन। यसमध्ये श्रवण र पठनको माध्यमद्वारा हामी विषयको भाव ग्रहण गर्दछौं तथा कथन र पठनको माध यमद्वारा भाव प्रकाश। बोलाई अनि सुनाई भाषाको ध्वनि रूप हो भने पढ़ाई अनि लेखाई दृश्य रूप। तर भाषा शिक्षाको यी चारै अंगहरू स्वयं सम्पूर्ण छैनन्। मानव शरीरका विभिन्न अंग–प्रत्यंगहरू परस्परमा सम्वन्धित रहे झैं यिनीहरू पनि एकार्कामा निर्भरशील रहन्छन्। यसैले यी चारै अंगहरूलाई विद्यार्थीहरूले ग्रहण गर्ने दक्षता हासिल गर्न सकोस् भन्ने तथ्यलाई ध्यानमा राखेर शिक्षक–शिक्षिकावर्गले शिक्षण कार्य सम्पन्न गर्नुपर्दछ तथा यस उद्देश्यलाई परिपूर्ण गराउनको निम्ति उपयुक्त शिक्षादान पद्धति प्रयोग गर्न आवश्यक हुनेछ।

५. २. श्रवण (सुनाई) – प्राथमिक स्तरमा श्रवणको महत्त्व

भाषा शिक्षणको क्षेत्रमा श्रवण (सुनाई) को भूमिका महत्त्वपूर्ण छ। जन्म ग्रहण गरेपछि माता–पिता तथा आफन्तहरूको बातचित सुनेर अनुकरणको माध्यमद्वारा शिशुले भाषा सिक्न थाल्दछ अर्थात शिशुको भाषा शिक्षण उसको घर परिवारको परिवेशबाटै शुरूआत भएको हुनेछ। यसर्थ, विद्यालयमा प्रवेश गरेपछि शिशुलाई प्रशस्त मात्रामा श्रवणको (सुनाईको) सुयोग दिनुपर्छ। अरूको वक्तव्य सुनेर नै शिशुले बोल्नु सिक्नेछ, यसैले सुन्नु र बोल्नु परस्परमा सम्बन्धित हुँदछ। श्रवण मातृभाषाको भाव ग्रहण पक्ष हो भने कथन भाव प्रकाशन पक्ष हो, यी दुवैको सम्बन्धबाट भाषा शिक्षणको जुन मार्ग सृजना हुनेछ त्यसलाई कथोपकथन भनिन्छ। एकजना वक्ता भए

अर्को श्रोता हुनेछ साथसाथै स्थान परिवर्त्तन भएर श्रोता–वक्ता अनि वक्ता श्रोता हुने कार्यलाई अथवा दुई व्यक्तिमाझ आलोचना गर्ने पद्धतिलाई कथोपकथन भनिएको हो। यसैले विद्यालयमा मातृभाषा सिकाउँदा श्रवण शिक्षणको भूमिका वा उपयोगिता धेरै छ। यसबाहेक विद्यालयमा सम्पादन गरिने विभिन्न कार्यक्रमहरू जस्तै– बालगीत, आवृत्ति, अभिनय आदि सुन्नु, श्रेणीमा पठन–पाठन अनि साथीहरूको वार्तालाप सुन्नु, प्रार्थना सभामा अमृतवाणी सुन्नु, परिभ्रमणको समयमा विभिन्न विषयका कुराहरू, आदिको माध्यमद्वारा श्रवण शिक्षण कार्यलाई अग्रगति प्रदान गर्न सकिन्छ।

५. ३. कथन (बोलाई) – आदर्श कथन शिक्षण

मानिसले बोलेर तथा कथनको माध्यमद्वारा आफ्ना मनका भावहरू, जस्तै– हर्ष–अमर्ष, प्रेम–स्नेह, रिसराग, सहानुभूति आदि प्रकाश मर्ने गर्दछ। आफूले सुनेका कुराहरूलाई अनुकरण गरेर बोल्ने प्रयास शिशुले निरन्तर गरिरहन्छ। यसर्थ श्रवण र कथनमाझ नजिकको सम्बन्ध रहेको हुन्छ।

पाठशाला आउनुअघि आफ्ना माता–पिता, आफन्तजन तथा छरछिमेकीहरूले बोलेका कुराहरू सुनेर अनुकरण गरी बोल्ने प्रयास गर्दै प्रायः डेढ़ हजार जति शब्दहरू शिशुले सिकिसकेको हुनेछ तरै पनि आदर्श कथनमा उसले पूर्ण रूपले अधिकार जमाउन सकिरहेको हुँदैन। यसर्थ, शिक्षक–शिक्षिकाहरूले तिनीहरूसित सहृदयता साथ सरल र सहज भाषामा वार्तालाप गरी अभिज्ञताका प्रयोजनीय कुराहरू बोल्न उत्साहित गराउनु पर्दछ साथै अर्थवोधक शब्दहरू प्रयोग गरी वार्तालाप गर्न सहयोग गर्नुपर्दछ किनकि मनमा भएका कुराहरू कुराहरू जसरी भए पनि बोल्नु शिक्षाप्रद हुँदैन।

आदर्शकथनका केही बुँदाहरू –

क) सरल, स्पष्ट र श्रुति मधुर भाषामा भाव प्रकाशन गर्नुपर्छ।

ख) प्रश्नोत्तर प्रासंगिक र क्रमबद्ध हुनुपर्छ तथा वार्तालाप परिस्थिति अनुकूल हुनुपर्छ।

ग) सुवक्ताको रूपमा युक्तिसंगत आलोचनामा अंश ग्रहण गर्न सक्षम हुनुपर्छ।

घ) व्याकरणका नियमहरूलाई पालनगरी सुललित भाषाशैलीमा बोल्न सक्ने क्षमताशील हुनुपर्छ।

ङ) वातचित गर्दा बीच–बीचमा बेअर्थका शब्दहरू, जस्तै– चैं, चाइने, क्यारे आदि थेगोको प्रयोग तथा घरिघरि कुनै अंग सञ्चालन, जस्तै– हात हल्लाउनु, टाउको हल्लाउनु आदि मुद्रादोषको प्रयोग गर्नु हुँदैन।

विद्यार्थीवर्गको वाक शक्ति (कथन) मा प्रगति गराउनको निम्ति विद्यालयमा पठन–पाठनको समयमा बालगीत, कविता– आवृत्ति, कथा वाचन लगायत अन्य कतिपय उपायहरू, जस्तै– प्रार्थना सभा संचालन गर्न लगाउनु, सम्वाद पत्रको केही अंश वा स्थानीय खबरहरू मुखस्थ भन्नु लगाउनु, विद्यालयको कार्य विवरणी तथा भ्रमण वृतान्त मौखिक रूपमा भन्नु लगाउनु, उत्सव–अनुष्ठानहरू आयोजन गरी कार्यक्रम संचालन गर्न लगाउनु, तर्क सभामा बोल्न लगाउनु आदि उपायहरू प्रयोग गर्न सकिन्छ।

५. ४. पठन (पढ़ाई) – आदर्श पठनको महत्त्व–

प्राथमिक स्तरका पठन शिक्षणको मूल उद्देश्य हो, विद्यार्थीवर्गलाई मातृभाषाको वर्ण र पदबारे परिचय गराउनु साथै वाक्य गठन सम्बन्धित सामान्य ज्ञान उपलब्ध गराउनु। प्रत्येक अक्षरको शुद्ध अनि सठीक

उच्चारण, मात्रा अनि विराम चिन्हहरूको उचित अनुशरण, पठित विषयलाई सठीक प्रकारले मनन गर्ने क्षमता उपलब्धी, स्वर (ध्वनि) को उतार–चड़ाउलाई प्रयोजन अनुसार रक्षा गर्दै पठित विषयलाई सरल ढंगमा व्यक्त गर्नु अनि आवश्यकता अनुकूल द्रुततासाथ वाचन (पठन) गर्न सक्ने क्षमताशील हुनु नै पठन शिक्षणको लक्ष्य हो।

भूल नगरी सरल ढंगमा पढ़न सक्नु नै आदर्श पठनको प्रमुख विशेषता हो। कुनै शब्दलाई आँखाले नदेखिनाले अथवा भूल गरेर पढ़नाले विषयको अर्थ परिवर्त्तन हुने सम्भावना रहन्छ।

साधारण गद्य, प्रबन्ध, कथा आदि जुन गतिमा पाठ गरिन्छ, त्यही गतिमा आवेगपूर्ण कविता पठन गर्न सकिन्दैन। यसैले प्रत्येक शब्द सहजता साथ सुन्न र बुझ्न सकिनेगतिमा पढ़ने अभ्यास विद्यार्थीहरूलाई गराउनु पर्दछ।

पठनको समयमा पाठकको आँखा पुस्तकदेखि प्रायः एक/डेड़ फूट टाड़ो रहनु पर्दछ, मेरूदण्डलाई सीधा (ठाड़ो) राख्नुपर्छ, उभिएर पढ़ने समयमा पनि यो दुरत्व कायम राख्ने चेष्टा गर्नुपर्छ। प्रकाश देब्रेतर्फदेखि प्राप्त गर्नु उचित हुनेछ।

स्वरको उतार–चड़ाउभित्र पाठको मर्म वा वक्तव्यको रहस्य लुकेको हुने गर्दछ। यसैले पठनको समयमा यसलाई ध्यान आवश्यक छ।

विषय वस्तुको उचित अर्थलाई लक्ष्य गरेर विरामचिन्हनादिको प्रयोग गरिएको हुने हुनाले बालगीत होस् वा पद्यांश तथा गद्यांश पठन गर्दा त्यसलाई ध्यान दिनु आवश्यक छ। यसो नगरे अरूले ठीकसंग भावग्रहण गर्न सक्तैन साथै आफूले पनि पाठको भाव तथा रस ग्रहण गर्न सकिन्दैन।

पठनपछि जुन कुरा ग्रहण गरिन्छ वा पढ़ेर जे बुझिन्छ तथा सिकिन्छ त्यसैलाई उपलब्धि भनिन्छ। पठनपछि विषयवस्तुलाई सम्पूर्ण रूपले बुझ्न साथै अरूलाई अभिव्यक्त गर्नु सक्नु नै आदर्श पठनको सफलता मान्न सकिन्छ।

सस्वर पठन र मौन पठन

पठन वा पढ़ने कार्य दुइ प्रकारले गरिन्छ– सस्वर पठन अनि मौन पठन। लिखित पाठ्य वस्तुलाई शब्दोच्चारण सहित पाठ गरिने क्रियालाई **सस्वर पठन** भनिन्छ अनि सोही पाठलाई केवल आँखाले हेरेर मनमनै पठन गरिने क्रियालाई **मौन पठन** भनिन्छ।

सस्वर पठन – भाषा शिक्षणको निम्ति सस्वर पठन अति प्रयोजनीय शिक्षण प्रणाली हो। प्राथमिक विद्यालयका निम्न श्रेणीहरूमा केवल सस्वर पठन उपयोगी सिद्ध हुँदछ किनभने यो समयमा शिशुहरू कथा भन्नु, बाल गीत गाउनु, ससाना कविताहरू आवृति गर्नु रूचाउँछन्। यस स्तरमा शिशुहरूमा उचित वाक् पटुता आएको हुँदैन साथै शुद्ध उच्चारण र उपयुक्त भाषा व्यवहार गर्ने कौशल प्राप्त भएको हुँदैन।

सस्वर पठनमा प्रगति ल्याउने उपायहरू –

क) शुद्ध अनि स्पष्ट उच्चारण।

ख) विराम चिन्हहरूप्रति उचित ध्यान।

ग) कविता पठनमा छन्द, लय, ताल आदिलाई ध्यानमा राखी आवृति।

घ) विषयवस्तुको प्रकार, भेदअनुसार सस्वर पठन गरी उपयुक्त अनुभूति अनि आवेग संचार।

ङ) पद्यको रसास्वादन गर्दा घरिघरि दोहोर्‍याएर सस्वर पठन।

मौन पठन– शब्द समूह वा वाक्यको प्रतिरूपलाई आँखाले हेरेर मात्र अर्थवोध हुनु नै मौन पठनको विशेषता हो। पाठ्य विषयवस्तुको रसोपलब्धिको निम्ति यो अति प्रयोजनीय माध्यम हो। उचित अभ्यासको माध्यमद्वारा तेस्रो श्रेणीको पछिल्लो पर्व अथवा चौथो श्रेणीको आरम्भदेखि नै विद्यार्थीहरूलाई मौन पठनतर्फ अग्रसर गराउनु उचित हुनेछ। स्वाधीनतासाथ स्वाभाविक गतिमा पढ़न सक्ने सामर्थ्य हासिल गरिसकेपछि तिनीहरूलाई छोटो छोटो वाक्यहरूद्वारा प्रथमतः मौन पठन गर्ने अभ्यास गराउनुपर्छ, पठनमा पूर्णरूपले प्रगति आएपछि मात्र पूर्ण रचनाको मौन पठन गराउनु उचित हुनेछ। यसको निम्ति विद्यार्थीवर्गको अभिज्ञतालाई ध्यानमा राखी सहज र सरल शब्दहरूद्वारा गठित वाक्यहरू श्यामपटमा लेखिदिएर त्यसलाई केहीक्षण हेर्न लगाएर तिनीहरूलाई मन–मनमा गुन्नु लगाउनुपर्छ। त्यसपछि त्यहाँ लेखिएका विषय वस्तुलाई मेटिदिएर अघि लेखिएका विषयवस्तु सम्बन्धित प्रश्नोत्तरहरू मौखिक रूपमा अथवा खातामा लेख्न लगाउनुपर्छ, खाली ठाउँ भर्ने प्रश्न दिएर पनि यो उद्देश्य पूरा गर्न सकिन्छ। यसबाहेक सहज कथा, जीवनी, भ्रमण बृत्तान्त विषयक रचनाहरू केही क्षण निःशब्द पढ़न लगाएर पठित अंशको प्रासंगिक प्रश्नहरू श्यामपटमा लेखिदिएर छात्र–छात्राहरूलाई त्यसको उचित उत्तरहरू लेख्न लगाउन सकिन्छ।

मौन पठनको अभ्यास गठन गराउदा ध्यान दिनुपर्ने कुराहरू :–

१. मौन पठन गर्दा पाठकको चित्त एकाग्र हुनुपर्छ।

२. मुखबाट खास खुश शब्द पनि निस्कनु हुँदैन साथै ओंठहरू हल्लिनु हुँदैन।

३. नेत्रको प्रगति र प्रत्यागति उचित ढंगमा हुनुपर्छ।

४. विद्यार्थीवर्गलाई शिर खड़ा गरी पाठ्य विषयलाई हेर्न लगाएर केवल आँखाहरू मात्र चाँड़ो देब्रेदेखि दाहिनेतिर बड़ाउँदै फेरि देब्रेतर्फ ल्याउने प्रयास गर्न लगाउनु पर्छ।

५. मौन पठनको अभ्यास नियमित रूपले गराइए मात्र यसको प्रगति हुने सम्भावना रहन्छ।

५. ५. लेखन (लेखाई) – आदर्श लेखन – अनुलेखन, प्रतिलेखन, श्रुतिलेखन

लेखन एउटा विशेष प्रकारको शिल्पकला हो। भाषाको लिपि रूपको अंकनको सहयोगमा मनोभावनाको मौन प्रकाश नै लेखन हो।

लेखन शिक्षण एउटा जटिल प्रक्रिया हो। लेख्ने कार्यमा एकैसाथ शरीरका एकाधिक अंगहरू, जस्तै– आँखा, हात र मस्तिष्कको समन्वयको आवश्यकता पर्दछ। यसैले लेखन शिक्षण प्रारम्भ गर्दा शिक्षक–शिक्षिकावर्ग खुबै सावधान रहनुपर्दछ।

आदर्श लेखन प्रस्तुति –

शिशुले जब लेख्न शुरू गर्छ त्यसबेला लेखनमा विशुद्धि वा सौन्दर्यतर्फ ध्यान दिनु उचित हुँदैन, स्वाभाविक रूपमा हातका पेशीहरू संचालन गर्न उसले कसरी सिक्नेछ त्यसतर्फ मात्र ध्यान दिनु पर्नेछ। पहिला उसलाई कागजमा वा स्लेटमा आफू खुशी किरिङ मिरिङ रेखाहरू कोर्ने स्वतंत्रता दिनुपर्छ। यसले उसको औंलीहरूको पेशीहरू नमनीय र सबल हुनेछ। यस्ता किरिङमिरिङ आकारहरूबाट उसले विभिन्न अक्षरहरूका आकृतिहरू आविष्कार गरेर आनन्दित हुनेछ। केही कालसम्म यस्तो अभ्यास गराइ सकेपछि विभिन्न आकार– आकृतिका वर्णहरू खातामा वा स्लेटमा लेखिदिएर त्यसमाथि उसलाई पेन्सिलले वा खलिमट्टीले दोहोर्‍याउन लगाउनुपर्छ। यसरी ती अक्षरहरूबारे शिशुको धारणा स्पष्ट हुनेछ अनि अनुकरण गरी विभिन्न वर्णहरू हेरेर उनीहरूले

अनुकरण गरी लेख्ने अभ्यास गर्नेछन्। विद्यार्थीवर्गलाई उत्साह प्रदान गर्नलाई बराबर आकृति भएका अक्षरहरू अंकन गर्नु वा लेख्न सिकाउनु पर्छ। यसले उनीहरूको आत्म विश्वास बढ़ नेछ।

प्रथम श्रेणीमा संयुक्ताक्षर लेख्न सिकाउनु आवश्यक छैन। सहज अनि सरल अक्षर ज्ञान प्रदान गरेर नै छात्र–छात्राहरूलाई अग्रसर गराउनु पर्दछ।

दोस्रो श्रेणीमा पुगेपछि संयुक्ताक्षर लेख्न सिकाउनु सकिन्छ। वर्ण सम्बन्धी धारणा स्पष्ट भएको हुनाले तिनीहरूले अक्षरहरू माझ मेल खोजिनिकाल्न सिक्नेछन् तथा विस्तार–विस्तार विभिन्न वर्णहरू मिलेर बनिने शब्द तथा शब्द राशी तयार गर्न अनि वाक्य गठन गर्न सिक्नेछन्।

तेस्रो श्रेणीदेखि विभिन्न लिपिहरूको अनुकरण गरी हस्तलिपिको उन्नति गर्ने चेष्टा विद्यार्थीहरूले स्वयं गर्नेछन्। यस अवस्थामा तिनीहरूले कलम–मसी प्रयोग गरी लेख्न सिक्नेछन्

चौथो श्रेणीमा द्रुत लेखनको अभ्यास गराउनु पर्दछ। यसको निम्ति श्रुतिलिपिको अभ्यास गराउनु उचित हुनेछ। यो श्रेणीमा विद्यार्थीवर्गले परिचित वस्तु सम्बन्धी रचनाहरू लेख्ने अभ्यास पनि गर्नेछन्। जति बेसी लेख्ने अवसर दिइन्छ त्यति नै तिनीहरूको हस्तलिपिमा उन्नति हुनेछ। विभिन्न उत्सव–अनुष्ठान, वाणी संकलन, पत्र रचना, कविता अनि अनुच्छेद रचना वा नकल गर्नु आदि यस श्रेणीका विद्यार्थीहरूलाई निर्देश दिनु उचित हुनेछ।

अनुलेखन, प्रतिलेखन र श्रुतिलेखन

प्राथमिक विद्यालयहरूमा शिशुहरूलाई लिपि (अक्षर) ज्ञान प्रदान गरी लेख्न प्रक्रियामा सुदक्ष बनाउनको निम्ति प्रयोग गरिने विधिमा लेखन तीन प्रकारका हुन्छन्– अनुलेखन, प्रतिलेखन र श्रुति लेखन।

अनुलेखन– लेख्न शिक्षणको प्रारम्भिक कालमा शिशुहरूलाई अनुलेखनको अभ्यास गराइन्छ। अनुकरण गरी लेख्नु सिक्नुलाई अनुलेख वा अनुलेखन भनिन्छ। श्रेणी–कक्षमा शिक्षक–शिक्षिकाले श्यामपटमा वा विद्यार्थीको खातामा सुन्दर अक्षरमा आदर्श लेख प्रस्तुत गरिदिनछन्। त्यसैको अनुकरण गरी तिनीहरूलाई लेख्न लगाइन्छ। अनुलेखको उद्देश्य हो, सुन्दर ढंगले लेख्न सिक्नु। अनुलेखनको प्रयोग प्रथम श्रेणीको छात्र–छात्राहरूलाई गराइन्छ।

प्रतिलेखन– अनुलेखनकै प्रतिरूप हो, प्रतिलेखन वा प्रतिलेख। अनुलेखनको उपयुक्त अभ्यास भइसकेपछि विद्यार्थीहरूलाई प्रतिलेखनको अभ्यास गराउनु पर्दछ। यसको निम्ति तिनीहरूलाई कुनै पुस्तक वा पत्र–पत्रिकाको आदर्श लेख (छात्र–छात्राको उचित स्तर अनुकूल) लाई जस्ताको तस्तै अनुकरणको माध्यमद्वारा सुन्दर हस्तलिपिमा लेख्न लगाइन्छ। प्रतिलेखनको उद्देश्य पनि विद्यार्थीहरूको हस्तलिपि ल्याउन सकियोस भन्ने हो। दोस्रो श्रेणीको छात्र–छात्राहरूको निम्ति यो उपाय उपयुक्त हुनेछ।

श्रुतिलेखन– बालक बालिकाहरूले अनुलेखन र प्रतिलेखनमा कुशलता हासिल गरिसकेपछि तिनीहरूलाई श्रुतिलेखन सिकाउनुपर्छ। यसको निम्ति शिक्षक–शिक्षिकाले पाठ्य–पुस्तक वा अन्य कुनै उपयुक्त पुस्तकको निर्वाचित अंश विस्तारै सस्वर वाचन गर्दै जानेछन् अनि विद्यार्थीवर्गले त्यसैलाई अनुशरण गरी आफ्ना अभ्यास पुस्तिकामा सो अंश जस्ताको तस्तै लेख्दै जानेछन्। श्रुति लेखनको उद्देश्य अनुलेखन वा प्रतिलेखनभन्दा केही फरक छ। यसमा विद्यार्थीवर्गको लेखनको गतिमा तीब्रता ल्याउनु, विराम चिन्हहरूको प्रयोग जान्नुबाहेक शब्दहरूको सठीक गठन र हिज्जे भूल नगरी लेख्ने प्रक्रियातर्फ विशेष ध्यान दिइन्छ।

प्राथमिक विद्यालयहरूमा श्रुतिलेखन तेस्रो श्रेणीदेखि आरम्भ गर्नु उचित हुनेछ। प्रथम अनि दोस्रो श्रेणीका शिशुहरू भाषा शिक्षणको त्यस अवस्थामा पुगेका हुँदैनन् जहाँ तिनीहरू श्रुतिलेखनको निम्ति तयार हुन सकोस् तरै पनि शिक्षक–शिक्षिकाले समय–समयमा एक दुइवटा सहज शब्दोच्चारण गरेर वा परिचित वस्तुहरूको नाम भनेर शिशुहरूलाई लेख्न लगाउनु हुनेछ जसले निकट भविष्यको निम्ति श्रुति लेखनको धारणा शिशुहरूले पाइसकेको अवस्था अथवा तेस्रो श्रेणीदेखि मात्र श्रुतिलेखन आरम्भ गरिन्छ तथा पाचौं श्रेणीमा पुगेपछि छात्र–छात्राले परिपूर्ण रूप प्राप्त गर्नुपर्दछ।

५. ६. हिज्जे प्रणाली – शुद्ध हिज्जे लेखन

हाम्रो भाषामा हिज्जे प्रणाली अधिकाशतः ध्वनि अनुकूल नै हुने गर्दछ तरै पनि कतिपय शब्द उच्चारणको समयमा कुनै वर्ण ध्वनिहीन रहने गर्दछ, जस्तै– स्वरूप (सरूप), उच्छवास (उछवास), स्वच्छन्द (स्वछन्द) आदि। लेख्य भाषाको प्रयोग स्तरमा यस्ता कतिपय असावधानी तथा व्याकरणका नियमहरू ठीकसंग पालन नगर्नाले साथै मातृभाषाप्रति वक्ताको श्रद्धा र अनुरागको कारणले गर्दा नै प्रायः सबैले हिज्जे भूल गरी लेख्ने गर्छन्।

हाम्रो भाषाको हिज्जे प्रणालीमा साधारणतः तीन प्रकारका समस्याहरू छन्– (१) वर्णमाला गत समस्या (२) भाषागत समस्या (३) उच्चारणगत समस्या।

१) वर्णमालागत समस्या– हाम्रोभाषा अन्तर्गत स्वरवर्ण र व्यञ्जन वर्णहरू प्रत्येकको उच्चारण विधिमा पार्थक्य रहेता पनि कतिपय वर्णहरूको उच्चारणमा समता देखिन्छ, जस्तै– 'श' 'ष' र 'स'; 'ब' र 'व'; 'ज' र 'य'; 'न' र 'ण' प्रायः एकै प्रकारले उच्चारित हुने हुनाले यी वर्णहरूद्वारा गठन हुने शब्दहरूलाई ध्वनि सुनेर मात्र भिन्नता छुट्याउन नसकिने हुनाले हिज्जे भूल हुने सम्भावना रहन्छ। स्वर वर्णमा पनि दुइवटा इ–कार (इ र ई) अनि दुइवटा उ–कार (उ र ऊ) रहेता पनि हिज्जे प्रणालीमा यिनीहरूको कुनै पृथक उच्चारण हुँदैन तर प्रयोग स्तरमा यसले अर्थमा भने भिन्नता ल्याउने छ।

२) भाषागत समस्या – हाम्रो भाषामा समोच्चारित तर बेग्ला बेग्लै अर्थ लाग्ने धेरै शब्दहरू प्रचलित छन् जसलाई भाषागत जटिल समस्या मान्न सकिन्छ। अनु (पछि, पछाड़ि) र अणु (खुबै सानो) दुइवटा पृथक शब्दको अन्तमा 'नु' र 'ण' वर्ण रहन्छ जो हिज्जेमा फरक रहे पनि उच्चारणमा एकै सुनिन्छ। यसैले विद्यार्थीले शब्दको ध्वनि मात्र सुनेर लेख्ने चेष्टा गरे अर्थान्तर पर्न जानेछ। यसैले भाषामा शुद्धता कायम राख्नलाई शिक्षक–शिक्षिकाले उचित शब्दको उचित हिज्जे लेख्न सिकाउनु पर्दछ।

३) उच्चारणगत समस्या – भाषागत समस्याबारे चर्चा गर्दा उच्चारणगत समस्या पनि त्यसैभित्र पर्न आउँछ। हाम्रो भाषाको शब्दहरूका हिज्जे विषयमा वर्णहरूको निजस्व उच्चारण रीतिलाई पालन गरेर सबै समय शब्दहरू उच्चारित हुँदैनन्, जस्तै– 'अमृत' शब्द उच्चारण गर्दा 'अम्रित' हुँदछ तर जुन प्रकारले लेखिन्छ उच्चारण गर्दा हामी त्यसलाई परिवर्त्तन गरेर बोल्ने गर्दछौं।

शुद्ध हिज्जे लेखन

हाम्रो मातृभाषाका शब्दहरूको हिज्जे शुद्ध लेख्ने केही व्याकरणिक नियमहरू छन्, जसलाई अनुराग वा चासो लिएर पालन गरिए निश्चय नै हिज्जे शुद्ध गरी लेख्न सकिनेछ। केही नियमहरू निम्नांकित गरिएको छन्–

१. विभक्ति चिन्हलाई अघिल्तिरका शब्दसित जोड़ेर लेख्नुपर्छ, जस्तै– त्यसले; रामलाई; दोकानमा; तिमीसित आदि।

२. दोहोरिएको शब्दलाई जोड़ेर अथवा संयोजक चिन्ह (–) हाइफन लगाएर लेख्नुपर्छ, जस्तै– मुसुमुसु, मुसु–मुसु; घरिघरि, घरि–घरि; खुरूखुरू, खुरू–खुरू; माथिमाथि, माथि–माथि आदि।

३. अकरण वा उल्टा अर्थ लाग्ने शब्द लेख्दा 'न' त्यही शब्दसित जोड़ेर लेख्नुपर्छ, जस्तै– नभन, भएन, नराम्रो, नमीठो, नकाम आदि।

४. सम्बन्ध कारकका विभक्ति चिन्हभन्दा पछिको शब्द एक वचन पुलिंगमा भए 'को' एकवचन स्त्री लिंगमा भए 'की' र वहुवचन पुलिंग, स्त्रीलिंग वा उभयलिंगमा भए 'का' प्रयोग हुन्छ, जस्तै–

एकवचन पुलिंगमा – उसको छोरो, रामको कलम आदि।

एकवचन स्त्रीलिंगमा – उसकी छोरी, हरिकी बहिनी आदि।

बहुवचन सबै लिंगमा – उसका छोराहरू, उसका छोरीहरू धनेका कलमहरू आदि।

५. 'इ' कार अन्तमा भएका अव्ययहरूका अन्तिम स्वर 'इ' हुने गर्दछ 'ई' कार लेख्नु हुँदैन, जस्तै– पनि, माथि, मुनि, अनि, भोलि, अस्ति, अघि, यति, जति, आदि।

६. 'न' को प्रयोग – अन्त्यमा 'न' लाग्ने नेपाली भाषाका धेरै जस्ता शब्दहरूको अन्तिम अक्षर दन्त्य 'न' नै हुने गर्दछ, जस्तै– आँगन, उखान, दिन, धान, बिहान, मैदान, लसुन, चलन आदि।

७. 'ण' को प्रयोग – 'र' 'रेफ' (ˊ); 'प' र 'क्ष' को पछि प्रयोग हुने 'न' जहिले पनि मूर्धन्य 'ण' हुन्छ। यो नियम संस्कृत भाषाका शब्दहरूमा उपयोग हुन्छ, जस्तै– वरूण, मरण, व्याकरण, कर्ण, वर्ण, पूर्ण, पूर्णिमा, तृष्णा, ग्रहण, वीणा आदि।

८. 'श' को प्रयोग – संस्कृत भाषाबाट आएका तत्सम शब्दहरूमा 'स' को सट्टामा 'श' प्रयोग हुने गर्दछ, जस्तै– अंश, दर्शन, ईश्वर, दिशा, शेष, रश्मि आदि।

९. 'ष' को प्रयोग– संस्कृत भाषाबाट आएका तत्सम शब्दहरूमा 'स' को सट्टामा 'ष' को प्रयोग गरिन्छ, जस्तै– अभिलाषा, औषधि, कष्ट, पाषण, पुरूष, भाषा, हर्ष, दोष आदि।

१०. 'स' को प्रयोग – तद्भव अनि मौलिक शब्दमा तथा संस्कृतमा 'स' नै प्रयोग गरिएका शब्दहरूमा 'स' नै प्रयोग गरिएका शब्दहरूमा 'स' को प्रयोग हुने गर्दछ, जस्तै– विकास, अनुसार, सिद्धान्त, सेवा, सभा आदि।

५. ७. हस्तलिपि – सुन्दर हस्तलिपिको महत्त्व र लेखन अभ्यास गठन

हस्तलिपि सुन्दर हुनु सुशिक्षाको लक्षण हो। हस्तलिपि हेरेर नै व्यक्तिको व्यक्तित्व अनि मानसिकताको परिचय पाइन्छ भन्ने कुरा दर्शन शास्त्रमा पनि उल्लेख भएको पाइन्छ। यसैले हातको लेखाईलाई एउटा विशेष प्रकारको शिल्पकलाको रूपमा मानिएको छ। अधिकांश परीक्षार्थीहरूले परीक्षामा हस्तलिपि सुन्दर नभएकै कारणले कम अंक प्राप्त गर्ने गरेको सत्य तथ्यलाई नकार्न सकिन्न। यसर्थ सुन्दर हस्तलिपि हुने व्यक्तिलाई समाजमा महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुने गर्दछ।

आरम्भदेखि नै विद्यार्थीहरूलाई सावधानीसाथ सुन्दर हस्तलिपिमा लेख्नु सिकाउनुको निम्ति शिक्षक–शिक्षिकावर्गले प्रयत्न गर्नुपर्दछ।

विद्यार्थीहरूलाई सुन्दर हस्तलिपिमा लेख्ने अभ्यास गठन गराउनको निम्तिलिखित उपायहरूप्रति ध्यानदिनु आवश्यक छ :–

१. शब्द वा वाक्य अन्तर्गत वर्णहरू समान आकृतिको हुनुपर्छ।
२. वर्णहरू सम दुरत्वमा लेखिनुपर्छ।
३. शब्दहरूको दुरत्व बराबर हुनुपर्छ।
४. वर्णहरूमा मात्राहरू तथा विराम चिन्हहरू उचित स्थानमा प्रयोग गरिएको हुनुपर्छ।
५. पंक्ति (लाइन) हरूको दुरत्व समान हुनुपर्दछ।
६. प्रत्येक अक्षर स्पष्ट हुनुपर्छ।
७. अक्षरहरू एकै ढाँचामा लेखिएको हुनुपर्छ, सीधा वा ढलेको भए एकै क्रममा रहेको हुनुपर्छ।
८. लेखाई परिष्कार अनि स्वच्छ हुनुपर्छ।
९. पेन्सिल वा कलमलाई अनावश्यक (कम वा बेसी) चाप दिएर लेख्नु हुँदैन।
१०. अनावश्यक अलंकृत अक्षरमाभन्दा पुस्तकमा छापिएका अक्षरहरूको अनुकरण नै असल हुनेछ।
११. खाताको मास्तिर अनि देब्रेपट्टि आवश्यक मार्जिन राखेर लेख्नुपर्छ।

५. ८. सार संक्षेप

यस एकाईमा हामीले भाषा शिक्षणका चार विभिन्न स्तरहरू– सुनाई, बोलाई, पढ़ाई र लेखाईको विषयमा विषद चर्चा गर्ने प्रयास गरयौ। यसको साथै हाम्रो भाषाको हिज्जे प्रणाली अनि शुद्ध हिज्जे लेख्ने उपायहरू साथै सुन्दर हस्तलिपिको महत्त्व र सुन्दर हस्तलिपि लेख्ने तरिकाहरू– बारे आलोचना गरयौं।

५. ९. प्रगति जाँच

१. मातृभाषा शिक्षणका कतिवटा स्तरहरू छन्? के के?
२. प्राथमिक स्तरमा श्रवण शिक्षणको महत्त्वबारे प्रकाश पार्नुहोस।
३. आदर्श कथन शिक्षणका केही बुँदाहरू पेश गर।
४. सस्वर अनि मौन पठनको महत्त्वबारे बुझाऊ।
५. श्रुतिलेखन किन आवश्यक छ? बुझाएर लेख।
६. नेपाली भाषाका हिज्जे प्रणालीका कुन कुन समस्याहरू छन्?
७. सुन्दर हस्तलिपि लेख्ने अभ्यास गठन गर्दा कुन कुन विषयमा ध्यान दिनु उचित छ?

एकाई – ६ मातृभाषा शिक्षणका विभिन्न पद्धतिहरू

६. १. भूमिका

६. २. वर्ण क्रमिक पद्धति

६. ३. शब्दक्रमिक पद्धति

६. ४. वाक्य क्रमिक पद्धति

६. ५. बाल गीत तथा बाल कविता

६. ६. कथा वाचन (भन्नु)

६. ७. अभिनय/अनुकरण पद्धति

६. ८. सार संक्षेप

६. ९. प्रगति जाँच

६. १. भूमिका

मातृभाषा शिक्षण पद्धतिहरूलाई शिशु उपयोगी तथा चाखलाग्दो ढंगमा उचित प्रकारले प्रयोगमा ल्याउनलाई आदिकालदेखि नै पूर्व र पश्चिमका महान शिक्षाविद्हरूको मार्ग दर्शनमा विभिन्न पद्धतिहरूको अनुसन्धान गरिन्दैछ। आजसम्म सहज, सरल र शिशु उपयोगी ठहरिएका तथा प्रचलनमा रहेका मातृभाषा शिक्षण पद्धतिहरूबारे यस एकाईमा चर्चा गरिएका छन्।

६. २. वर्णक्रमिक पद्धति/वर्णमाला पद्धति

विद्यार्थीहरूलाई मातृभाषाको लिपिरूपमा प्रयोग भएका वर्णहरूसित सर्वप्रथम परिचय गराइने पद्धतिलाई वर्णमाला वा वर्णक्रमिक पद्धति भनिन्छ। यस पद्धति अनुसार भाषाका स्वर वर्ण अनि व्यञ्जन वर्णहरूसित परिचय गराउँदै लेख्ने अभ्यास पनि एकैसाथ गर्न लगाइन्छ। यसको निम्ति छात्र–छात्राहरूलाई वर्णक्रममा उपलब्ध जम्मै वर्णहरूलाई पहिला कण्ठस्थ वा मुखस्थ गराउनमा विशेष जोड़ दिइन्छ। यसरी वर्णहरूसित राम्ररी परिचित भइ सकेपछि मात्र अर्थपूर्ण शब्द र वाक्यहरू गठन गर्न सिकाइन्छ। यसरी यस पद्धतिमा मात्रा र संयुक्ताक्षर रहित शब्द र वाक्यहरू क्रमशः पढ़ने र लेख्ने कार्य गर्न शिक्षार्थीहरूलाई प्रेरित गराइन्छ। त्यसपछि मात्रा ज्ञानको परिचय (आ = ा, इ = ि आदि) गराइएपछि मात्रा युक्त शब्दहरू चिनाउँदै त्यस्ता शब्दहरूद्वारा गठित वाक्यहरूको ज्ञान दिन थालिन्छ।

प्रचलित वर्णमाला पद्धति खूबै पुरानो पद्धति हो। आधुनिक शिक्षाविद्हरूले यसलाई खण्डन गरी यान्त्रिक पद्धतिको नाम दिएकाछन्। यसपद्धतिद्वारा शिशुहरूले अधिकांश अक्षरहरू (वर्णहरू) खूबै परिश्रम गरेर सिक्न बाध्य हुनुपर्दछ। पूर्व अभिज्ञताको अभावमा विमूर्त अक्षर प्रतीकहरूसित विद्यालय प्रवेश गरेको प्रथम चरणमा नै जुझ्नु पर्ने हुनाले उनीहरू हताश बन्नेछन्। यस प्रकारको सिकाईमा शिशुहरूले रोचकता र आनन्दनुभूति प्राप्त गर्न सक्तैनन्।

६. ३. शब्दक्रमिक पद्धति

यस पद्धतिमा शिशुहरूको अनुभव र अनुभूतिलाई प्राथमिकता दिइन्छ। परिचित वस्तुहरूको चित्र अनि त्यसको नाम बुझाउने शब्दको प्रयोग गरी शिशुहरूलाई प्रथमतः शब्द (वर्ण समूह) को ज्ञान दिएर त्यही वर्णहरूको प्रयोग गरी सरल र परिचित अन्य अन्य शब्दहरू गठन गर्ने ज्ञान दिइन्छ। यो क्रममा जब वर्णमालाका समस्त वर्णहरूद्वारा गठित शब्दहरूको ज्ञान दिइसकिन्छ, त्यसपछि मात्र शिशुहरूलाई वर्णहरूको क्रमवद्धतासंग परिचित गराइन्छ। यस पद्धतिलाई 'हेर र भन' पद्धति पनि भनिएको छ किनभने यस पद्धतिमा शिक्षक–शिक्षिकाले विभिन्न प्रकारका चित्र कार्ड र शब्द कार्डहरू तयार गरी शिशुहरू सामू प्रस्तुत गर्नेछन्, जस्तै –

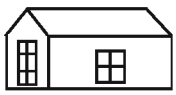

चित्र

घर

शब्द

चित्र

कप

शब्द

यस पद्धतिमा शिशुहरूलाई कार्डहरूमा अंकित चित्राकृति अनि शब्दाकृतिहरू हेरेर घरिघरि 'घर', 'कप' आदि शब्दहरू उच्चारण गर्न लगाउनु पर्छ। यसरी अर्थपूर्ण शब्दहरूसंग पूर्णरूपले परिचय गराएर शब्दहरूको विभाजित रूप (वर्णहरू) तर्फ इंगित गराउदै शिशुहरूलाई वर्ण अनि मात्राहरूको उच्चारणबोध गराउनुपर्छ। यसो गर्नाले शिशुहरूले शब्दहरूको गठन अनि वर्णहरूको प्रयोग साथै मात्राहरूको प्रयोजनीयता बारे ज्ञान लाभ गर्नेछन्।

यसरी शब्दक्रमिक पद्धतिद्वारा वर्णमालाका समस्त वर्णहरू र मात्राहरू साथै वाक्य गठन प्रक्रियासंग शिशुहरूको सम्बन्ध सहजै स्थापना हुनेछ अनि यसप्रकारले उत्साहित भएर तिनीहरूले अन्य नयाँ शब्दहरू आफै आविष्कार गर्न थाल्नेछन्। शिशुहरूले आविष्कार गरेका यस्ता नयाँ शब्दहरूमा हिज्जे सम्बन्धित भूलहरू हुनु सम्भव छ। यस अवस्थामा सहानुभूतिपूर्वक संशोधन गरिदिएर शिक्षक–शिक्षिकाले उनीहरूमा अझ उत्साह जागृत गराइदिनु पर्दछ। यहाँ 'सजाय होइन उपहार' (Not punishment but reward) सिद्धान्त अप्नाउनु उचित हुनेछ। यस पद्धति अन्तर्गत मातृभाषा शिक्षकले शिशुहरूलाई परिचितदेखि अपरिचित तथा ज्ञातदेखि अज्ञात बस्तुहरूको परिचय दिँदै भाषाको उचित ज्ञान उपलब्ध गराइनेछ।

भाषा शिक्षणको निम्ति यो पद्धति वैज्ञानिक ढंगको तथा उपयुक्त देखिएता पनि यसमा कतिपय दुर्वलता अवश्यै देखा पर्दछ। चित्राकृतिहरूको सहयोगले अनेकौं परिचित शब्दहरू शिशुहरूसामु प्रस्तुत गर्न सकिएता पनि भाषाका कतिपय शब्दहरू चित्रको रूपमा प्रस्तुत गर्न सकिन्दैन, जस्तै– सर्वनाम शब्दहरू– तँ, म, हामी, आदि; विशेषण शब्दहरू – मीठो, लामो, दुब्लो आदि; क्रिया शब्दहरू– हो, होइन, बस्छ, खान्छ, आदि।

६. ४. वाक्यक्रमिक पद्धति

छात्र–छात्राहरूलाई उनीहरूकै अभिज्ञता क्षेत्रभित्रका सहज अनि सरल शब्दहरूद्वारा गठित पूर्ण वाक्यको लिखित रूपको परिचयबाट आरम्भ गरिने भाषा शिक्षण पद्धतिलाई वाक्यक्रमिक पद्धति भनिन्छ। यस पद्धतिमा पनि सामान्य चित्रादिको सहयोग लिइने गर्दछ। यसर्थ, यसलाई 'हेर र भन' वा शब्दक्रमिक पद्धतिको विस्तारित रूप पनि भनिन्छ।

श्यामपटमा परिचित वस्तुको चित्रांकन गरी त्यसै सम्बन्धित एकाधिक अति सहज र सरल शब्दहरूद्वारा गठित वाक्यहरू स्पष्ट अनि सुन्दर हस्तलिपिमा लेखिदिएर शिक्षक–शिक्षिका स्वयंले आदर्श पठन गरिदिनुपर्छ। त्यसपछि छात्र–छात्रालाई घरिघरि पठन गर्न लगाउँनु पर्छ। यस्ता वाक्यहरूमा रहेका सबै शब्दहरूको समुचित ज्ञान भएको आभास भएपछि वाक्यलाई शब्दिक रूपमा अनि पछि वार्णिक रूपमा विखण्डित गरी अलग अलग रूपमा चिन्ने अभ्यास गराउँनु पर्छ। यसको निम्ति चित्रकार्ड, वाक्य कार्ड, शब्द कार्ड र वर्णकार्डको पनि सहायता लिन सकिन्छ। विद्यार्थीवर्गले बोलिरहेकै वाक्यहरूको शब्द वर्ण र मात्राहरूका गठन प्रक्रियालाई अति सरल र सहज प्रकारले जानिने हुनाले यो पद्धतिद्वारा उनीहरूको हृदयमा कौतुहल अनि आनन्द उत्पन्न हुनेछ। यसैको फलस्वरूप उनीहरूले अन्य वाक्यहरू गठन गर्ने अभ्यास घरिघरि गरिरहनेछन्।

वाक्य –	यो मेरो घर हो									
शब्द –	यो	मेरो	घर	हो						
वर्ण र मात्रा –	य	ो	म	्	र	ो	घ	र	ह	ो

यस पद्धतिद्वारा भाषा शिक्षणमा समय अवश्यै ज्यादा खर्च भए ता पनि विद्यार्थीवर्गले भाषाका समस्त विमूर्त्त वर्णहरू र मात्राहरूको व्यवस्थालाई सजीवता साथ सिक्नेछन्, बुझ्नेछन् अनि आनन्दित भएर अरू अभ्यास गर्नेछन्। यसरी प्रतिदिन उनीहरू उत्साहसित प्रयोग भइरहेका वाक्यहरूको गठन सम्बन्धी चिन्तन गर्न सिक्नेछन्। यस्तो समयमा जब कि छात्र–छात्राले प्रशस्त भूल गरेका हुनेछन्, शिक्षक–शिक्षिकाले बढ़ो धैर्य र सहानुभूतिसाथ शिक्षण कार्य सम्पन्न गर्नु अति आवश्यक हुनेछ।

६. ५. बालगीत तथा बालकविता

प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षा प्रदान गरिने क्रममा वालगीत तथा वाल कविताको असाधारण महत्त्व छ। बालक–बालिकालाई गीतको भाकामा ससाना कविताहरू मुखस्थ भन्न सिकाएर त्यसैको सहयोगमा मातृभाषा ज्ञान दिइने सजिलो पद्धतिलाई बालगीत वा बाल कविता आवृति/वाचन पद्धति भनिन्छ। बाल गीत नै एक प्रकारले शिशुहरूको निम्ति तिनीहरूको जीवनको प्रथम काव्य हो। यसद्वारा तिनीहरूको हृदयभित्रको प्रकृत रूपको प्रकाश धेरै मात्रामा हुने गर्दछ। यसर्थ, मातृभाषा शिक्षणको शुरूआत्मा शिशुहरूलाई बाल गीत तथा बाल कविता सिकाउनु आवश्यक छ।

निम्नलिखित कारणहरूले गर्दा मातृभाषा शिक्षण क्षेत्रमा बाल गीत वा बाल कविता आवृत्ति महत्त्वपूर्ण माध्यम (पद्धति) हुन गएको छ–

१. बाल गीत को शब्द संयोजन अनि शब्द माधुर्यले अज्ञानता मै शिशु हृदयमा भाषा र साहित्यप्रति प्रेमको भावना जागृत हुनेछ।

२. बाल कविताका असंलग्न चित्रहरूले शिशुको हृदयमा कल्पना शक्तिको विकास गराउनेछ।

३. बाल कविता आवृत्तिको माध्यमद्वारा शिशुको आत्मप्रकाशन क्षमता अनि आत्म विश्वास बढ़ नेछ।

४. शिशुको शब्द भण्डार वृद्धि हुनेछ।

५. तिनीहरूको उच्चारण स्पष्ट हुनेछ।

६. तिनीहरूको स्मृति शक्तिको विकास हुनेछ।

७. विद्यालयमा दलगत रूपमा बाल कविता वाचन गरिने हुनाले विद्यार्थीहरूको अन्तरमा भएको जड़ता अनि भीरूता नष्ट हुनेछ।

८. बाल गीत अनि बाल कविता आवृत्ति गर्दा शिशुहरूले असीम आनन्द अनुभव गर्नेछ।

६. ६. कथा वाचन (भन्नु) पद्धति

कथा भन्ने र सुन्ने प्रवृत्ति विशेष गरी वाल्यावस्थामा रहेको पाइन्छ। बालक–बालिकाहरूको यही प्रवृत्तिलाई उचित मार्ग दर्शन दिएर शिक्षक–शिक्षिकाले श्रेणीकक्षमा मीठा मीठा दन्त्य कथा तथा लोक कथा लगायत महापुरूषहरूको जीवनीहरूलाई कथाको रूपमा सुनाउने साथै बालक बालिकालाई उनीहरूले जानेको कथाहरू भन्नु लगाएर अरू छात्र–छात्रालाई सुन्नु लगाउने अनि कथाको मुख्यांश र सारांशहरू श्यामपटमा लेखिदिएर तथा उनीहरूलाई नै लेख्न लगाएर मातृभाषा सिकाउने पद्धतिलाई **कथा वाचन** वा **कथा भन्ने पद्धति** भनिन्छ।

प्राथमिक स्तरका शिशुहरूलाई मातृभाषा शिक्षणको समयका कथा वाचन पद्धतिको भूमिका महत्त्वपूर्ण छ। यस माध्यमद्वारा बालक–बालिकाहरूको श्रवण शक्ति अनि कथन शक्तिमा विकास हुनेछ, शब्द भण्डरमा वृद्धि हुनेछ, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति अनि चिन्तन शक्तिमा विकास हुनेछ, सत्य अनि न्यायप्रति तिनीहरूको विश्वास बढ्ने छ, तिनीहरूको मनमा स्वार्थ–त्याग, परोपकार, स्नेह, प्रेम र सहानुभूतिको भावना जागृत हुनेछ। छात्र–छात्राको हृदयमा स्वदेश र स्वजातिप्रति प्रेमको भावना उत्पन्न हुनेछ तथा तिनीहरू साहसी बन्नेछन्।

कथा वाचनको निम्ति कथा सम्बन्धित चित्रहरू शिक्षक–शिक्षिकाले संग्रह गरेर तथा छात्र–छात्रालाई संग्रह गर्नु लगाएर, कथाको छोटकारी रूपरेखा बताइदिएर, कथालाई मनमनै तयारी पार्न लगाएर श्रेणी कक्षमा अन्य विद्यार्थीवर्गको सामु उभिएर भन्नु लगाउनु पर्दछ। यस प्रकासको अभ्यास गठन गराउनु अघि शिक्षक–शिक्षिकाले श्रेणी कक्षमा यस्ता कतिपय रसिला र चिन्ताकर्षक नीति शिक्षाले परिपूर्ण कथाहरू भन्नुपर्छ। यसो गर्नाले छात्र–छात्राहरूको मनमा उत्साह जाग्नेछ।

६. ७. अभिनय/अनुकरण पद्धति

विद्यार्थीवर्गलाई मातृमाषाका सहज पाठहरूबाट निर्वाचित विषयवस्तुलाई लघु नाटिकाको रूपमा तयार पारी अभिनय गर्न लगाएर पाठदान गरिने पद्धतिलाई **अभिनय** तथा **अनुकरण पद्धति** भनिन्छ।

शिक्षक–शिक्षिकाले शिशुहरूको आयु सीमा, श्रेणी स्तर अनि रूचिवोधलाई ध्यानमा राखी शिशु उपयोगी विषयवस्तु निर्वाचन गर्नुपर्छ। यस्ता विषय–वस्तुहरू कुनै वीरत्व व्यञ्जन कथा, नीति मूलक कथा, महापुरूषहरूका जीवनी, पौराणिक कथा तथा लघु हास्य रसात्मक कथाहरूबाट लिन सकिन्छ। नाटक रचनाको समयमा बालसुलभ विषयवस्तु, सहज र सरल भाषा अनि छोटो छोटो सम्वाद, उचित चरित्र चित्रण, गति अनि द्वन्द्व, सठीक। घटना संयोजन आदि विषयतर्फ विशेष ध्यान दिनुपर्छ। नाटक खूबै छोटो, आनन्ददायक र चित्ताकर्षक हुनुपर्दछ।

यस पद्धतिद्वारा मातृभाषा शिक्षण गर्नाले शिशुहरू अधिक सक्रिय हुनेछन् यसले गर्दा पाठदान गर्न सहज हुनेछ अनि पठित पाठ पनि तिनीहरूको मस्तिष्कमा दीर्घस्थायी भएर रहनेछ तर समय भने अधिक खर्च हुनेछ,

प्रत्येक पाठलाई नाटकमा परिणत गर्दै मञ्चन गर्न लाग्दा। यो बाहेक यस्ता नाटकहरूमा कक्षाका सबै छात्र–छात्राहरूलाई एकैसाथ पात्र–पात्राको रूपमा भाग लिन दिनु नसकिने हुनाले अधिकांशतः विद्यार्थीहरू अकर्मण्य रहनु वाध्य हुनु पर्दछ यसो हुँदा श्रेणीकक्षामा विश्रृंखलता सृजना हुने गर्दछ।

६. ८. सार संक्षेप

यस एकाईमा हामीले प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणका विभिन्न पद्धतिहरू – वर्णक्रमिक, शब्दक्रमिक, वाक्यक्रमिक, बालगीत तथा बालकविता, कथावाचन र अभिनय/अनुकरणबारे यिनीहरूको प्रयोग विशेषता तथा वैज्ञानिकता, यिनीहरूबाट हुने लाभ हानी, यिनीहरूलाई श्रेणी कक्षामा कसरी प्रयोग गर्न सकिन्छ आदि विषयमा संक्षेपमा चर्चा गर्ने प्रयास गरयौं।

६. ९. प्रगति जाँच

१, वर्णक्रमिक पद्धति मातृभाषा शिक्षणमा कति उपयोगी छ?
२, शब्दक्रमिक र वाक्य क्रमिक पद्धतिमध्ये कुन चाहिँलाई बालोपयोगी मान्न सकिन्छ?
३, प्राथमिक स्तरका विद्यार्थीहरूको निम्ति बालगीत किन महत्वपूर्ण छ?
४, कथावाचन पद्धतिको प्रयोग विधिबारे चर्चा गर।
५, अभिनय पद्धतिमा बाल नाटिका कसरी तयार पार्न सकिन्छ?

७. पद्य

अध्याय ७.१ विषय – गरीब

कवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा

(१)
गरीब भन्छौ? सुखको म झैं धनी,
मिल्दैन संसारभरी कतै पनी;
विलासको लालस दास छैन म,
मिठो छ मेरो रसिलो परिश्रम।

(२)
प्रयासका पत्थरमा नदीसरि,
बहन्छु हाँसी म तरंगले भरी;
म पोखरी झैं उही ठाउँ जम्दिन,
छ शुद्ध यो जीवनको सबैकण।

(३)
निधार मेरो पसिना जड़ाउ छ,
मोती तिनैको अनमोल भाउ छ;
छ शान्तिको सुन्दर दीप बासमा,
पीयूषको स्वाद छ गाँस–गाँसमा।

(४)
छ भोक मीठो, रसिलो छ प्यास,
छ अन्तमा व्यञ्जनको सुवास;
छ थोर आवश्यक्त, पुगेपछि,
म बस्छु संसार नयाँ नयाँ रची।

(५)
छ साथ मेरो दिनरात ईश्वर,
ममा यहाँ छैन कतै कुनै डर;
संसार यस्तो रसिलो विषे अहो,
मलाई राख्ने अति धन्य धन्य हो।

७ १. १. शब्दार्थ :

विलास = भोग, लालसा। लालस = आसक्ति, चाहना, इच्छा। दास = नोकर। प्रयास = कोशिश। अनमोल = मोल गर्न नसकिने। दीप = दीयो। पीयूष = अमृत। प्यास = तिर्खा। व्यञ्जन = मीठो खानेकुरा। सुवास = मीठो वासना।

७. १. २. कविताको सारांश :

गरीब मानिस पनि धन–सम्पत्ति नभए पनि गरीब कहिले हुँदैन। उसमा सुख र शान्ति छ भने संसारमा उ झैं धनी कोही पनि हुँदैन किनकि उसमा भोग र लालसा अनि विलास रत्तिभर पनि छैन– उसले परिश्रममा नै शान्ति प्राप्त गर्दछ। नदीको अविराम गति झैं उसले खुशी प्राप्त गर्दै प्रत्येक परिश्रममा कोसिस गरिरहन्छ अनि उ पोखरी झैं एकैठाउँ स्थिर नभएर बहिरहन्छ, यसैले उ शुद्ध छ।

निधारभरी पसिना बहेपनि ती पसिना मोतीसरह अनमोल हुन्छ अनि त्यसैको फलस्वरूप उसको वास सुन्दर र शान्त छ भने प्रत्येक गाँसमा अमृतको स्वाद पाउँछ। परिश्रमले थाकेपछि मीठो भोक लाग्छ उसलाई अनि जस्तो सुकै खानेकुरा खाएपनि त्यसमा स्वादिलो व्यञ्जनको स्वाद उसले पाउँछ।

परिश्रम गरेकै कारणले निश्चल र निष्कलंक जीवन यापन गर्दा उसलाई दिनरात ईश्वरले साथ दिइरहन्छ र कतै केहीको पनि डर छैन। यसरी सरल जीवन विताउँदा संसार नै रसिलो लाग्छ। यसैले यस्तो संसारमा जन्म दिने ईश्वरलाई उनी धन्य हो भन्दै प्रणाम गर्दछ।

७. १. २. लक्ष्मीप्रसाद (कवि परिचय)

नेपाली साहित्यमा महान विभूति महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको जन्म डिल्लीबजार, काठमाण्डौंमा वि॰ सं॰ १९६६ कार्त्तिकको औंशी लक्ष्मीपूजाको दिन भएको थियो। उनको पिता तिलमाधव देवकोटा स्वयं एक विद्वान तथा कवि थिए। लक्ष्मी पूजाको दिन जन्मिएकोले लक्ष्मीको प्रसादको रूपमा ग्रहण गरी उनको नाम पनि लक्ष्मीप्रसाद राखिएको थियो। उनले त्यससमय पनि बी॰ ए॰, बी॰ एल॰ सम्मको शिक्षा हासिल गरेका थिए औ एम॰ ए॰ सम्मको अध्ययन पूरा गरेका थिए। संस्कृत भाषाका पनि उनी ज्ञाता थिए। अंग्रेजी भाषाका उनी प्रकाण्ड विद्वान थिए। भनिन्छ, उनी सोच्दापनि अंग्रेजी भाषामा नै सोच्थे। त्यसताक उनले नौवटा भाषामा राजाको प्रशस्ति गुणगान लेखेका थिए।

उनले धेरै समय ट्यूशनद्वारा नै निर्वाह चलाउनु परेको थियो अनि त्रिचन्द्र कलेजमा प्राध्यापकको रूपमा पनि काम गरे।

महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले साहित्यका सम्पूर्ण विधामा कलम चलाएका छन्। महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, गीति नाट्य, नाटक, निबन्ध, अनुवाद, कथा, कविता, उपन्यास, बाल–कविता सम्पूर्ण विषयमा कलम चलाएर नेपाली साहित्यलाई शिखर पुऱ्याएका छन्।

देवकोटामा कवित्वशक्ति अद्‌भूत थियो, भनौं उनको भक्तिले प्रसन्न भएर जिब्रोमा आएर सरस्वती स्वयं कविताको रूपमा बाहिर निस्कन्थिन्। उनलाई कुनै कुरो लेख्दा सोचिरहनु पर्दैनथियो अनि दिनभरि रातभरि लेखेको लेखेकै पनि गर्नसक्थे, लेखेपछि सार्ने, छाँटकाँट गर्ने बानी पनि उनको थिएन। उनको काम त लेख्न मात्र थियो र लेखेपछि जताभावी फ्याँकिराख्थे। यसैले उनका कति रचनाहरू हराए अझै कति त्यसै सड़िरहेका हुनसक्छन्।

नेपाली साहित्यलाई पश्चिमे पारामा ढाल्नेमा देवकोटाको नाउँ मुख्य छ। पूर्वेली साहित्यको अध्ययन साथै पश्चिमे कविहरू – कीट्स, शेली, इलियट आदिद्वारा प्रभावित भएर यही शैलीलाई नेपालीमा प्रयोग गरेबापद नै एउटा नयाँ शैली सृजना गर्ने श्रेय उनलाई दिन सकिन्छ।

उनको मृत्यु सं॰ २०२६ भदौ २९ गते काठमांडौमा भयो। उनी मरेर, गए, तर हामीलाई धेरै रत्नहरू छोड़िराखे – उनलाई सँधै सम्झन पुग्ने गरी।

७. १. ३. भाव विस्तार :

"निधार मेरो पसिना जड़ाउ छ,
मोती तिनैको अनमोल भाउ छ।"

उपर्युक्त पद्यांशमा कविले गरीब कवितामा अति नै उत्कृष्ठ भावमा परिश्रमको महत्त्व र इमानदारितामाथि उच्चकोटिको विचार व्यक्त गरेका छन्। परिश्रमले निस्किएको निधारको पसीना अनमोल मोती सरहको भाउ हुन्छ भनेकुरा अति नै लालित्यमय भाव र भाषामा व्यक्त गरेका छन्।

"छ शान्तिको सुन्दर दीप बासमा,
पीयूषको स्वाद छ गाँस–गाँसमा।"

यो पद्यांशमा कविको कवित्वमय भावनाले चरमचुली स्पर्श गरेको छ। मानिस गरीब नै भएपनि इमान्दार र परिश्रमी भए उसले नैसर्गिक आनन्द यही जीवनमा प्राप्त गर्नसक्छ भन्ने कुरा अति नै लालित्यमय भावमा दर्शाएका छन्। गरीबको झुप्रो नै भएपनि उसको बासमा शान्तिको दीप जल्दछ र प्रत्येक रूखो–सुखो खानामा अमृतको स्वाद पाउँसक्छ। यो सबै परिश्रम र इमान्दारीको फल हो भन्ने कुरा स्पष्ट बुझ्न सकिन्छ।

७. १. ४. शिक्षण विधि :

श्रेणी कोठामा यो कविता पठन पाठन गर्दा विभिन्न पद्धतिहरूको सहायता लिन सकिनेछ। विस्तृतरूपमा कविता शिक्षण पद्धतिमा उल्लेख गरिएको छ।

७. १. ५. एकाई अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) गरीब भएपनि कसरी धनी हुनसकिन्छ?
२) "म पोखरी झैं उही ठाउँ जम्दिन" भनेको के हो?
३) नमिठो नै भएपनि "पियूषको स्वाद" खानेकुरामा कसरी पाइन्छ?
४) "थोरै आवश्यक्ता भए सुखी हुनेछौं" – ठीक हो?
५) कसलाई ईश्वरले साथ दिन्छन्?

७. १. ६. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१. खाली ठाउँ भर्नुहोस् –

..... मेरो ..... जड़ाउ छ ..... तिनैको अनमोल ..... छ।

छ ..... सुन्दर ..... वासमा ..... स्वाद छ..... .....

२. गरीब कविताको सारांश लेख्नुहोस्।

३. गरीब र परिश्रमको व्याख्या गर्नुहोस्।

७. २. विषय वस्तु – मीठो बोली

कवि बाबुलाल प्रधान

(१)
हे नानी मीठो बोली
सबैसंग गर।
मीठो बोली मुखमा लिंदा,
के को हुन्छ, डर।

(२)
बूढ़ा बूढ़ी सबैसंग,
मीठो बोली गर।
रूखो बोली मुखमा लिई,
पार्छौं किन पीर।

(३)
बूढ़ा – बूढ़ी कति दिन,
तिनीहरू बाँच्छन्।
रूखो बचन तिनले सुन्दा
कति मन दुख्छन्।

(४)
मीठो बोली बोल्दाखेरि,
के जान्छ र धन।
मीठो बोली बोल्दाखेरि,
हर्षित हुन्छ मन।

७. २. १. कविताको सारांश

यो कवितामा मानिस भइकन सँधै मीठो बोली वचन बोल्नुपर्ने सन्देश कविले अति नै सरलतासित उल्लेख गरेका छन्। प्राथमिक स्तरका कलिलो मष्तिष्क भएका शिशुहरूलाई सहजसित अमिट छाप बस्ने प्रकारका कविता अति नै लालित्यमय भाषा र भाव भंगिमा यो कविता प्रस्तुत गरिएको छ। कवि भन्छन् कि नानी हो! सबैसंग मीठो बोली गर अनि मीठो बोली बोल्दा कहीँ, कसैको र केहीको पनि डर हुँदैन। तिमीले भेटेका बूढ़ा बूढ़ी सबैसित मीठो बोली बोल्ने गर। यदि तिमीले उनीहरूलाई रूखो बोली बोले पीर पर्नेछ– यसो गर्नु उचित होइन। किनकि, ती बूढ़ा–बूढ़ीहरू कति दिन बाँच्छन् र? रूखो बोली सुन्दा तिनीहरू मन दुखाएर रूनेछन्।

मीठो बोली बोल्दा कुनै धन जानेछैन र मन पनि हर्षित हुनेछ।

७. २. २. कवि परिचय :

कवि बाबुलाल प्रधानले बाल कविता सहित अनेकन पाठ्यपुस्तक (नेपाली भाषाका) लेखेका छन्। विषय बस्तुलाई चट्टै टिपेर सरल र सुललित छन्दमा छोटो मीठो कविता कोर्नमा कविजी खप्पिस छन्। जीवनभर शिक्षण

पेशामा रहेर उनी सारा विषयलाई नै शिक्षामय बनाउनमा पोख्त नेपालीको सामजिक व्यवस्था बद्लन उनी सदैव जागरूक देखिन्छन्। उनका यिनै जीवन शैलीका शिक्षापद कविताले नै नेपाली पाठ्यपुस्तकलाई पारसमणि प्रधानपछि ठूलो स्थान ओगट्न सफल बनेका छन्।

७. २. ३. भाव विस्तार :

"हे नानी मीठो बोली सबैसंग गर।
मीठो बोली मुखमा लिंदा के को हुन्छ डर।"

उपर्युक्त पद्यांशमा अति नै सरल र श्लील भाषामा प्राथमिक स्तर का नानीहरूलाई सभ्य भाषामा मीठो बोली बोल्ने आव्हान कवि गर्दछन्। मीठो बोलीले नै सबैसंग राम्रो सम्बन्ध हुन्छ र केही कुराको पनि डर हुनेछैन।

"बूढ़ा–बूढ़ी कति दिन, तिनीहरू बाँच्छन्,
रूखो बचन तिनले सुन्दा कति मनदुख्छन्।"

यो पद्यांशमा कविले मानव जाति मरणशील प्राणी हुन् भन्ने कुरा स्पष्ट पार्दै बूढ़ा–बूढ़ी मानिसहरू धेरै दिन बाँच्ने छैनन् अनि रूखो (नराम्रो) बचन सुन्दा उनीहरूका मन दुख्नेछ भन्ने कुरा सरल रूपमा लालित्यमय भाषामा वर्णन गर्दछन्।

७. २. ४. शिक्षण विधि :

कविता शिक्षण पद्धतिको अध्यायमा विस्तृतरूपमा व्याख्या गरिएको छ।

७. २. ५. शब्दार्थ :

रूखो = खस्रो। तुच्छ = नीच। पीर = दुःख। हर्षित = प्रसन्न। वचन = बोली। हर्षित = खुशी।

७. २. ६. एकाई अन्त्यका प्रश्नहरू :

क) हामीले सबैसंग कस्तो बोली बोल्नुपर्छ?
ख) रूखो बोलीले अरूलाई कस्तो असर पार्छ?
ग) मीठो बोलीले जीवनमा के गर्छ?
घ) मीठो बोलीले मन कस्तो हुन्छ?
ङ) मीठो बोली बोल्दा पैसा लाग्छ?

७. २. ७. तपाईंको प्रगिति जाँच्नुहोस् :

१. प्रत्येक शब्दका दुइ–दुइवटा अर्थ दिएका छन् छानेर, खाली ठाउँमा लेख्नुहोस् :
(नीच, दुःख, क्षुद्र, प्रसन्न, कष्ट, खुशी)

पीर = (१) ..... (२) .....
तुच्छ = (१) ..... (२) .....
हर्षित = (१) ..... (२) .....

२. कविताको सारांश चारवटा लहरमा लेख्नुहोस्।

७. ३. विषय : आदिकवि भानुभक्त आचार्य

मोतीराम भट्ट

(१)
भर्जन्म घाँसतिर मन दिइ धन कमायो।
नाम क्यै रहोस् पछि भनेर कुवा खनायो।।
घाँसी दरिद्र घरको तर बुद्धि कस्तो।
मो भनुभक्त धनी भैकन आज यस्तो।।

(२) मेरा इनार न त सत्तल पाटी क्यै छन्।
जे धन र चीजहरू छन् घरभित्र नै छन्।।
त्यस घाँसीले कसरि आज दिएछ अर्ति।
धिक्कार! हो मकन बस्नु नराखि कीर्ति।।

७. ३. १. कविताको सारांश : पृष्ठभूमि

आदिकवि भानुभक्त आचार्य एक सम्पन्न परिवारमा जन्मेका थिए। किशोर अवस्थामा एकदिन भानुभक्त कहीँ डुल्न जाँदा नदी किनारमा पुगे। केही थाकेकाले एउटा चप्लेटी ढुंगामा अड़ेसिएर आराम गर्न थाले र त्यहीँ निदाए। निन्द्राबाट व्यूँझदा तिनले आफ्नो अघि एउटा घाँसीले घाँस काट्दै गरेको देखे। घाँस काटिरहेको घाँसीलाई भानुभक्तले सोधे– "घाँसी दाई, यो घाँस काटेर के गर्नुहुन्छ?"

घाँसीले भन्यो– "बाजे यो घाँस गाउँमा लगेर बेच्छु। बेचेको पैसाले खाइकन जति बाँच्छ, त्यसले गाउँमा एउटा सानो कुवा खनाईदिन्छु। त्यसो गर्नाले गाउँलेको पनि भलो हुन्छ फेरि म गरीब घाँसीको पनि नाम रहन्छ।"

घाँसीको यस्तो कुरा सुनेर भानुभक्त छक्क पर्छन् अनि घाँसीको जस्तै नाम कमाउने इच्छाले उनी त्यही चप्लेंटी ढुंगामा उक्त कविता कोर्छन्। यो कविताका पंक्तिहरूलाई भानुभक्तको प्रथम रचना भनी नाम दिइएपनि विद्वान साहित्य विद्हरू यसलाई मोतीराम भट्टकै रचना हो भनी प्रमाणित गरेका छन्। किनकि नेपाली भाषाको उत्थानकाललाई प्रतिष्ठापित गर्नमा मोतीराम भट्टको योगदान नेपाली भाषा र साहित्यले कहिल्यै बिर्सन सक्तैन।

सारांश – दरिद्र घाँसीले जीवनभरी घाँस बेचेर पनि आफ्नो नाम राख्नलाई गाउँमा कुवा खनाउने विचार देखेपछि भानुभक्त धनी भएर पनि इनार, सत्तल, पाटी केही बनाएका थिएनन्। यसेले घाँसीको कथनलाई अर्ति मानेर नै भानुभक्तले कीर्ति राख्नलाई नेपाली भाषामा रामायणको उल्था गरे।

७. ३. २. कवि परिचय : मोतीराम भट्ट

विक्रम संवत १९२३ मा कान्तिपुरमा मोतिराम भट्ट को जन्म थियो। सानै उमेरमा बनारस गई उनले फारसीका शिक्षा लिएका थिए। उनी नेपाल फर्केर आएपछि गाउँघरमा रामायणका श्लोकहरू लयहाली गाएको सुनेर खोजी गर्दा भानुभक्तले अनुवाद गरेका थाहा पाए अनि ती भानुभक्तका अनुवादित रामायण खोजी गर्न थाले अनि वि॰ सं॰ १९४४ मा भानुभक्तको रामायण प्रकाशित गरे। मोतिराम भट्टले धेरैवटा पुस्तक रचना गरे। उनी वि॰ सं॰ १९५३ मा तीस वर्षको उमेरमा नै परलोक गमन गरे।

७. ३. ३. कविताको स्थान नेपाली साहित्यमा

नेपाली साहित्यले भानुभक्तलाई आदिकविको रूपमा मानेको छ। यसको कारण यिनका कवितामा पहिलेका कविहरूमा नभएको काव्यात्मक गुणको परिपूर्णता, विशुद्ध नेपाली शैली तथा चिन्तन र मौलिकताको अंश पाइनु नै हो। अर्को कारण यिनका कविता सरस र सरल भएकाले तिनले नेपालीहरूलाई भाषा तथा संस्कृतिको एकताको धागोमा उन्नु पनि हो। पृथ्वी नारायण शाहले नेपालको राजनैतिक सिमाना विस्तार गरे भने ती चार जात छत्तीस वर्णका जनजीवनलाई भाषागत एकीकरण गर्नमा भानुभक्तले अहम भूमिका निभाए।

भानुभक्तका रामायण अनुवादले नै नेपाली भाषाको वर्तमान रूप आउनमा अहम भूमिका रहेका मानिन्छ भने भानुभक्तले प्रथम कविताको रूपमा घाँसीसितको भेटवार्ताबाट जन्मिएको उक्त कविता नेपाली भाषाले इतिहासमा माइल खुट्टीको रूपमा उभिएको छ।

७. ३. ४. शिक्षण विधि :

कविता शिक्षण विधिलाई हेर्नुहोला।

७. ३. ५. शब्दार्थ :

आदिकवि = शुरूको कवि। भर्जन्म = जीवनभरि। दरिद्र = गरीब।
इनार = कुवा। सत्तल = धर्मशाला। कीर्ति = नाम, यश।

७. ३. ६. एकाई अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) हाम्रा आदिकवि को हुन्?
२) तिनको जन्म कहिले र कहाँ भएको थियो?
३) कसलाई भेटेर भानुभक्तलाई नाम कमाउने सुर चल्यो?
४) कुवा किन खनाइन्छ?

७. ३. ७. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१) खाली ठाउँ भर्नुहोस् :

"मेरा ..... न त .... क्यै छन्।
जे ..... र ..... छन् ..... नै छन्।।"

२. उक्त कविताको पृष्ठभूमि के हो?
३. नेपाली साहित्यमा यो कविताको स्थान कस्तो छ?
४. मोतिराम भट्टको योगदानमाथि एउटा रचना तयार पार्नुहोस्।

८. १. विषय : भारतको झण्डा

– किशलयबाट।

(नाटक)

सुनिता : आज १५ अगस्त हो। आजकै दिन भारत स्वतंत्र भएको थियो। हामीले स्कूलमा तीन रंग भएको झण्डा फहरायौं।

लक्ष्मी : म त आज विसञ्च थिएँ। स्कूल जान सकिनँ। स्कूलमा गएर तिमीहरूले के के गऱ्यौ? मलाई पनि भनन।

सुनिता : गुरूले हामीलाई स्कूलको बाहिर खुल्ला जग्गामा उभ्याउनेभयो र १५ तारीख अगस्तको विषयमा केही भाषण दिनुभयो।

लक्ष्मी : आज स्वतंत्रता दिवस मनाइएको कारण गुरूले भाषणमा के बताउनुभयो?

सुनिता : सन् १९४७ को १५ अगस्तको दिन भारत स्वधीन भएको थियो भनेर गुरूले भन्नुभयो। त्यसपछि उहाँले भन्नुभयो– "त्यसदिनदेखि भारतमा प्रायः २ सय वर्षको अंग्रेजी शासन समाप्त भयो। भारतबासी स्वतंत्र भए। भारतबासीले भारतको शासनभार आफ्नै हातमा लिए।"

लक्ष्मी : तीन रंगको झण्डाको विषयमा गुरूले केही भन्नुभएन?

सुनिता : प्रधान गुरूले यस विषयमा भन्नभयो– "नानी हो! यो झण्डामा तिमीहरूले तीन रंग देखिरहेका छौ र बीचमा एउटा चक्र पनि देखिरहेका छौ। यी रंग र चक्रको अर्थ छ। तिमीहरूले यो झण्डाबाट शिक्षा लिनुपर्छ।"

लक्ष्मी : त्यो शिक्षा के होला?

सुनिता : गुरूले भन्नुभयो– "झण्डामा माथि पहेंलो वा गेरूवा, बीचमा सेतो र तलतिर हरियो रंग छ। सेतो भागको बीचमा एउटा चक्र छ। पहेंलो वा गेरूवा रंगको अर्थ साहस र त्यागको हो। हामीले देश र जातिको सेवाको लागि मरिमेट्नुपर्छ। पेटका लागि मात्र पैसा र अन्नपातले ढुकुटी भर्नुहुँदैन। हामी अरूको लागि पनि जिउनुपर्छ। हामी साहसी र त्यागी हुनुपर्छ। सेतोको अर्थ सत्य र शान्ति हो। यसको अर्थ ज्योति पनि हो। ज्योतिले हामीलाई सत्यको बाटोमा डोऱ्याउँछ। हामी सँधै शान्तिप्रिय हुनुपर्छ अनि सत्यमा अडिग बस्नुपर्छ। हरियो रंगको अर्थ बीरता र विश्वास हो। यसले हामीलाई हाम्रा खेतबारीसंग सम्बन्ध राख्नु भन्ने पनि बुझाउँछ। सबैलाई जीवनयापनमा सहयोग गर्ने अन्नपात र रूखपातसित हामीले सम्बन्ध जोड्नुपर्छ भन्ने बताउँछ। चक्रको अर्थ गति हो। मानिसको जीवनमा गति र प्रगति हुनुपर्छ। जमेको पानीजस्तो मानिसको जीवन भए त्यो जीवन मरेको तुल्य हुन्छ। जीवनमा हल न चल भएर मानिस बस्नु हुँदैन। मानिसले सँधै उन्नति गरिरहनुपर्छ।

लक्ष्मी : यी तीन रंगको झण्डा र चक्रको अर्थ मलाई थाहा थिएन। आज मैले बुझें।

८. १. १. शब्दार्थ :

विकास = उन्नति। साहस = आँट। दिवस = दिन। समाप्त = अन्त। अर्थ = माने। ढुकुटी = अन्न राख्ने ठाउँ। ज्योति = उज्यालो। जीवनयापन = जीवन चलाउनु। सहयोग = सहायता। तुल्य = बराबर।

८. १. २. सारांश

हाम्रो देश भारतको राष्ट्रीय झण्डाको रंग र अशोक चक्रको शिशुहरूका कौतुहललाई असल ढंगमा चित्रण गर्दै सहज र सरलरूपमा वर्णन गरिएको यो गद्य–रचना नाटकको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ। १५ अगस्तको दिन भारत स्वाधीन भएको उपलक्ष्यमा स्कूलमा गुरूहरूले स्वाधीनता दिवस र भारतको झण्डाको तीनवटा रंग र चक्रको विस्तृत जानकारी शिक्षार्थीलाई सरल रूपमा दिइएको छ। भारतको झण्डाको तीनवटा रंग गेरूवा, सेतो र हरियो अनि माझको चक्रको वर्णन यसप्रकार छ –

गेरूवा = साहस र त्याग।

सेतो = सत्य र शान्ति।

हरियो = बीरता र विश्वास।

चक्र = गति।

यी तीन रंगको झण्डाको अर्थ यसरी स्पष्टसित वर्णन गरिएको छ।

८. १. ३. झण्डाको रंगहरूको व्यापक अर्थ :

गेरूवा = (साहस र त्याग) – हामीले देशको सेवाको निम्ति मरिमेट्नुपर्छ। पेटका लागि मात्र पैसा र अन्नले ढुकुटी भर्नु हुँदैन। हामी अरूको लागि पनि जिउनुपर्छ। हामी साहसी र त्यागी हुनुपर्छ।

सेतो = (सत्य र शान्ति) – यसको अर्थ ज्योति पनि हो। ज्योतिले हामीलाई सत्यको बाटोमा डोहोर्‍याउँछ। हामी सँधै शान्तिप्रिय हुनुपर्छ अनि सत्यमा अडिग भएर बस्नुपर्छ।

हरियो = (बीरता र विश्वास) – यसले हामीलाई हाम्रा खेतबारीसँग सम्बन्ध राख्नु भन्ने बुझाउँछ। सबैलाई जीवनयापनमा सहयोग गर्ने अन्नबाली र रूखपातसँग हामीले सम्बन्ध जोड्नुपर्छ भन्ने बताउँछ।

चक्र = (गति) – मानिसको जीवनमा गति र प्रगति हुनुपर्छ। जमिएको पानीजस्तो मानिसको जीवन भए त्यो जीवनको कुनै मूल्य हुँदैन। जीवनमा हल न चल भएर मानिस बस्नुहुँदैन तर मानिसले सँधै उन्नति गरिरहनुपर्छ।

८. १. ४. शिक्षण विधि :

श्रेणीकोठामा यो पाठ प्रस्तुत गर्दा विभिन्न शिक्षण पद्धतिहरूको सहायता लिन सकिन्छ।

८. १. ५. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) भारतको झण्डामा कतिपटा रंगहरू छन्?

२) झण्डाको सबैभन्दा माथिको रंग कस्तो छ?

३) झण्डाको माझमा केको चित्र छ?

४) गेरूवा रंगको अर्थ के हो?

५) चक्रको अर्थ के हो?

८. १. ६. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

क) झण्डाका रंगहरूको व्यापक अर्थ लेख्नुहोस् :

१, पहेंलो/गेरूवा

२, सेतो

३, हरियो

ख) भारतको झण्डामा चक्रको स्थान कहाँ छ?

ग) चक्रको व्यापक अर्थ के हो?

घ) भारतको स्वाधीनता दिवस १५ अगस्तमाथि एउटा निबन्ध रचना गर्नुहोस्।

८. २. विषय : समयको महत्त्व

समय अमूल्य बस्तु हो। जसलाई पैसा तिरेर पनि किन्न पाईंदैन। समयको महत्त्व बुझेर मानिसले प्रत्येक काम समयमै गर्नुपर्छ, गर्ने प्रयत्न र अभ्यास गर्नुपर्छ।

जुन मानिसले समय अनुसार काम गर्छ उसको जीवन सफलता, उन्नति र सुखले भरिन्छ। हरेक कुरा कुबेलामा गर्ने मानिसले राम्ररी ढंग पुऱ्याएर काम गर्न सक्तैन। उसका सबै कामहरू बिग्रन्छन् र उसको जीवन दु:खले परिपूर्ण बन्दछ।

समयमा विद्यालय नपुगे पाठ सिक्न पाईंदैन; परीक्षामा बस्न पनि पाईंदैन। समयको वास्ता नगर्नाले पक्रनपर्ने गाड़ी छुट्छ, भेट्नपर्ने मान्छे उम्कन्छ, धेरै जरूरी कामहरू रोकिएर लथालिंग हुन्छन्। समयमा उपचार नगरे रोगीको प्राण जान्छ। समयमै सानो भूललाई सुधार नगरेपछि त्यसले ठूलो क्षति पुऱ्याउँछ।

समयमा काम नगर्ने मानिसलाई जहिले पनि आत्तुरी परिरहेको हुन्छ। हत्तारिएर गरेको उसको काम ठीक हुँदैन।

सबै काम समय अनुसार गर्नेलाई समयको अभाव हुँदैन। हतार नगरी मन लगाएर काम गर्न पाउँदा उसको काम असल हुन्छ र उसले चाँड़ै नै उन्नति गर्छ।

समयको विषयमा प्रकृतिबाट पनि धेरै सिक्न सकिन्छ। प्रकृतिमा घाँस–पात समयमा पलाउँछन्। फल–फूल समयमा फुल्छन्। भमरा पुतली समयमा आउँछन्, समयमा घाम उदाउँछ, समयमा अस्ताउँछ।

समयका यस्ता अनेक उदाहरण हामी हाम्रा वरिपरि देख्न सक्छौं।

खोला जसरी कसैलाई नपर्खी लगातार बगिरहन्छ उसरी नै समय पनि कसैलाई नपर्खी बित्दै नै जान्छ। बगेको पानी फर्केर आउँदैन। त्यसरी नै बितेको समय पनि कहिल्यै फर्केर आउँदैन।

८. २. १ शब्दार्थ :

अमूल्य = मूल्यवान (मोल नभएको)। प्रयत्न = कोसिस। अभ्यास = काम गर्ने बानी। कुबेला = असमयमा। क्षति = हानी, नोक्सानी। आत्तुरी = हत्तार।

८. २. २. सारांश :

समय एउटा यस्तो बस्तु हो जुन अमूल्य छ। समय कहिल्यै फर्केर आउँदैन र दोहोरिंदैन। यसेले समयमा नै काम गर्न सक्नुपर्छ किनकि समयले कसैलाई पर्खंदैन। यदि समयमा काम नगरे हामी पछाड़िन्छौं, कुनै प्रकारको उन्नति गर्न सक्दैनौं।

समयमै काम गर्नुपर्छ भन्ने शिक्षा प्रथमतः हामी प्रकृतिबाट नै सिक्छौं। घाम उदाउनु–अस्ताउनु समयमा नै हुन्छ। हामी एकैदिन पनि घाम ढिलो–छिटो उदाएको–अस्ताएको देख्दैनौं। फूल–फल ठीक समयमा नै फुल्छ–फल्छ। समय रहँदै काम गरिहाल्नु पर्छ र निरन्तरसंग काम गरिरहनुपर्छ भन्ने सन्देश पनि हामी प्रकृतिबाट नै पाउँछौं।

यदि समयमा काम नगरे हामी प्रत्येक क्षेत्रमा पछाड़िन्छौं। पक्रन पर्ने रेल छुट्छ, भेट्न पर्ने मान्छे उम्कन्छ, यतिसम्म कि समयमा उपचार–औषधि नगरे रोगी मर्न पनि सक्छ। भनौं धेरै जरूरी कामहरू लथालिंग भएर जान्छ।

सबै काम समय हुँदै गर्ने बानी बसे मानिसलाई समयको अभाव कहिल्यै हुँदैन र उसले भविष्यमा धेरै उन्नति गर्नसक्छ।

एउटै कुरा समयको विषयमा राम्ररी बुझ्नपर्ने के छ भने खोला जसरी कसैलाई नपर्खी निरन्तर बगिरहन्छ उसरी नै समय पनि अविरल गतिमा अघाड़ि बड़िरहन्छ। बगेको पानी नफर्के झैं बितेको समय पनि कहिल्यै फर्कंदैन।

८. २. ३. शिक्षण विधि :

गद्य शिक्षण विधिलाई हेर्नुहोस्।

८. २. ४. समयबारे ध्यान राख्नुपर्ने कुराहरू :

क) समय अमूल्य बस्तु हो।

ख) प्रत्येक काम समयमा गर्नुपर्छ।

ग) समयमा काम नगर्नाले आत्तुरी पर्दछ र कामहरू बिग्रिएर लथालिंग हुन्छ।

घ) समयमा विद्यालय पुग्नुपर्छ।

ङ) समयको ख्याल नराखे पक्रनपर्ने गाड़ी छुट्छ।

च) भेट्न पर्ने मान्छे उम्कन्छ।

छ) परीक्षामा बस्न पाईंदैन।

ज) समयमा काम गरे मनलगाएर काम गर्न सकिन्छ र गरेको काम असल हुन्छ अनि चाँड़ै उन्नति हुन्छ।

झ) फल–फूल समयमा फुल्छन्–फल्छन्।

ञ) भमरा–पुतली समयमा आउँछन्।

ट) घाम समयमा उदाउँछ–अस्ताउँछ।

ठ) खोला र समय एउटै हो जो कहिल्यै फर्कन्दैन।

८. २. ५. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१. समय कस्तो बस्तु हो?

२. समयमा काम गर्ने मानिसको जीवन कस्तो हुन्छ?

३. समयमा काम नगर्ने मानिसको जीवन कस्तो हुन्छ?

४. समयबारे प्रकृतिबाट के सिक्न सकिन्छ?

५. खोला र समय कसरी एउटै हो?

८. २. ६. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

क) खाली ठाउँ भर्नुहोस् :

सबै काम ..... अनुसार ..... समयको ..... हुँदैन। ..... नगरी ..... लगाएर ..... गर्न पाउँदा उसको काम ..... हुन्छ र उसले ..... नै ..... गर्छ।

ख) समय र खोलाको तुलना गर्नुहोस्।

ग) प्रकृतिको के के उदाहरण यो पाठमा दिइएको छ?

८. ३. विषय : मदर टेरेजा

संकलन

यो पृथ्वी अरबौं प्राणीहरूले भरिएको सुन्दर संसार हो। यदि प्राणीहरू नभए यो पृथ्वी पनि एउटा ग्रहमात्र हुनेथियो। मान्छे पनि एउटा प्राणी नै हो तर अरू प्राणीभन्दा मान्छे श्रेष्ठ छ।

संसारका सबै मानिसहरू धनी, सुखी र स्वस्थ्य हुँदैनन्। यहाँ लाखौं टुहुरा–टुहुरी, लुला–लंगड़ा, नेत्रहीन, रोगी, बेसहारा, दीन–दुःखी, गरीब र अपांगहरू पनि छन्। धेरजस्ता मानिसहरू तिनीहरूका छेऊ पर्दैनन् टाड़ै रहने कोसिस गर्छन्। तिनीहरू पनि ईश्वरकै सृष्टि हुन् तर पनि गर्छन्, छिः छिः र दूर–दूर गर्छन्। तर मदर टेरेजा भने त्यस्ता स्वार्थी र निर्दयी भइनन्। संसारमा दया, सदाचार र करूणा फिँजाउनका लागि तिनले मनग्गे काम गरिन्।

मदर टेरेजा करूणाकी देवी भएर निस्किइन्। गरीब–दुःखी, भोका–नांगालाई देख्दा आफ्नो भोजनसमेत बाँड़िदिन्थिन्। तिनले कुष्ट रोगीहरूलाई पनि आफ्नै हातले मलम–पट्टी गरिदिन्थिन्। यसप्रकार तिनी गरीब–दुखीका सहायक, टुहुरा–टुहुरीका अभिभावक अनि रोगीहरूका सेविका थिइन्। मानव सेवा गर्दा तिनी भन्थिन्– "प्रत्येक मानिसलाई म भगवान देख्छु।"

मदर टेरेजाले भारत बाहेक अरू पनि धेरै देशमा पीढ़ित जनताको सेवा गरेकी थिइन्। भूँइचालोद्वारा पीढ़ित, आँधी तुफानले सताइएका, युद्धमा घाइते भएका, भोका–नांगा सबैको आँसु पुछेकी थिइन्। तिनको यस्तो मानव सेवाको निम्ति धेरैवटा देशहरूले तिनलाई मान–सम्मान र पुरस्कारहरू दिएका थिए। केही मुख्य पुरस्कारहरूका नाम र सम्मान निम्नप्रकार छन् :–

क) सन् १९६८ मा पोप जोन २३ औं शान्ति पुरस्कार।

ख) सन् १९७९ मा नोबेल शान्ति पुरस्कार।

ग) सन् १९८० मा भारतरत्न पुरस्कार।

उक्त पुरस्कारहरू बाहेक पनि मदर टेरेजाले अन्य धेरैवटा पुरस्कार र सम्मान प्राप्त गरिन्।

दीन–दुःखी र टुहुरा टुहुरीले मदर टेरेजामा आमाको ममत्व, पिताको आश्रय र ईश्वरको प्रेम पाउँथे। यस्ती करूणाकी देवीको जन्म २६ अगस्त १९१० मा पूर्व युगोस्लाभियाको स्कोपझेमा भएको थियो। सन् १९२८ सालमा भारतको बंगाल प्रान्तमा आई तिनले कलकत्ता र दार्जीलिङको लोरेटो स्कूलहरूमा इतिहास र भूगोल पढ़ाएकी थिइन्। सन् १९४६ देखि भने दार्जीलिङ छोड़ेर तिनी कलकत्ताको लोरेटोमा नै काम गर्न थालिन्। तिनी सन् १९४८ मा भारतको नागरिक भएकी थिइन्।

जीवनभरी नै लाखौं पीढ़ितहरूको सेवा गर्ने मदर टेरेजाको मृत्यु ५ सेप्टेम्बर १९९७ मा भयो। तिनको दुःखद मृत्युमा देश–विदेशमा धेरै शीर्षस्थ नेताहरूले श्रद्धा अर्पण गरे। भारत सरकारले तिनको अन्तिम संस्कार राजकीय मर्यादासंग १३ सितम्बर, १९९७ का दिन गरियो।

८. ३. १. शब्दार्थ :

श्रेष्ठ = असल। नेत्रहीन = अन्धो। सदाचार = राम्रो चालचलन। करूणा = दया, माया, प्रेम।
निम्न = तल। राजकीय = सरकारी स्तरमा।

८. ३. २. सारांश

अरबौं मानिसहरूले जन्म लिएको यो संसारमा दया, करूणा र प्रेमकी प्रतिमूर्ति मदर टेरेजाको जन्म २६ अगस्त १९१० मा युगोस्लाभियाको स्कोपझेमा भएको थियो। मदर टेरेजालाई मानव सेवा गर्न अति नै आनन्द आउँथ्यो फलस्वरूप जस्तो सुकै रोगी, पीढ़ित, असाहाय भएपनि उनी दयाकी प्रतिमूर्ति बनेर निःस्वार्थ सेवा गर्थिन। भोकाहरूलाई आफ्नै खाना दिएर र नांगाहरूलाई आफ्नै वस्त्र दिएर भएपनि सेवा पुऱ्याउँथिन्। यसैले मदर टेरेजालाई संसारका धेरैवटा देशहरूले पुरस्कार र सम्मान दिए। नोबेल पुरस्कार जस्तो विश्वमा सबैभन्दा ठूलो पुरस्कार पनि उनको सेवा कार्यलाई हेरेर प्रदान गरिएको थियो। यस्ता दया र करूणाकी प्रतिमूर्ति मदर टेरेजाको ५ सितम्बर १९९७ को दिन कलकत्तामा निधन भयो।

८. ३. ३. मदर टेरेजाले प्राप्त गरेका मुख्य मुख्य सम्मान र पुरस्कारहरू :–

१) पोप जोन २३ औं शान्ति पुरस्कार – १९६८ मा।
२) नोबेल शान्ति पुरस्कार – १९७९ मा।
३) भारतरत्न पुरस्कार – १९८०।

८. ३. ४. मदर टेरेजाको जीवनी र कर्म स्थल।

जन्म : पूर्व युगोस्लाभियाको स्कोपझेमा – २६ अगस्त १९१० मा।

भारत आगमन : सन् १९२८ मा।

कर्मक्षेत्र : बंगालको कलकत्ता र दार्जीलिङको लोरेटो कन्भेण्ट स्कूलमा इतिहास र भूगोलको शिक्षणकार्य। सन् १९४६ मा दार्जीलिङ छोड़ेर कलकत्ताको लोरेटो मार्फत सेवा कार्यमा समर्पित।

भारतीय नागरिकता ग्रहण : सन् १९४८ मा।

मृत्यु : ५ सेप्टेम्बर १९९७ मा कलकत्तामा।

दाह–संस्कार : १३ सेप्टेम्बर १९९७ मा पूर्ण राजकीय सम्मानसहित कलकत्तामा।

८. ३. ५. मदर टेरेजाले कस–कसलाई सेवा पुऱ्याइन् :

टुहुरा–टुहुरी, लुला–लङ्गड़ा, नेत्रहीन, रोगी, बेसहारा, दीन–दुःखी, गरीब र अपांगहरू, कुष्ठरोगी, भूँइचालोद्वारा पीढ़ित, आँधी तुफानले सताइएका, युद्धमा घाइते भएका, विषय परिस्थितिको चपेटमा परेर भोका–नाङ्गा भएकाहरूलाई।

८. ३. ६. शिक्षण विधि :

यो रचनाको पठन–पाठन श्रेणी कोठामा गर्नलाई विभिन्न शिक्षण पद्धति अप्नाउन सकिनेछ। विस्तृत जानकारीको निम्ति गद्य शिक्षण पद्धति हेर्नुहोला।

८. ३. ७. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१) मदर टेरेजाको जन्म कहिले अनि कहाँ भएको थियो?

२) मानव सेवा गर्दा तिनी के भन्थिन्?

३) मदर टेरेजा भारत कुन सालमा आइन्?

४) दार्जीलिङको कुन स्कूलमा तिनी नियुक्त भइन्?

५) मदर टेरेजाको मृत्यु कहिले अनि कहाँ भयो?

८. ३. ८. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

क) मदर टेरेजाले प्राप्त गरेका मुख्य सम्मान र पुरस्कारहरूका सूची बनाउनुहोस् :–

१,

२,

३,

ख) मदर टेरेजाको जीवनी र कर्मस्थलको बूँदाहरू क्रमिकतासित सजाउनुहोस् :–
(जन्मदेखि दाहसंस्कारसम्म)

ग) मदर टेरेजाले क–कसलाई सेवा पुऱ्याइन्? सबैको सूची तयार पार्नुहोस्।

८. ४. विषय : कम्प्यूटरको चमत्कार

संकलन

कम्प्यूटर बिजुलीले मात्र नभएर ब्याट्रीले पनि चल्ने मशीन हो।

हामी कम्प्यूटरमा नक्सा बनाउन सक्छौं। नक्सामा रंग भर्नुसक्छौं।

हामी कम्प्यूटरमा खेल खेल्नुसक्छौं। कम्प्यूटरमा खेल खेल्नु साह्रै मज्जा आउँछ। हामी कम्प्यूटरमा सिनेमा हेर्नुसक्छौं र गीत सुन्नुसक्छौं।

हामीलाई चाहिने सूचना तथा जानकारी कम्प्यूटरमा राख्नुसक्छौं। हामी हाम्रा नक्साहरू, हाम्रा भिडियो राख्नुराक्छौं। कम्प्यूटरले नथाकी लगातार हाम्रो आदेशमा काम गरिरहन्छ। कम्प्यूटरले मनोरञ्जन दिन्छ। कम्प्यूटरले ज्ञान दिन्छ। आजकल कम्प्यूटर सरकारी कार्यालय, व्यापार तथा घर घरमा सामान्य मशीन भएको छ।

कम्प्यूटर हेर्दा टेलिभिजन जस्तै देखिन्छ। तर कम्प्यूटरको की बोर्ड र माउस हुन्छ।

चार्ल्स बबेज नाम भएका अंग्रेज वैज्ञानिकले कम्प्यूटरको आविष्कार गरेका हुन्। तिनलाई कम्प्यूटरको पिता भनिन्छ। कम्प्यूटर बनाउनभन्दा धेरै अघि नै तिनले सन् १८२३ मा हिसाब गर्नुसक्ने मशीन बनाएका थिए। त्यस मशीनको नाम डिफरेन्स इञ्जिन हो। सन् १६४२ मा पास्कलले जोड़ने घटाउने मशीन बनाइसकेका थिए। जोड़घट गर्ने प्रथम मशीन त ख्री॰ पू॰ ३००० तिरै बनिएको हो। त्यस मशीनको नाम अवाकस हो। कम्प्यूटरमा विभिन्न कुराहरू जम्मा गर्न सिकाउने जोन न्यूमन हो।

कम्प्यूटरले अत्यन्त छिटो काम गर्छ। त्यसले थाकें भन्दैन र भूल पनि गर्दैन। कम्प्यूटरलाई अल्छी पनि लाग्दैन। एउटै काम घरि घरि गरिरहँदा वाक्क मान्दैन, आराम नगरी त्यसले काम गरिरहन्छ।

हाम्रो काम नथाकी गरिदिने कम्प्यूटर हाम्रो दास हो।

हामी कम्प्यूटरको दास हुनुहुँदैन।

हामी टेलिभिजनको दास हुनुहुँदैन।

८. ४. १. शब्दार्थ

सूचना तथा जानकारी = व्यावहारिक ज्ञानका कुराहरू। आदेश = आज्ञा, हुकुम। मनोरञ्जन = मज्जा।
कार्यालय = अफिस। सामान्य = साधारण। आविष्कार = पत्तो लाउनु, पहिलोपल्ट बनाउनु।
दास = कमारो, नोकर।

८. ४. २. सारांश :

वर्त्तमान युगमा विज्ञानको उन्नति चरम सीमामा पुगेको छ। मानिसले गर्नुपर्ने प्रायः गाह्रो कामहरू विजुली र व्याट्रीले चल्ने मशीनद्वारा गरिन्छ, गराइन्छ। यस्तै मशीनहरू मध्ये कम्प्यूटर पनि यस्तो एउटा मशीन हो जसले मानिसले गर्ने गाह्रोभन्दा गाह्रो काम पनि सहजै गर्दछ। यो मशीन विजुली र व्याट्री दुवैले चल्दछ। कम्प्यूटरमा

दैनन्दिन जीवनका सम्पूर्ण रेकर्डहरू दर्त्ता गरेर राख्न सक्छौं, नक्सा बनाउन सक्छौं। खेल खेल्न सक्छौं। वर्त्तमान समयमा कम्प्यूटर यतिविघ्न चर्चित भएको छ कि प्रत्येक कार्यालय, स्कूल, घर–घरमा कम्प्यूटरको व्यवहार गरिन्छ। यसैद्वारा व्यापार–व्यवसाय पनि गरिन्छ।

कम्प्यूटर हेर्दा टेलिभिजन जस्तै देखिएपनि यसको की बोर्ड र माउस हुन्छ। चार्ल्स बवेज नाम भएका अंग्रेज बैज्ञानिकले कम्प्यूटरको आविष्कार गरेका हुन्।

कम्प्यूटरले कुनै भूल नगरी अत्यन्त छिटो काम गर्छ। यो कहित्यै थाक्दैन र अल्छी मान्दैन। एउटै काम घरि घरि गरिरहँदा पनि यसले दिक्क मान्दैन र आराम पनि गर्दैन। यसले गर्दा आजभोलि कम्प्यूटर हाम्रो दाससमान भएको छ।

८. ४. ३. कम्प्यूटर र टेलिभिजनमा पार्थक्य :

कम्प्यूटर र टेलिभिजन हेर्दा एउटै देखिए पनि यसको फरक की बोर्ड र माउसमा छ। की बोर्ड भएको कारणले हामी कम्प्यूटरमा आफ्नो इच्छा अनुसार काम गर्न सक्छौं। की बोर्ड र माउसको सहायताले हामी कम्प्यूटरमा टाइप गर्न, गीत सुन्न, नक्साबनाउन, रेकर्ड राख्न र हेर्न इत्यादि कुराहरू गर्न सक्छौं तर टेलिभिजनमा भने हामी सिनेमा हेर्न र गीत सुन्नमात्र सक्छौं।

८. ४. ४. शिक्षण विधि :

प्रत्यक्ष शिक्षण उपकरणको सहायता लिएर यदि श्रेणीकोठामा पाठको पठन–पाठन प्रक्रिया सम्पन्न गरे अति सहयोगी हुनेछ।

८. ४. ५. कम्प्यूटर जस्तै अन्य बैज्ञानिक मशीनहरू :

चार्ल्स बबेजले १८२३ मा हिसाब गर्नसक्ने मशीन बनाएका थिए– जसको नाम डिफरेन्स इञ्जिन हो। पास्कल भन्ने बैज्ञानिकले सन् १६४२ मा नै जोड्ने घटाउने मशीन बनाइसकेका थिए। त्यसो त ख्री॰ पू॰ ३००० तिरै जोड्ने घटाउने मशीन बनिसकेको थियो। त्यो मशीनको नाम अवाकस थियो। कम्प्यूटरमा विभिन्न डाटाहरू जम्मा गर्न सिकाउने बैज्ञानिक जोन न्यूमन हो।

८. ४. ६. एकाईं अन्त्यका प्रश्नहरू :

१, कम्प्यूटरमा हामी के के गर्नसक्छौं?

२, कम्प्यूटर र टेलिभिजनमा के फरक छ?

३, कम्प्यूटरको आविष्कार कसले गरे?

४, हामी कम्प्यूटरको दास हुनुहुँदैन – भन्नाले के बुझिन्छ?

५, कम्प्यूटरमा डाटा जम्मा गर्न सिकाउने बैज्ञानिक को थिए?

८. ४. ७. तपाईंको प्रगति जाँच्नुहोस् :

१, की बोर्ड र माउसको कार्य के हो?

२, कम्प्यूटर किन थाक्दैन?

३, तलका बैज्ञानिकले के के आविष्कार गरे?

क) चार्ल्स बबेज

ख) जोन न्यूमन

४, कम्प्यूटरका पिता कसलाई भनिन्छ?

५, ख्रीः पूः ३००० मा नै कस्तो मशीन बनिएको थियो र त्यसको नाम के हो?

६, सही र भूल उत्तर छान्नुहोस् –

क) कम्प्यूटरले भूल गर्दैन। (सही/भूल)

ख) कम्प्यूटर र टेलिभिजन एउटै हो। (सही/भूल)

ग) कम्प्यूटर छिटो थाक्छ। (सही/भूल)

९. व्याकरण

९. १. शब्दको विशेष प्रयोग

९. १. १. भूमिका

९. १. २. समोच्चारित वा भिन्नार्थक शब्द

९. १. ३. पर्यायवाची वा प्रतिशब्द

९. १. ४. विपरीतार्थक वा विलोभ शब्द

९. १. ५. अनेकार्थक शब्द

९. १. ६. सार शब्द वा वाक्य संक्षेप

९. १. ७. सार संक्षेप

९. १. ८. प्रगति जाँच

९. १. १. भूमिका

वाक्यमा जुनै पनि शब्दलाई त्यसको मुख्य अर्थमा प्रयोग गरिएको हुन्छ तर कहिले काहीँ भने त्यही शब्दलाई अर्कै अर्थमा प्रयोग गरिएको पाइन्छ। यति मात्र नभएर एकै उच्चारण भएका विभिन्न अर्थ बुझाउने शब्दहरू आदि शब्दहरू भाषामा हुने गर्दछ। यसैले यस एकाईंमा यस्ता शब्दहरूका विशेष प्रयोगहरू विवेचना गरिएका छन्।

९. १. २. समोच्चारित वा भिन्नार्थक शब्द

प्रायः एकै प्रकारको उच्चारण हुने तर अर्थ बेग्लै लाग्ने शब्दहरूलाई समोच्चारित वा भिन्नार्थक शब्द भनिन्छ। यस्ता शब्दहरूको विन्यासलाई ध्यान दिनु आवश्यक छ किन भने वर्ण विन्यासमा अशुद्धि भए अर्थान्तर हुने गर्दछ। यस्ता शब्दहरूको प्रयोगले विद्यर्थीवर्गको शब्द भण्डार विकसित हुनेछ। उदाहरणार्थ यस्ता केही शब्दहरू तल दिइन्छ :

१. अनु – पछि, पछाड़ि
   अणु – अति सानो
२. फुल – अण्डा
   फूल – पुष्प
३. कुल – वंश
   कूल – किनारा
४. कृति – काम, पुस्तक
   कीर्ति – यस, इज्जत
५. चोटि – पल्ट, खेप
   चोटी – टाकुरा
६. प्रदेश – प्रान्त
   परदेश – अर्को देश

९. १. ३. पर्यायवाची वा प्रतिशब्द

एकै प्रकारको अथवा समान अर्थ भएका शब्दहरूलाई पर्यायवाची शब्द वा प्रतिशब्द भनिन्छ। यस्ता शब्दहरूको ज्ञानले अर्थ राम्ररी लगाउनु साथै आफूले चाहेको शब्दहरू प्रयोग गरेर रचनालाई सुन्दर बनाउन सकिन्छ।

केही पयार्यवाची शब्दहरू –

ईश्वर – भगवान, प्रभु, विधाता, परमेश्वर, ईश आदि।

एकान्त – निर्जन, शून्य, एकलास, सुनसान, नीरव आदि।

उपहार – पुरस्कार, कोशेली, सौगात, पारितोषिक, इनाम आदि।

पक्षी – चरा, विहंग, खग, नभचर आदि।

९. १. ४. विपरीतार्थक वा विलोम शब्द

एकाअर्कामा उल्टो अर्थ बुझाउने पदहरूलाई विपरीतार्थक वा विलोम शब्द भन्दछन्। विपरीतार्थक शब्दहरू संज्ञाको संज्ञै, विशेषणको विशेषनै, क्रिया पदको क्रियापदै, अव्ययको अव्ययै हुनुपर्दछ अर्थात् संज्ञाको विशेषण वा अव्ययको संज्ञा हुनु हुँदैन।

केही विपरीतार्थक शब्दहरू :

अमृत – विष। उत्थान – पतन। श्रद्धा – घृणा।

आदान – प्रदान। उदय – अस्त। पोषक – शोषक।

योग – वियोग। दाता – कृपण। स्वाधीन – पराधीन।

९. १. ५. अनेकार्थक शब्द

एउटै शब्दबाट स्थिति र स्थान अनुकूल भिन्न भिन्न प्रकारका अर्थमा प्रयोग हुने शब्दलाई अनेकार्थक शब्द भन्दछ, जस्तै – टीका – व्याख्यान, निधारमा लगाइने चिन्ह, विजया दशमीको दिन आदि।

हार – पराजय, माला, लाभ (लाइन) आदि।

पत्र – चिट्ठी, पुस्तकको पाना, तह, पात आदि।

अर्थ – धन, कारण, माने आदि।

कर – हात, किरण, करकाप, तिरो, सूँड़ आदि।

९. १. ६. सार शब्द वा वाक्य संक्षेप

धेरै शब्दहरूबाट सार खिँचिएर बनिएको शब्दलाई सार शब्द वा वाक्य संक्षेप भनिन्छ। यस्ता शब्दहरूको प्रयोगले भाषा र रचनालाई सुन्दरता र बल दिन्छ तथा रचनाहरू व्यापक नभएर खिरिलो बन्दछ।

यस्ता केही शब्दहरू :–

आस्तिक – जसले ईश्वर मान्छ। नास्तिक – जसले ईश्वर मान्दैन। अनुपम – जसको उपमा छैन।

सर्वज्ञ – जसले सबै जान्दछ। पोलाहा – अर्काको पोल लाउने। जलचर – पानीमा बस्ने प्राणी।

दोभान – दुइनदी मिलेको ठाउँ। तबेला – घोड़ा बाँध्ने ठाउँ।

९. १. ७. सार संक्षेप

यस एकाईमा भाषामा प्रयोग हुने केही विशेष शब्दहरूसित परिचय गराउँदै कतिपय उदाहरणहरू प्रस्तुत गरियो।

९. १. ८. प्रगति जाँच

१. समोच्चारित शब्द भन्नाले के बुझिन्छ?

२, उदाहरणसहित पर्यायवाची शब्दको परिभाषा लेख।

३, विपरीतार्थक शब्दहरूबारे शिशुहरूलाई कसरी ज्ञान दिन सकिन्छ?

४, विभिन्न अर्थ हुने एउटै शब्दबारे शिशुहरूलाई कसरी जनाउन सकिन्छ?

५, सार शब्दहरूको प्रयोगले विद्यार्थीहरूलाई के फाइदा हुनेछ?

९. २. वाक्य गठन पद्धति

९. २. १. भूमिका
९. २. २. वाक्यका खण्ड – उद्देश्य र विधेय।
९. २. ३. वाक्य भेद – सरल, मिश्र र संयुक्त।
९. २. ४. सार संक्षेप
९. २. ५. प्रगति जाँच

९. २. १. भूमिका

वाक्य – शब्दहरूको समूह जसबाट अर्थ स्पष्ट हुन्छ, त्यसलाई वाक्य भनिन्छ, जस्तै– सीता स्कूल जान्छे। राम बजार जाँदैन। यी शब्द समूहबाट अर्थ स्पष्ट हुन्छ। यसैले यी वाक्य हुन्।

९. २. २. वाक्यका खण्ड – उद्देश्य र विधेय।

प्रत्येक वाक्यका दुइ खण्ड हुन्छन्, १) उद्देश्य र २) विधेय।

१) उद्देश्य – वाक्यको त्यो भागलाई उद्देश्य भनिन्छ जसको विषयमा केही भनिन्छ, जस्तै– कपिल खेल्दैछ। यहाँ कपिलको विषयमा 'खेल्दैछ' भनिएको छ। यसैले 'खेल्दैछ' विधेय भयो।

२) विधेय – वाक्यको त्यो भाग विधेय हो जसले उद्देश्यको विषयमा केही भन्छ, जस्तै– कपिल खेल्दैछ। यहाँ कपिलको विषयमा 'खेल्दैछ' भनिएको छ। यसैले 'खेल्दैछ' विधेय भयो।

९. २. ३. वाक्य भेद – सरल, मिश्र र संयुक्त

रचना अनुसार वाक्य तीन प्रकारका हुन्छन्, १) सरल वाक्य २) मिश्र वाक्य र ३) संयुक्त वाक्य।

१) सरल वाक्य – सरल वाक्य त्यसलाई भनिन्छ जसमा एउटा मात्र विधेय हुन्छ, जस्तै– राम जान्छ। केटाहरू पढ़दैछन्। कवि कविता लेख्छन्। यी वाक्यहरूमा राम, केटाहरू, कवि उद्देश्य हुन् अनि जान्छ, पढ़दैछन्, कविता लेख्छन् क्रमशः एउटा विधेय भएको हुनाले यी सरल वाक्यहरू हुन्।

२) मिश्र वाक्य – मिश्र वाक्यमा एउटा सरल वाक्यबाहेक एक वा अनेक आश्रित उपवाक्य हुन्छन् अर्थात मिश्र वाक्यमा एउटा प्रदान वाक्य र अरू उधीन वाकय हुन्छन्, जस्तै – रामले 'म आज पढ़दिन' भन्यो। अधीन वाकय हो। उ जहाँ जान्छ, तिमी त्यहीँ जानू। यहाँ 'तिमी त्यहीँ जानू' प्रधान हो र 'उ जहाँ जान्छ' अधीन वाक्य हो। पहिलो उपवाक्यको अर्थ पूरा छ, तर दोस्रो अधीन वाक्यको अर्थ पूरा छैन।

३) संयुक्त वाक्य – संयुक्त वाक्यमा दुइ वा अधिक प्रधान उपवाक्य हुन्छन्, जस्तै– राम बजार गयो तर श्याम सुत्यो। संयुक्त वाक्यमा उपवाक्यहरू 'र, औ, तर' आदि संयोजक अव्ययले जोड़िन्छन्, जस्तै– उनी कवि भए अनि कविता लेखे। म वहाँ गएँ तर उ यहाँ आयो। घाम पनि लाग्यो, पानी पनि पर्‍यो। त्यसको बोली कड़ा छ तर मनमा दया छ। यी सबै संयुक्त वाक्य हुन्।

९. २. ४ सार संक्षेप

यस एकाईमा वाक्य गठन प्रक्रियामा प्रयुक्त वाक्यका खण्ड अनि वाकय भेद तथा रचना अनुसार वाक्यका प्रकारहरू बारेमा संक्षिप्त रूपमा विवेचना गरिएको छ।

९. २. ५. प्रगति जाँच

१, वाक्यमा कति खण्ड हुन्छन्? के के?

२, रचना अनुसार वाक्य कति प्रकारका हुन्छन्? स्पष्ट पार।

९. ३. चिन्ह प्रयोग

९. ३. १. भूमिका
९. ३. २. अल्प विराम (,)
९. ३. ३. अर्द्ध विराम (;)
९. ३. ४. पूर्ण विराम (।)
९. ३. ५. प्रश्न–चिन्ह (?)
९. ३. ६. विस्मयादिवोधक – चिन्ह (!)
९. ३. ७. कोष्टक – चिन्ह ( )
९. ३. ८. अवतरण चिन्ह (" ")
९. ३. ९. निर्देशक – चिन्ह (–)
९. ३. १०. योजक – चिन्ह (-)
९. ३. ११. लाधव – चिन्ह (०)
९. ३. १२. विलो – चिन्ह (')
९. ३. १३. सार संक्षेप
९. ३. १४. प्रगति जाँच

९. ३. १. भूमिका

वाक्य, वाक्यांश वा शब्द आदिको पछाड़ि रोकिने स्थानलाई विराम भनिन्छ। विरामको निम्ति प्रयोग गरिने चिन्हलाई 'विराम चिन्ह' भनिन्छ। विराम चिन्हको उचित प्रयोग नभए अर्थको अनर्थ पनि हुनसक्छ।

भाषामा प्रचलित विराम चिन्हहरू विषयमा यहाँ सामान्य चर्चा गरिन्छ।

९. ३. २. अल्प विराम (,)

अल्प विराम चिन्ह (,) शब्द वा वाक्यांशलाई छुट्ट्याउँदा प्रयोग गरिन्छ, जस्तै– राम, श्याम, गोपाल र सीता घर गए। इन्द्रेणीमा वैगुणी, नीर, नीलो, हरियो, पहँलो, सुन्तले र रातो रंग हुन्छ।

९. ३. ३. अर्द्ध विराम (;)

अर्द्ध विराम चिन्ह (;) सम्वन्घ नरहेको वाक्यहरू बीच बीचमा प्रयोग गरिन्छ, जस्तै – मैदानी देश चिच्चाहट लाग्दो हुन्छ; आँखालाई शीतलता प्राप्त हुँदैन; जता हे यो उस्तै उस्तो। लेखिएको भए मेटिदेऊ; खोपिण्को भए खुर्किदेऊ; टाँसिएको भए उप्काईदेऊ।

९. ३. ४. पूर्ण विराम (।)

वाक्य पूरा भएपछि पूर्ण विराम चिन्ह (।) लगाउनुपर्छ। प्रत्येक वाक्यको अन्तमा यो चिन्ह प्रयोग गरिन्छ, जस्तै – हरिमाया घर गइन। पानी पर्‍यो। आकाश नीलो छ।

९. ३. ५. प्रश्न चिन्ह (?)

कुनै वाक्यले प्रश्न सोधेको छ भने त्यसको अन्तमा प्रश्न चिन्ह लगाउनुपर्छ, जस्तै – तिमी कहाँ जाँदैछौ? सुनीलसँग कतिपटा पुस्तकहरू छन्? गाड़ी कति बजे आइपुग्छ?

९. ३. ६. विस्मयादिबोधक चिन्ह (!)

हर्ष–अमर्ष, घृणा, आश्चर्य, भय आदि प्रकट गरिँदा उपयोग गरिन्छ। यस्तो चिन्हलाई उद्‌गार चिन्ह पनि भनिन्छ। जस्तै – अहा! कति राम्रो शहर। अहो! आजको साँझ कति रमाइलो छ। कठै विचरा! यस्तो साह्रो लड़ेछ।

९. ३. ७. कोष्टक चिन्ह '( )'

वाक्यमा आएको शब्द वा पदको अर्थ स्पष्ट गर्नलाई, मूल वाक्यसित सम्वन्ध नभएको वाक्य वा शब्दलाई अलग गर्नलाई कोष्टक चिन्ह '()' को प्रयोग गरिन्छ, जस्तै– प्रत्येक धिमाल गाउँमा एक जना माझिया (मुखिया) हुन्छन्। तिमीले उसलाई (उसको सामुन्ने) भनेको होइन?

९. ३. ८. अवतरण चिन्ह ("...")

कुनै कथनलाई वा कसैले बोलेको अंशलाई अलग छुट्ट्याउनु पर्दा अवतरण चिन्ह ("...") प्रयोग गर्नुपर्छ, जस्तै– देवकोटाले भनेका छन् "हामी भानुभक्त पढ़ेर शिक्षा शुरू गर्दछौं र उनलाई हेला गरेर समाप्त गर्ने गर्दछौं।" उनले भने, "कविताको भाव राम्रो हुनुपर्दछ।"

९. ३. ९. निर्देशक चिन्ह (–)

कुनै उद्धरण अघाड़ि वा समान आधारका शब्द, वाक्यांश अनि वाक्यको बीचमा निर्देशक चिन्ह (–) लगाइन्छ, जस्तै– बालकृष्ण सम भन्दछन्– "ज्ञान मर्दछ हाँसेर, रोई विज्ञान मर्दछ।" सबैलाई मैले भनें– "तिमीहरू एकैक्षण उभिबस।"

९. ३. १०. योजक चिन्ह (-)

दुइ वा अधिक तथा एकैजस्ता शब्दहरूलाई जोड़नु पर्दा योजक चिन्ह (-) प्रयेग गरिन्छ, जस्तै– सुख–दुःख, आमा–बाबु, घरि–घरि, माथि–माथि, वरि–परि, तल–माथि आदि।

९. ३. ११. लाघव चिन्ह (०)

शब्दलाई छोटकरीमा लेख्नु पेर लाघव चिन्ह (०) प्रयोग गरिन्छ, जस्तै– स्वर्गीय = स्व०। पण्डित = पं०। प्रोफेसर = प्रो०।

९. ३. १२. विलोप चिन्ह (')

शब्दमा कुनै अक्षर लुकेको भए विलोप चिन्ह प्रयोग गरिन्छ, जस्तै – रहेछ = र'छ।

९. ३. १३. सार संक्षेप

यस एकाईंमा हाम्रो मातृभाषा पठन–पाठन तथा लेखनमा प्रयोग हुने विभिन्न प्रकारको विराम चिन्हहरू बारे उदाहरणसहित संक्षिप्त विवेचना गरिएको छ।

९. ३. १४. प्रगति जाँच

मातृभाषा पठन पाठन तथा लेखनमा प्रयोग हुने विभिन्न प्रकारका विराम चिन्हहरूको विषयमा चर्चा परिचर्चा गर।

९. ४. उखान, तुक्का र वाक्यांश (वाग्धारा) को महत्त्व अनि प्रयोग विधि

९. ४. १. भूमिका – उखान तुक्का र वाग्धाराको परिभाषा र महत्त्व
९. ४. २. उखान, तुक्का र वाग्धारा प्रयोग विधि
९. ४. ३. सार संक्षेप
९. ४. ४. प्रगति जाँच

९. ४. १. भूमिका – उखान, तुक्का र वाग्धाराको परिभाषा र महत्त्व

छोटकरीमा शिक्षा दिनलाई व्यवहारमा चलिरहेको ससानो वाक्य वा वाक्यांशलाई उखान भनिन्छ। उखान संस्कृतिको स्मरण, अनुभवको सार अनि व्यंग्यको एउटा अंग हो। अनुभूतिले परिपूर्ण कथनहरू यसको माध्यमद्वारा अलंकृत भाषामा बोलिने गरिन्छ। स्वतंत्र रूपमा अर्थ स्पष्ट गराउन सक्ने यो स्वयं एउटा पूर्ण वाक्य हो, जस्तै– अकबरी सुनलाई कसी लाउनु पर्दैन (राम्रो वस्तुलाई जाँचिरहनु पर्दैन।।

तुक्का पनि उखान समानै हो। यसमा पनि परम्परागत संस्कृतिको सम्झना वा अनुभवको सार रहेकै हुन्छ अनि यो व्यंग्यको एउटा अंग पनि हो तैपनि यति स्मरण राख्नुपर्छ, तुक्कामा विशेष अर्थ दिने कविताको एउटा अंग पनि हो। तैपनि यति स्मरण राख्नुपर्छ, तुक्कामा विशेष अर्थ दिने कविताको एउटा अंश अथवा वाक्य रहन्छ र त्यसका पहिला र दोस्रा भागका अन्त्यमा अनुप्रास मिलाइएका हुन्छन्, जस्तै– अंगारभन्दा काली दश ठाउँमा टाली, अनुहार न सनुहार पोइ खोज्न थाली (आफूबाट हुन नसक्ने काम गर्न खोज्नु)।

साधारण अर्थ लोप भई विशेष अर्थ बुझाउने शब्दहरूको समूहलाई वाक्यांश वा बाग्धारा भनिन्छ। वाग्धाराको प्रयोग स्वतंत्र रूपमा हुन सक्तैन, बोलिएको तथा लेखिएको कुनै वाक्यलाई पूरा गर्नु साथै अर्थपूर्ण बनाउनको निम्ति यिनीहरूसंग अरू शब्दहरू थप्नुपर्छ। वाग्धारा साधारणतः दुइ प्रकारको हुने गर्दछ– १) अंगात्मक अनि २) क्रियात्मक।

अंगात्मक वाग्धारा –	**क्रियात्मक वाग्धारा –**
हात – हातको मैला – तुच्छ वस्तु।	काटनु – गला काट्नु – हक मार्नु
हात मार्नु – जित्नु, अगुवा हुनु।	अड़कल काटनु–अन्दाज गर्नु

उखान, तुक्का र वाग्धारा भाषाका ओज अनि ज्यान हुन्। यिनीहरू लक्षण वा सूत्रका रूपमा व्यक्त हुने गर्दछन् अनि निरीक्षण, प्रयोग र अनुभवबाट प्राप्त ज्ञानहरू यिनीहरूका पृष्ठभूमि (आधार) मा रहन्छन्। यसैले यिनीहरूको प्रयोगद्वारा भाषा मार्मिक, सरल र सजीव हुने गर्दछ मात्र होइन, प्रवाहपूर्ण पनि हुने गर्दछ। यसर्थ यिनीहरूको प्रयोग अति महत्त्वपूर्ण ठहरिन्छ।

९. ४. २. उखान, तुक्का र वाग्धाराका प्रयोग विधि :

उखान, तुक्का, अनि वाग्धाराको आवश्यकता वाक्यको सुन्दरता बढ़ाउनको लागि पर्ने हुनाले यिनीहरूलाई वाक्यमा प्रयोग गर्दा सतर्क रहनुपर्दछ। यसका लागि निम्नलिखित बुँदामा ध्यान दिनुपर्दछ :

१) बनाइने वाक्य जति सक्दो छोटो हुनुपर्छ। यसले गर्दा व्याकरणका दृष्टिले भूल हुने सम्भावना कम हुन जान्छ। वाक्य जति लामो हुन्छ, त्यति बढ़ता भूल हुने डर रहन्छ।

२) जति सक्दो एउटा मात्र वाक्यको प्रयोग हुनु उत्तम हो।

३) बनाइएका वाक्य व्याकरणको नियम अनुसार शुद्ध हुनुपर्छ।

४) उद्धरणमा परेका शब्दको सट्टामा अर्को नयाँ शब्दको प्रयोग हुनु हुँदैन।

५) उद्धरणको अर्थलाई होइन, उद्धरणलाई नै वाक्यमा प्रयोग गर्नुपर्छ।

यस्ता वाक्य रचनाका केही उदाहरण यहाँ दिइएको छ :

(क) उखान :

१) बाहुनले च्याउ खावोस् न स्वाद पावोस् (कुनै चीजको मोल थाह नपाउनु) – आफ्ना बाबु–बराज्युले विर्के टोपी लगाएको भएपो थाहा पाउँथी, बाबु खाड़ीको टोपी लाएर भाङराको गादो पारेर हिड्छ छोरी किन गतिली हुन्थी, बाहुनले च्याउ खाओस् न चाल पाओस्। (परालको आगो)

२) आफु नाँच्न जान्दैन मुखियाको आँगन टेड़ो (आफू काम गर्न नजान्ने अर्कालाई दोष लगाउने) – छोरो यसपाला पनि फेल भयो, गाली गरें, भन्छ – "किताब थिएन, स्कूल भएन, सर राम्रो थिएन, बजिया, आफु नाँच्न जान्दैन, मुखियाको आँगन टेड़ो।"

३) बाँदरको पुच्छर लौरो न हतियार – (केही काममा नआउनु) – चाहिएको सय रूपिया, तिमी दिन्छौ पाँच रूपिया, यो बाँदरको पुच्छर लौरो न हतियार, के गर्नु?

४) आलु खाएर पेड़ाको धाक (व्यर्थको रवाफ देखाउनु) – घरमा भने गुन्द्रकको झोल पनि पुग्दैन, टाइ–सुट लाएर क्लबतिर धाउँछ, आलु खाएर पेड़ाको धाक लाउनु भनेको यही हो।

५) सबै कुरा चल कीर्ति अचल (सत्कर्म मात्र सँधैभरि रहन्छ, अरू नष्ट भएर जान्छ) – सबैकुरा चल कीर्ति अचल हुन्छ भनेर नै मुखियाले त्यो स्कूल निर्माणकोलागि एक ऐकर जमीन दान दिएको हो।

ख) तुक्का :

१) अघि आउने ढाक्रेको रोजी बिसाउनी,
पछि आउने ढाक्रेको खोजी बिसाउनी।
(समयमा काम नगर्ने मानिसले दुःख पाउँछ)

सित्तै कम्बल बाड़िने दिन रघुबीर डेढ़ घण्टा ढिलो पुगेर राम्रो छान्न थाल्यो, बाड़ने मान्छेले दिक्क मानेर प्याच्च भन्यो, "अघि आउने ढाक्रेको रोजी बिसाउनी, पछि आउने ढाक्रेको खोजी बिसाउनी।"

२) नदीमा मेल, बालाखामा खेल।
साधुमा मेल, दुर्जनमा झेल।।
(स्वभाव अनुसारको काम हुनु)

मातेकै मातेको मानिसहरू मिलेर तास खेल्नलागेका रहेछन्, अहिले खेलको बीचमा उनीहरूमा झगड़ा भयो त कुनै अचम्मको कुरो होइन, भनिएकै पनि त छ नि, 'नदीमा मेल, बालाखामा खेल, साधुमा मेल, दुर्जनमा झेल।'

३) कसैलाई भने मरी–मरी,
कसैलाई भने परी–परी।
(कोही परिश्रम गर्ने र कोही आरामसित बसिरहने।

घरमा बिहेको कामले सास बिसाउने फुर्सद छैन, सानो भाइ भने साथीहरूसित बसेर गफ गरिहेछ, के हो यस्तो– "कसैलाई भने मरी–मरी, कसैलाई भने परी–परी।"

४) आमा बाबुको मन छोराछोरीमाथि,
छोरा–छोरीको मन ढुंगा–मूढ़ा माथि।
(आफ्ना छोराछोरी आफूले चाहे झैं हुँदैनन्।)

विकासलाई उसको बाबुले ठूलै डाक्टर बनाउँछु भनेर पढ्न पठाएको भन्छ, उ भने बदमासहरूको संगतमा लागेर तास खेल्न र सिनेमा हेर्नुमा समय बिताउँछ– 'आमा–बाबुको मन छोरा–छोरीमाथि, छोरा–छोरीको मन ढुंगा–मूढ़ामाथि' भनेको यही हो।

५) इलमीको भागमा माछा–मासु,
अल्छीको आँखामा आँसु।
(अल्छीले कहिले सुख पाउँदैन)

'इलमीको भागमा माछा–मासु, अल्छीको आँखामा आँसु' भने जस्तो उसमा परिश्रम गर्ने जाँगर कहिले आएन अनि अब उसले दुःख नपाएर कसले पाउँछ?

ग) वाग्धारा :

अंगात्मक –

१) मुख देखाउनु (देखा पर्नु) – तिमीहरू आजकल किन मुख देखाउनु पनि छोड़िसक्यौ त?

२) आँखा छल्नु – (झुक्याउनु) – मेरो आँखा छनेर कहाँ गइस्?

३) हात जोड्नु (निवेदन गर्नु) – म हात जोड्छु, यति काम चाँहि गरिदेऊ न।

क्रियात्मक–

१) सुइँकुच्चा ठोक्नु – (भाग्नु) – पुलिस देख्नसाथ चोरहरूले सुइँकुच्चा ठोकिहाले।

२) भाँजो हाल्नु – (वाधा दिनु) – आफू पनि गर्दैन, अरूले गरेको काममा पनि बीरेले भाँजो हालिरहन्छ।

३) पेट पाल्नु– (जीविका चलाउनु)– बारी–खेती गरेरै भए पनि धने र उसकी स्वास्नीले पेट पालिरहेकोछ।

४) वचन राख्नु (भनेको मान्नु) – मेरो वचन राखिदिनु मात्र श्याम त्यो सभामा उपस्थित भयो।

९. ४. ३. सार संक्षेप

यस एकाईमा उखान, तुक्का र वाग्धारा (वाक्यांश) को परिभाषा, महत्त्व र प्रयोग विधि बारे संक्षिप्त रूपमा आलोचना गरियो।

९. ४. ४. प्रगति जाँच

१, उखान, तुक्का र वाग्धारा भन्नाले के बुझिन्छ?

२, यिनीहरूको महत्वबारे प्रकाश पार।

३, यिनीहरूको प्रयोग विधिहरू उदाहरणसहित प्रस्तुत गर।

१०. शिक्षण पद्धति

१०. १. व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता अनि पाठ्य पुस्तक आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा र असुविधाहरू।

१०.१.१. भूमिका

१०.१.२. व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता

१०.१.३. पाठ्यपुस्तक आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा र असुविधाहरू

१०.१.४. सार संक्षेप

१०.१.५. प्रगति जाँच

१०. १. १. भूमिका

व्याकरणलाई भाषाको संरक्षक मानिन्छ किनभने यसले भाषालाई विकृत हुनदेखि जोगाइराख्ने गर्दछ। यसर्थ शिशुहरूलाई प्राथमिक स्तरदेखि नै व्याकरणसम्मत भाषा शिक्षण गर्नु आवश्यक छ।

१०. १. २. व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता

भाषाको शुद्ध र परिष्कृत रूप जान्नलाई व्याकरणको ज्ञान हुनु नितान्त जरूरी छ। व्याकरणको औपचारिक शिक्षाको अभावमा भाषालाई शुद्ध रूपमा बोल्नु र लेख्नु सम्भव नभएको हुनाले यसका प्रयोक्ता र वक्ताहरूले परिष्कृत, सुसंस्कृत तथा स्तरीय शिक्षादान गर्नलाई शिक्षक–शिक्षिकाले शिशुहरूलाई प्राथमिक स्तरदेखि नै यथोचित ढंगमा व्याकरण शिक्षण गराउनु अति आवश्यक छ।

१०. १. ३. पाठ्य–पुस्तक आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा/असुविधा

सुविधाहरू –

१, विद्‌यार्थीवर्गलाई व्याकरणको निम्ति अलग्गै पाठ्य–पुस्तकको बोझ रहनेछैन।

२, समय तालिका तयार पार्दा व्याकरण पठन–पाठनको निम्ति अलग्गै श्रेणी घण्टा (पिरियड) को व्यवस्था गरिरहनु पर्दैन।

३, छात्र–छात्राहरूले पाठ्य–पुस्तकमा आधारित विषय–वस्तु वा पाठबाट सजिलैसित वर्ण, मात्रा, शब्द तथा वाक्य गठन विषयमा ज्ञानलाभ गर्न सक्नेछन्।

४, पाठ्य–पुस्तकीय विषय वस्तुकै आधारमा व्याकरणिक नियमादि छात्र–छात्रालाई सिकाउनु अनुभव प्राप्त शिक्षक–शिक्षिकालाई सुविधा हुनेछ।

५, यस्ता नियमादिलाई पालन गरी स्वतन्त्र रूपमा व्याकरणिक पद्धतिमा शुद्ध, परिष्कृत र स्तरीय मातृभाषाको ज्ञानलाभ गर्न विद्‌यार्थीवर्गलाई पनि सजिलो हुनेछ।

असुविधाहरू –

१, व्याकरणको अलग्गै पुस्तकको व्यवस्था नभएको हुनाले अनुभवहीन शिक्षक–शिक्षिकाले छात्र–छात्राहरूलाई व्याकरण सम्बन्धित उचित शिक्षा प्रदान गर्न सक्तैनन्।

२, समय तालिकामा व्याकरण शिक्षणको निम्ति बेग्लै व्यवस्था नगरिएको हुनाले मातृभाषा पठन–पाठनको समयमा असुविधा हुनेछ।

३, पाठ्य–पुस्तकीय विषयवस्तु वा पाठबाटै व्याकरण सिकाइने व्यवस्था गरिँदा छात्रछात्राहरू असमञ्जसमा पर्न जानेछन्।

४, पाठ्य विषय वस्तुहरूमा व्याकरणिक सूत्रहरू उल्लेखित गरिएका हुँदैनन्, यसो हुँदा शिक्षक–शिक्षिकाले त्यसलाई तयार पारेर छात्र–छात्राहरूलाई बेग्लै खातामा लेख्नु लगाउनुपर्छ। यसो गर्दा धेरै समय त्यसै नष्ट भएर जानेछ।

५, व्याकरणिक नियमादिलाई पालन गरी स्वतन्त्र रूपमा भाषा ज्ञानलाभ गर्ने क्रममा विद्यार्थीवर्गले धेरै भूलहरू गर्नेछन् जसको यथोचित संशोधन गरिरहने पर्याप्त समय शिक्षक–शिक्षिकासँग हुँदैन।

१०. १. ४. सार संक्षेप

यस एकाईमा व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता अनि पाठ्य पुस्तकमा आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा र असुविधाहरू बारे संक्षेपमा चर्चा गरियो।

१०. १. ५. प्रगति जाँच

१. व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता उल्लेख गर।

२. पाठ्य पुस्तकमा आधारित व्याकरण शिक्षणको सुविधा र असुविधाहरू के के हुन्?

१०. २. १. भाव विस्तार वा विस्तृतिकरण

दिइएको गद्यांश वा पद्यांशलाई प्रष्टसँग बुझिने गरी अर्थ खोल्नुलाई 'भाव विस्तार' वा 'विस्तृतिकरण' भनिन्छ।

भाव विस्तार गर्दा ध्यानदिनु पर्ने कुराहरू :

क) आवश्यक भए गद्यांश वा पद्यांश परेका शब्दहरूको अर्थ लेखिदिनुपर्छ।

ख) अर्थ स्पष्ट पार्दै जाँदा उदाहरण पनि दिनसके असल हुनेछ।

ग) पहिले भनिसकिएका कुराहरूलाई दोहोऱ्याउनु हुँदैन।

वास्तवमा कुनै उद्धृत गद्यांश वा पद्यांशको व्याख्या गरेझैं गरे भाव विस्तार हुन जान्छ। यसको निम्ति कुनै निश्चित नियम हुँदैन। उदाहरणार्थ यहाँ यस उक्तिको भाव विस्तार गरिएको छः

"एक थुकी सुकी हजार थुकी नदी।"

एक जनाले मात्र एक ठाउँमा थुके केही क्षणपछि त्यो सुकेर जान्छ तर त्यहीँ हजारौं मानिसले थुके थुकको एउटा नदी नै बग्न थाल्छ। यसको अर्थ के हो भने कुनै पनि काम एक्लैले गरे त्यसमा सफलता पाउनु गाह्रो हुन्छ तर धेरै जना मिलेर गरे त्यसमा सजिलो सफलता पाउन सकिन्छ, दुःख पनि धेरै हुँदैन। भन्नु नै हो भने एकतामा ठूलो शक्ति हुन्छ। एकता नभई कुनै ठूलो काम हुन सक्तैन। टाड़ाको कुरा किन गर्नु? भारतवर्षको स्वाधीनताको कुरा गरौं। अंग्रेजहरूको शासन कालमा भारतीयहरू उनीहरूका दास जतिकै थिए। अंग्रेजी हातबाट भारतको शासन भारतीयहरूका हातमा ल्याउनको निम्ति महात्मा गान्धी अघि सरे– त्यो पनि हिंसा नगरी। हतियारले परिपूर्ण अंग्रेजी शासनको विरूद्ध हतियार नलिई भारतलाई स्वाधीन बनाउने महात्मा गान्धीको उद्देश्य थियो। अहिँसाद्वारा नै भारत स्वाधीन पनि भयो। किन? किनभने महात्मा गान्धीको पछाड़ि करोड़ौं भारतीयहरू एकताको सूत्रमा बाँधिएका थिए अनि त हतियार लिएर लड़ाई नगरी अंग्रेजहरूले भारतका मानिसहरूलाई भारतवर्षको शासनको बागडोर जिम्मा लगाइदिए। यसरी एकतामा ठूलो बल भएको हामी पाउँछौं। यस्ता उदाहरणहरू हामी जति भनेपनि पाउँछौं। यसैले पनि हो, संस्कृतमा एउटा भनाई छ – संघे शक्ति कली युगे – कलियुगमा संघ (एकता) मा बल हुन्छ र हाम्रो भाषामा पनि उखान छ – एक थुकी सुकी हजार थुकी नदी।

१०. २. २. सारांश रचना वा भाव संक्षेप

कुनै अवतरणलाई संक्षेपमा लेख्नुलाई 'भाव संक्षेप' वा 'सारांश' वा 'लघुकरण' भनिन्छ।

सारांश रचनामा ध्यान दिनु पर्ने कुराहरू :

१) मूल रचनाको भावार्थ राम्ररी बुझ्नलाई घरिघरि दोहोऱ्याएर पढ्नुपर्छ।

२) मूल रचनाको मुख्य विषय बुझाउने एउटा 'मुख्य वाक्य' हुन्छ, त्यसलाई खोजेर निकाल्नुपर्छ। मूल रचनाका अन्य वाक्यहरूले त्यही वाक्यमा भनिएका कुरालाई समर्थन गरिरहेको हुनेछ।

३) उदाहरण, तुलना आदिलाई त्यागिदिनु पर्छ।

४) सारांश रचनाको भाषा सरल हुनुपर्छ।

५) मूल रचनाको १/३ भाग लामो भए हुन्छ तर आधाभन्दा लामो हुनु हुँदैन।

६) सारांश रचनामा अलंकार युक्त भाषाको प्रयोग गर्नु हुँदैन।

सारांश रचनाको उदाहरण यहाँ प्रस्तुत छः

कागको गन्ती

एकदिन अकबर राजाले आफ्ना मन्त्री बीरबललाई सोधे– "यो दिल्ली शहरमा कतिवटा कागहरू छन्? प्रश्न बड़ो अनौठो किसिमको थियो। तर त्यस्ता प्रश्नका उत्तरहरू बीरबलकहाँ जहिले पनि तयारी रहन्थे। उत्तर दिनलाई उनले धेरैबेर नलगाई भने, "अहिले हालमा, महाराज! यो शहरमा जम्मा निनानब्बे हजार, नौ सय निनानब्बे वटा कागहरू छन्।"

राजाले सोधे, "तपाईंले कसरी थाह पाउनु भयो?"

बीरबलले भने, "मेरो कुरामा हजुरलाई शंका लागे एक जनालाई कागको गन्ती गर्न लगाउनुहोस्।"

"त्यसमा घटी बढ़ी भयो भने?" राजले सोधे

"महाराज! त्यसमा केही कमी भयो भने हजुरले सम्झनु पर्छ, तिनीहरूमध्ये केही आफ्ना साथी र आफन्तहरूलाई भेट्नु अन्यत्र गएका छन्। बढ़ता भयो भने महाराजले सम्झनु पर्छ, तिनीहरूका केही साथीहरू र आफन्तहरू भेटघाटका लागि यहाँ आएका छन्।"

बीरबलको चलाकीले भरिएको उत्तर सुनेर अकबर साह्रै खुशी भए।

सारांश रचना

एकदिन अकबरले बीरबललाई "दिल्ली शहरमा कतिवटा काग छन्?" भनी सोधे। बीरबलले "निनानब्बे हजार नोसय निनानब्बे वटा काग छन्" भनेर उत्तर दिए। गन्तीमा अकबरले शंका गर्दा काग कम्ती भए आफन्त र साथी भेट्न गएका अनि बढ़ी भए आफन्त र साथी भेट्न आएका छन् भनी सम्झने सल्लाह दिए। यस्तो उत्तर सुनेर अकबर खूबै खुशी भए।

१०. २. ३. अनुच्छेद वा परिच्छेद रचना

गद्यांश लेखिएका कुरा भिन्न भिन्न भागमा बाँड़िएका हुन्छन्। कथा, उपन्यास, निबन्ध, चिट्ठी–पत्र आदि सबै आदि सबै यसरी नै भाग–भागमा छुट्ट्याइएका हुन्छन्। यसरी भाग गरिँदा पढ्न र व्यक्त गरिएका कुराहरू बुझ्न सजिलो पर्न जान्छ। यस्ता प्रत्येक भागलाई अनुच्छेद वा परिच्छेद भनिन्छ।

भावना र विचारको परिवर्त्तन अनुसार अनुच्छेद छुट्ट्याइने चलन छ। एउटा अनुच्छेदमा एउटा मात्र वाक्य पनि हुन सक्तछ र धेरै वटा पनि। यसैले प्रत्येक परिच्छेद यति लामो, यतिवटा वाक्य वा यति शब्द भएको हुनपर्छ भन्ने कुनै नियम छैन तथापि अनुच्छेद छुट्ट्याएर लेख्दा निम्नलिखित कुराहरू विशेष रूपले ध्यानमा राख्नुपर्दछः

१) एउटा अनुच्छेदमा एउटै मात्र विचार वा विषय हुनुपर्छ।

२) विषयलाई तार्किक रूपमा राखिनुपर्छ। पहिला भन्नुपर्ने कुरा पछि र पछि भन्नुपर्ने कुरा अघि भनिएको हुनुहुँदैन।

३) पहिलो वाक्यले नै विषय वस्तुका विषयमा भनिएको कुरालाई स्पष्ट गरिएको हुनुपर्छ। यस्तो वाक्यलाई 'मुख्य वाक्य' भन्ने चलन छ। त्यसपछिका वाक्यले त्यसैलाई स्पष्ट गर्न व्याख्या गर्दै लगेको हुनुपर्छ।

४) कहिले–काँही 'मुख्य वाक्य' लाई परिच्छेदको अन्त्यतिर पनि राख्न सकिन्छ र राखिन्छ पनि। कतै–कतै यसलाई बीचतिर पनि पार्न सकिन्छ।

उदाहरणार्थ यहाँ एउटा अनुच्छेद रचना प्रस्तुत छ :

म सोचिरहेको थिएँ, हाम्रो अस्तित्वबारे– यिनै हुन हाम्रा असली नेपाली जातित्वको रूप। दुइ खुट्टा भएको मशीन। कानले सुन्दछ हुकूम र कमान; मुखले भन्छ, जो हुकूम सरकार! टाउकोभित्रको गिदीले बुझ्छ, हुकूमको जवाब छैन, कालको ओखती छैन, अनि ओइरो लाग्छ, पेटको आगोले छट्पटिएर कोही गल्लावालको पछि, कोही आसाम, कोही वर्मा कोही कोइला खानीतिर कोही चियाबारीतिर; उहीँ बिलाउन, उहीँ सेलाउन! भाग्य असल हुनेहरू फर्कन्छन् – मादले पेट, सिन्के नाड़ी, हलेदे मुख लिएर। एक–दुइ महीना आफ्ना जन्म थाँतका मूलको चियो पानी पिएरै मर्नलाई।

१०. २. ४. पत्र रचना

पत्र लेख्नु सबैभन्दा उत्कृष्ट कला हो। चिट्ठी पत्र लेख्ने प्रथा सम्भवतः मानिसले लेख्न पढ्न शुरू गरेकै समयदेखि आरम्भ भएको हुनुपर्छ। टाड़ामा रहेका वन्धु वान्धव तथा आत्मीयजनसँग सम्बन्ध स्थापित गर्न परे हामी परस्परमा पत्र व्यवहार गर्ने गर्छौं। यसैले चिट्ठी–पत्र हाम्रो प्रतिनिधि हो। पत्रलाई व्यवसाय वाणिज्यको प्राण, मित्रताको सुख, आशा गरी बस्नेको आनन्द अनि प्रेमको चिराक मानिएको छ। पत्रद्वारा नै देश विदेशका मानिसहरूसित व्यापारिक सम्बन्ध जोड़िन्छ।

तर अचेल मोबाइल फोन र इन्टरनेटको जमानामा डाक सेवाद्वारा चिट्ठी–पत्रको व्यवहारमा धेरै कमी आएको देखिएता पनि इ–मेल, फ्याक्स आदिको प्रयोगद्वारा पत्र व्यवहारको क्रम यथावत नै रहेको थाह पाइन्छ।

पत्र लेखनका कतिपय विशेष नियमहरू छन् जो विद्यार्थीवर्गले जान्नु आवश्यक छ।

पत्रको प्रकार : सामान्यतया पत्र चार प्रकारका हुन्छन्

(१) व्यक्तिगत पत्र, (२) व्यवसाय वाणिज्य सम्बन्धी पत्र, (३) सरकारी कामकाज विषयका पत्र र (४) प्रार्थना अभिवादन अनि निमन्त्रणा पत्र।

यी चार थरिका पत्रहरूको रूपमा केही भिन्नता निश्चय नै रहन्छ, यसर्थ प्रयोगमा विशेष दुइ थरिमा नै उक्त चार रूपलाई विभाजन गर्न सकिन्छ – (क) व्यक्तिगत पत्र अनि (ख) व्यवसायिक/कार्यलय सम्बन्धीत पत्र।

पत्रको भाग : प्रत्येक पत्रमा पाँच भाग हुने गर्दछ :

१) **पत्रलेखकको ठेगाना र पत्र लेखिएको दिनांक :** पत्रको दाहिनेपट्टि सबभन्दा माथिल्लो कुनामा पत्रलेखकको ठेगाना र पत्र लेखेको दिनांक लेख्नुपर्छ।

२) **सम्बोधन :** पत्रलेखन आरम्भ गर्न अघि कागजको देब्रेपट्टि जसलाई पत्र लेखिन्छ उसलाई आदरसूचक वा स्नेहसूचक शब्दमा सम्बोधन गरिन्छ। सम्बोधन शब्दको मुन्तिरको पंक्तिमा जसलाई पत्र लेखिन्छ उसलाई सम्बन्ध अनुसार अभिवादन लेखिन्छ (यो व्यक्तिगत पत्रमा मात्र लेख्नु आवश्यक छ।)

३) **पत्रको विषय–वस्तु :** यस भागमा पत्र लेख्नुको उद्देश्य वा मूल कुरा ससाना अनुच्छेदमा लेखिन्छ।

४) **समाप्ति :** पत्र लेखिसकेर सम्बन्ध अनुसार भवदीय, शुभचिन्तक, आज्ञाकारी, आदि उचित शब्दलेखेर त्यसको मुन्तिर हस्ताक्षर गर्नुपर्छ।

५) **खाममा लेखिने ठेगाना :** लिफाफालाई अनुमानित चार भाग पारेर दाहिनेपट्टिको माथिल्लो भाग टिकट टाँस्नलाई जग्गा छोड़ी त्यसको मुन्तिर पत्र प्रापकको पूरा नाम, गाउँ, पोस्ट अफिस जिल्ला, पिनकोड नम्बर लेख्नुपर्छ। देब्रेपटि पत्र लेखकको नाम ठेगाना लेख्नुपर्छ।

व्यक्तिगत पत्रको नमूना –

(पुत्रको पत्र पितालाई)

चन्द्रलोक,
कालेबुङ
११ फरवरी २०१२

पूज्य पिताज्यू,

सेवा ढोग।

तपाईंले पठाउनु भएको पत्र हिज पाएँ। घरमा सबैलाई आराम छ भन्ने खबर पाएर खुशी लाग्यो।

मेरो पढ़ाइ अहिले धमाधम हुँदैछ। यसपालाको परीक्षा राम्ररी पास गर्छु भन्ने लागेको छ।

जाँच सक्नेसाथ घरमा आउँछु। पैसा यही हप्ता पठाइदिने कृपा गर्नुहोला। उता किनेको जुत्ता पनि फाटिसक्न आँट्यो, एकजोर किन्नु पर्ने।

यहाँ अरू सबै ठीकै छ। मुमालाई सेवा ढोग छ। बहिनी र भाइलाई मेरो माया। तपाईंहरूको कुशलताको कामना गर्दछु।

तपाईंको आज्ञाकारी पुत्र
विमल

	टिकट
द्वारा, श्री विमल थापा चन्द्रलोक कालेबुङ – ७३४३०१	सेवामा, श्री चन्दबीर थापा रोज ब्यांक, दार्जीलिङ – ७३४१०१

व्यावसायिक/कार्यालय सम्बन्धित पत्रको नमूना –

(प्रार्थना पत्र)

छिबो बस्ती,
कालेबुङ।
३ मई २०११

सेवामा,
प्रधान अध्यापक,
सरकारी उच्च विद्यालय,
कालेबुङ।

महोदय,

सविनय यहाँलाई अवगत गराउन चाहन्छु, मेरो घरमा आमा विरामी हुनुहुन्छ। जरो निकै चढ़ेको छ अनि म बाहेक घरमा अरू कोही छैनन्। बाबु सिलगढ़ी जानु भएको छ।

यस्तो अवस्थामा आमालाई एक्लै छोड़ेर स्कूल आउनु मेरो निम्ति सम्भव भएन। कृपया मलाई तीन दिनसम्मको विदा दिनुहोला।

तपाईंको आज्ञाकारी छात्र,
राजकुमार गुरूङ (सातौं श्रेणी)

१०. २. ५. निबन्ध रचना

निबन्ध कुनै विषयमा सम्बन्धित मत, विचार आदिको विवेचना गरिएको भावना युक्त लेख हो अर्थात निबन्धले कुनै वर्णित विषयमा क्रमबद्ध रूपमा प्रकाश हाल्छ। एउटै विषयमा पनि भिन्न भिन्न लेखकहरूले भिन्न भिन्न प्रकारका निबन्ध तयार गर्छन्। अनुभव, विषयको ज्ञान, लेखन शैली, शुद्ध भाषा – यी सब मिलेर उच्चको कोटिको निबन्ध तयार हुन्छ।

एउटा असल निबन्धकार बन्नलाई निरीक्षण, अध्ययन, अभ्यास भाव र विचार अनि आकर्षक लेखन शैलीमा ध्यान दिनुपर्छ।

निबन्ध तीन थरिका हुन्छन् :

क) **वर्णनात्मक निबन्ध :** यस्ता निबन्धमा प्राकृतिक अनि अप्राकृतिक सबै प्रकारका विषयहरू पर्न आउँछन्। कुनै वस्तु, पदार्थ स्थान, यात्रा, घटना वा दृष्य आदिको यस्ता निबन्धमा वर्णन गरिन्छ। यसमा कुनै तर्क वा प्रमाण दिने आवश्यकता हुँदैन, वर्णित विषयको सही चित्रण मात्र गरिन्छ।

ख) **विवरणात्मक निबन्ध :** यस्ता निबन्धमा कुनै घटनाको क्रमबद्ध रूपमा वर्णन गरिन्छ। ऐतिहासिक घटना, महापुरूषका जीवनी तथा अरू घटनाका विषय लिएर यस्ता लेख लेखिन्छ।

ग) **विचारात्मक निबन्ध :** यस्ता निबन्धमा विचारको प्रधानता रहन्छ। आफ्नो विचारको पुष्टि गर्नलाई लेखकले तर्क तथा उदाहरणहरूको सहारा लिनुपर्छ। कर्त्तव्य, मित्रता, अहिंसा, सिनेमा, स्त्री–शिक्षण, स्वदेश–प्रेम आदि जस्ता विषयहरू विचारात्मक लेखका विषय वस्तुहरू हुन्।

प्राथमिक स्तरका विद्यार्थीहरूलाई माथि भनिएका तीन थरिमध्ये वर्णनात्मक निबन्ध मात्र तिनीहरूको अनुभवको आधारमा विषय वस्तु चयन गरेर लेख्न सिकाउन सकिन्छ।

निबन्धका अंगहरू :

१) **प्रस्तावना (भूमिका) :** यसमा विषयको परिचय दिइन्छ। यसलाई खूबै सुन्दर र आकर्षक ढंगले आरम्भ गर्नुपर्छ।

२) **विषय प्रतिपादन (व्याख्या) :** यो अंगमा निबन्धको पूरा विषय रहन्छ। प्रस्तावना एक अनुच्छेदमा पूर्ण गरेर विषयमा आउनुपर्छ। विषयलाई कतिपय खण्डमा विभाजन गरी एक एकवटा अनुच्छेदमा एक एकवटा खण्डमाथि प्रकाश पार्नुपर्छ। कुराको सिलसिला मिलेको हुनुपर्छ।

३) **उपसंहार (निष्कर्ष) :** यस अनुच्छेदमा माथि भनिएका कुराहरूको सारांश दुइ–चार वाक्यमा दिनुपर्छ। उपसंहारले स्थापित विचारलाई पुष्टी गर्दछ।

यहाँ दिइएको निबन्धको नमूना पढ़ेर छात्र–छात्रालाई आफ्नै भाषा शैलीमा निबन्ध लेख्न सिकाउनु पर्छ –

मौरी

(भूमिका – वर्णन – आकार – स्वभाव – लाभ – उपसंहार)

मौरी खूबै परिश्रमी प्राणी हो। यसको मेहनत देखेर अल्छे मान्छेलाई लाज लाग्नु पर्ने हो अनि यसको कला र बुद्धिको हामीले प्रशंसा गर्नुपर्छ। यसले बनाएको चाका कारीगरीको एउटा सुन्दर नमूना हो।

मौरी तीन श्रेणीका हुन्छन् – कर्मी, रानी र भाले। कर्मी मौरीले जम्मै काम गर्छन्, फूलहरूमा घुमी–घुमी मह र पराग जम्मा गर्छन्, घर बनाउँछन्, बच्चाहरू स्याहार्छन्, खानेकुरा खोजेर ल्याउँछन्। रानी मौरीको काम फुल पार्नु हो अनि एउटा चाकामा एउटा मात्र रानी हुन्छ। भाले मौरी साह्रै नै अल्छे हुन्छ, काम गर्दैन, यसैले कहिले काँही कर्मी मौरीले यसलाई चिलेर मार्दछ। शायद कसैलाई मरी मरी कसैलाई परीपरी भनेर होला। कारण कर्मी मौरी ज्यादै काम गर्ने हुन्छन्।

मौरीको शरीर तीन भागमा बाँड़िएको हुन्छ – टाउको, छात्ती र पेट। मौरीका जम्मा छः वटा खुट्टा अनि दुइजोर पखेटा हुन्छन्। भाले मौरी हेर्दा अलिक मोटो र ठूलो हुन्छ। यो ज्यादै भुँ–भुँ गरिरहने हुन्छ। बँगैचातिर उड़िरहने मौरी कर्मी मौरी हो।

मौरी पनि कमिला जस्तै दल बाँधेर बस्छन्। तिनीहरू चाकामा बस्छन्। चाकामा असंख्या कोठाहरू हुन्छन्। प्रत्येक कोठा छः कुने हुन्छ। मह बटुल्न नै मौरीको सोख हो। चाकामा मौरी छँदा मह निकाल्न गए मौरीले चिल्छ। मौरीलाई धपाउनको लागि धूँवा लगाइन्छ। मौरीले धूँवा सहन सक्तैन।

मौरीको मह खूबै गुणकारी पदार्थ हो। कतिपय आयुर्वेदिक दवाईहरूमा यसको प्रयोग गरिन्छ। अचेल चाका नभत्काई वैज्ञानिक तरिकाले मह काटिन्छ।

मौरीबाट मानिसहरूले परिश्रमी बन्नु, एकवद्ध भएर रहनु मात्र होइन परोपकारी हुनु जस्तो गुणको शिक्षा लिनु पर्दछ।

१०. २. ६. सार संक्षेप

यस एकाईमा, भाव विस्तार, सारांश रचना, अनुच्छेद रचना, पत्र रचना र निबन्ध रचना शिक्षणबारे संक्षिप्त रूपमा विवेचना गरियो।

१०. २. ७ प्रगति जाँच

१, भाव विस्तार गर्दा ध्यान दिनुपर्ने कुराहरू उल्लेख गर।

२, कुन कुन विषयलाई ध्यानमा राखेर सारांश रचना गरिन्छ?

३, अनुच्छेद रचना भनेको के हो? स्पष्ट पार।

४, पत्र कति प्रकारका हुन्छन्? यो कति भागमा विभक्त हुन्छ?

५, निबन्ध कति थरिका हुन्छन्? प्राथमिक स्तरका विद्यार्थीहरूलाई कुन थरिको निबन्ध कसरी लेख्न सिकाउन सकिन्छ?

११. केही मातृभाषा शिक्षण पद्धतिहरू

११. १. भूमिका
११. २. कथोपकथन पद्धति
११. ३. आलोचना पद्धति
११. ४. अनुबन्ध पद्धति
११. ५. सार संक्षेप
११. ६. प्रगति जाँच

११. १. भूमिका

प्राथमिक स्तरका विद्‌यार्थीहरूलाई सरल र सहज तरिकाले मातृभाषा सिकाउने धेरै पद्धतिहरू छन्, तिनीहरू मध्ये अधिकांश पद्धतिहरूको विवेचना खण्ड (१) मा नै गरिसकिएका छन्। यस एकाईमा अझ कतिपय बालोपयोगी तथा सजिलो र चित्ताकर्षक पद्धतिहरू प्रस्तुत गरिएका छन्।

११. २. कथोपकथन पद्धति

कथोपकथनको अर्थ हुन्छ, परस्परमा बातचित गर्नु। विद्‌यालयमा प्राथभिक स्तरका विद्‌यार्थीहरूसंग शिक्षक–शिक्षिकाले प्रेम तथा स्नेह दर्शाउँदै सहज तरिकाले बातचित गरेर तिनीहरूको मौखिक अनि लिखित भाषामा शुद्धता, स्पष्टता अनि एकरूपता ल्याउने प्रयत्नलाई नै वास्तवमा कथोपकथन पद्धति भनिन्छ। शिशुहरू विभिन्न परिवार र परिवेशबाट विद्‌यालयमा आएर एकत्रित रूपमा शिक्षा लाभ गर्ने गर्छन्। तिनीहरूको मातृभाषा एउटै नहुन पनि सक्छ अनि एउटै मातृभाषा भए पनि आञ्चलिकता अनि भाषिकागत बोलाईको भाषामा भिन्नता पनि हुन सक्छ। अनुभवी शिक्षक–शिक्षिकाले छात्र–छात्राहरूका यस्ता दोषहरूलाई वार्तालापको माध्यमद्वारा बड़ो चतुरतासाथ सुधार गरिदिनसक्छन्। यसरी बोलाइमा एकरूपता ल्याउने क्रममा लेखाईमा पनि एकरूपता ल्याउन कथोपकथन पद्धति खुबै सुविधाजनक हुनेछ।

कथोपकथनको माध्यमद्वारा बोल्ने, सुन्ने, पढ़ने अनि लेख्ने कार्य एकैसाथ सम्पन्न हुनेछ। यसैले एकाधिक इन्द्रियहरूको प्रयोगको फलस्वरूप उपलब्ध ज्ञान दीर्घस्थायी हुनेछ। यस पद्धतिमा शिक्षक–शिक्षिकाले छात्र–छात्राको प्रतिदिन जीवनको घटनाहरू, स्थानीय तथा विद्‌यालयमा पालन गरिएका विभिन्न उत्सव–अनुष्ठानहरू, कौतुहलपूर्ण घटनाहरू आदि विषयलाई केन्द्र गरी कथोपकथन आरम्भ गर्नुपर्दछ। श्रेणी कक्षामा जब कुनै छात्र वा छात्राले उसको अभिज्ञताको वर्णन गर्दछ, त्यस बेला अरूले ध्यान दिएर सुन्नेछन् अनि भूल भए शिक्षक–शिक्षिकाले सहानुभूतिसाथ उसको वक्तव्य शेष भएपछि संशोधन गरिदिनुपर्दछ। यसरी बातचित गरिसकिएपछि चर्चा गरिएका विषयवस्तुको मुख्यांश शिक्षकले सरल भाषामा श्यामपटमा लेखिदिएर विद्‌यार्थीहरूलाई आफ्नो खातामा लेख्नु (सार्नु) लगाउनुपर्छ अनि त्यसलाई पढ्ने अभ्यास गर्न लगाउनुपर्छ। यसरी धेरैपल्ट यस्तो अभ्यास गराइसकेपछि वार्तालापको सारांश विद्‌यार्थीहरूलाई नै लेख्न लगाएर शिक्षक–शिक्षिकाले संशोधन गरिदिनुपर्छ।

११. ३. आलोचना पद्धति

प्राथमिक स्तरका उच्च श्रेणीहरू (तेस्रो र चौथो) मा पाठ्यपुस्तकमा लिखित विषयवस्तुहरू प्रथमत शिक्षक–शिक्षिकाले आदर्श पाठ गरिसकंपछि छात्र–छात्रालाई पालै पालो पढ्न लगाइन्छ, त्यसपछि व्याख्या अनि व्याख्यानको माध्यमद्वारा तिनीहरूलाई त्यस पाठले तथा रचनाकारले भन्न खोजेका कुराहरू बुझाउने कार्य आरम्भ गरिन्छ। यसरी त्यस पाठलाई विश्लेषण गरी छात्र–छात्रालाई उचित धारणा दिने पद्धतिलाई आलोचना पद्धति भनिन्छ।

व्याख्या विश्लेषण गरिरहेको समयमा छात्र–छात्राको ध्यानाकर्षण गर्नलाई समय–समयमा आलोचित पाठभित्रबाट कतिपय प्रश्नहरू सोध्नु आवश्यक छ। यस्तो प्रश्नहरू सोध्ने बेलामा एक–दुई विद्यार्थीलाई मात्र लक्ष्य गर्नु हुँदैन, श्रेणी कक्षाका विभिन्न दिशामा बसेका छात्र–छात्रालाई अचानक उठाएर सोध्ने गर्नुपर्छ। यसो गर्नाले एकातर्फ छात्र–छात्राहरू पाठप्रति मनोयोगी रहने छ भने अर्कोतर्फ आलोच्य पाठ उनीहरूको मस्तिष्कमा दीर्घस्थायी रूपमा रहनेछ।

यो पद्धति प्रारम्भिक श्रेणीहरूमा पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ तर शिशुहरूको उमेर र स्तरको कारणले यो त्यति उपयोगी हुन सक्तैन।

११. ४. अनुवन्ध पद्धति

कुनै एउटा विषयलाई छात्र–छात्रा समक्ष उपस्थापन गर्दागर्दै प्रासंगिक रूपमा अन्य विषयहरूसंग साधारणतः सम्पर्क स्थापित भइरहेकै हुन्छ। यसरी उपस्थापित विषयवस्तुको मुख्य रूपमा पठन–पाठन कार्य सम्पन्न हुँदा हुँदै गौण रूपमा अर्का विषयहरूको पनि एकैसाथ अध्यापन कार्य सञ्चालन गरिने पद्धतिलाई अनुवन्ध पद्धति भनिन्छ।

शिक्षण व्यवस्थाको सुविधाको निम्ति अखण्ड ज्ञानको भण्डारलाई पाठ्य तालिकामा विभिन्न विषयहरूको रूपमा विभाजन गरिएकाछन्, जस्तै– मातृभाषा, गणित, भूगोल, इतिहास आदि। यी सबै विषयहरू माझको अदृश्य ऐक्य सम्बन्धबारे शिक्षक–शिक्षिकाले विद्यार्थीहरूलाई बुझाउने कोसिस नै गर्दैनन् अनि तिनीहरूले बुझ्न पनि सक्तैनन्।

केही मनन–चिन्तन गरेर हेरे कुनै पनि पाठभित्र प्रसंगवस अन्य विषयहरू, जस्तै– भूगोल, इतिहास, गणित, साहित्य, कला आदि समावेश रहेको पाइन्छ। उदाहरणार्थ– मातृभाषाका पाठ्यसूची अन्तर्गत 'हाम्रा देशका कुराहरू' विषयमा आधारित 'स्वतन्त्रता संग्राम' वा 'गान्धीजी' पाठलाई श्रेणी कक्षामा उपस्थापन गर्दा भारतवर्षको इतिहास, यहाँको विभिन्न जात–जाति, धर्म, संस्कार–संस्कृति, अंग्रेज शासकहरूको अत्याचार, विभिन्न क्षेत्रका महान शहीदहरूको बलिदान, दक्षिण अफ्रिकामा गान्धीजीको सत्याग्रह, सावरमति आश्रम, गान्धीजीको देश भ्रमण, अहिंसात्मक आन्दोलन तथा स्वतंत्रता प्राप्ति आदि कुराहरूको विवेचना गर्नुपर्दछ। यी सबै विषयहरूको व्याख्या–विश्लेषण गर्ने समयमा इतिहासको काल विभाजन गर्दा गणित, भारतवर्ष र दक्षिण अफ्रिकाको मानचित्र प्रयोगले त्यस स्थानको भूगोल, विभिन्न क्षेत्रका मानिसहरू र उनीहरूका कला, साहित्य, संस्कार संस्कृतिको झलक आदिको विवरणले त्यस क्षेत्रका वासिन्दाहरूको आर्थिक र सामाजिक अवस्थाको ज्ञान प्रदान गरिन्छ।

समग्रमा भन्नु पर्दा मातृभाषा विषयको ज्ञान प्रदान गर्ने मूल उद्देश्यलाई परिपूर्ण गर्नलाग्दा अन्य सबै विषयहरू गौण रूपमा एकैसाथ समावेश हुन आएको हामी पाउनेछौं।

११. ५. सार संक्षेप

मातृभाषाका कतिपय विशेष शिक्षण पद्धतिहरूको विवेचना खण्ड (१) मा नै गरिसकिएको हुनाले यस एकाईमा कथोपकथन, आलोचना र अनुबन्ध पद्धतिबारे मात्र चर्चा गरिएको छ।

११. ६. प्रगति जाँच

१) कथोपकथन भन्नाले के बुझिन्छ? यस पद्धतिद्वारा कसरी मातृभाषा शिक्षण गरिन्छ?

२) आलोचना पद्धति कुन श्रेणी स्तरका विद्यार्थीवर्गको निम्ति किन उपयोगी छ?

३) अनुबन्ध पद्धतिद्वारा मातृभाषा शिक्षण कसरी गर्न सकिन्छ?

१२. उच्चारण र हिज्जे भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू

१२. १. भूमिका
१२. २. उच्चारण मूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू।
१२. ३. हिज्जे भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू
१२. ४. सार संक्षेप
१२. ५. प्रगति जाँच

१२. १. भूमिका

श्रवण, कथन र पठनसंग उच्चारणको अनि लेखनसित हिज्जेको अति नजिकको सम्बन्ध रहेको हुन्छ। यसो हुँदा कथन अनि पठनको समयमा कतिपय कारणले उच्चारणमा भूल हुने गर्दछ। शब्दको सठीक हिज्जे शुद्ध उच्चारण रीतिमाथि निर्भरशील रहने गर्दछ। यदि उच्चारणमा कुनै कारणले त्रटि हुन गए लेख्ने समयमा त्यसको हिज्जेमा अवश्यै भूल हुनजानेछ। यसैले विद्यालयमा शिक्षक–शिक्षिकावर्गले विद्यार्थीहरूले गर्ने गरेका यी दुवै प्रकारका भूलहरूको कारणहरू पत्तो लगाएर उचित तरिकाले संशोधन गरिदिने व्यवस्था मिलाउनुपर्छ।

१२. २. उच्चारण भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू

उच्चारणमा भूल हुने कारणहरू :

क) **पारिवारिक परिवेश :** परिवारका सदस्यवर्गले बोल्ने ढंग वा तरिकाहरू शिशुले अज्ञानतावश अनुशरण गर्ने हुनाले त्यहाँ प्रयोग गरिने भाषाको असर परेको हुन सक्छ।

ख) **सामाजिक परिवेश :** शिशु जुन समाजमा बसोबास गर्छ त्यही समाजका मानिसहरूले बोल्ने गरेका शब्दहरू प्रयोग गरी उसले पनि बोल्ने अभ्यास गर्दछ। फलतः तिनीहरूले गरिरहेका गल्ती अज्ञानता मै शिशुले ग्रहण गरिरहेको हुनेछ, जस्तै– हामेरू, तिमारू आदि।

ग) **आञ्चलिक विशेषता** विभिन्न अञ्चलमा बसोबास गर्ने एकै भाषा–भाषीहरूले प्रयोग गरेका कतिपय शब्दहरू भिन्न प्रकारले उच्चारित सुन्न पाइन्छ, जस्तै– नारान (नारायण), भण्टा (बैगुन), इस्थाइ (स्थायी), भैंकर (भयंकर) आदि।

घ) **शारीरिक विकृति :** कान कम्ती सुनेर वा राम्ररी नसुनेर शिशुहरूले भूल सुन्ने हुनाले त्यही शब्दलाई उच्चारण गर्दा शब्दमा विकृति पनि आउने गर्दछ। त्यसबाहेक वाग्यन्त्रमा त्रुटि (जिब्रो बाक्लो हुनु, कण्ठ वा स्वरतंत्रमा खराबी) रहेको कारणले पनि शब्दोच्चारणमा भूल हुन सम्भव छ।

ङ) **कुअभ्यास :** खूबै छिट्छिटो बोल्नु वा पढ्नु, एकै सासमा बोल्नु वा पढ्नु, गीतको भाकामा वा लेग्रो तानेर बोल्नु, नाके स्वरमा बोल्नु वा पढ्नु आदि कुअभ्यासहरू हुन् जसको कारणले उच्चारणमा त्रुटि उत्पन्न हुने गर्दछ।

च) **शब्दको प्रयोग विशेषता :** वर्णतर्फ मात्र ध्यान दिएर उच्चारण गर्दा कुनै विशेष शब्दको उच्चारणमा त्रुटि हुने गर्दछ, जस्तै– 'उज्ज्वल' शब्दलाई वर्ण अनुसार उच्चारण गर्दा 'उज्ज्वल' हुनेछ तर नेपाली भाषामा

यसको उच्चारण 'उज्जल' हुनेछ, यहाँ 'व' वर्णको उच्चारण विलोप हुनेछ। 'विशेष' लेखिन्छ तर उच्चारण गर्दा 'विशेष' भन्नुपर्छ, यहाँ 'व' को उच्चारण 'ब' हुने गर्दछ किन भने कुनै पनि शब्दमा 'ष' लागेको भए त्यसपछि वा अघि लेखिने 'ब' लाई जहिले पनि 'व' नै लेख्नु पर्ने नियम छ।

छ) **लाज, भय वा हीनताबोध :** यसको कारणले शिशुहरूले आत्म विश्वास हराउनेछ, तिनीहरूको मनमा एक प्रकारको त्रास उत्पन्न हुनेछ जसको कारणले बोल्दा वा पढ्दा तिनीहरूको उच्चारणमा भूल हुने गर्दछ।

संशोधनका उपायहरू :

क) पारिवारिक र सामाजिक परिवेश अनि आञ्चलिक विशेषता अथवा आमाको काखमा छँदा सिकेका शब्दहरूले शिशुले हृदयमा स्थायी छाप बसालेको हुनाले त्यसलाई परिवर्त्तन गराउनु अति कठिन भएता पनि शिक्षक–शिक्षिकाले खूबै यत्नपूर्वक बारम्बार अभ्यास गराएर त्यस्ता त्रटिहरूलाई संशोधन गर्ने प्रयास गर्नुपर्छ।

ख) त्रुटि यदि शारीरिक विकृतिको कारणले भएको भए झट्टै अभिभावकवर्गसंग सम्पर्क गरी चिकित्सकको परामर्श लिएर त्यस्ता समस्याहरू दूर गर्न सकिन्छ। यदि उमेरको कारणले वाक्शक्तिमा स्पष्टता नआएको भए चिकित्सकसंग परामर्श लिने जरूरी छैन, उसलाई बातचित गर्ने यथेष्ट सुयोग प्रदान गर्नुपर्छ, समयपुगेपछि उसको उच्चारणमा आफै सुधार आउनेछ।

ग) कुअभ्यासको कारणले उच्चारण दोष देखिए शिशुहरूलाई उपयुक्त छन्द, लय, ताल वा सुर मिलाएर पढ्न अभ्यास गराउनु उचित हुनेछ। नाके स्वरमा बोल्ने वा पढ्ने र ढीलो गरी दोहोऱ्याउँदै पढ्ने शिशुहरूलाई स्वाभाविक स्वरमा बोल्ने अनि पढ्ने साथै उपयुक्त विराम चिन्ह अनि मात्राको प्रयोग गरी पढ्ने अभ्यास गराउनुपर्छ।

घ) प्राथमिक स्तरका प्रारम्भिक अवस्थाबाहेक अन्य विद्यार्थीहरूलाई उनीहरूकै स्वभाव तथा रूची अनुरूप सामान्य व्याकरणिक नियमहरू अवगत गराएर शब्दको प्रयोग विशेषताको कारणले हुने उच्चारण दोषहरू निवारण गर्न सकिनेछ।

ङ) लाज, भय वा हीनताबोधको कारणले आत्म विश्वास हराएका शिशुहरूलाई कठोर अनुशासन वा तिरस्कारपूर्ण व्यवहारको सट्टामा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार तथा प्रेम र स्नेहको माध्यमद्वारा वार्तालाप गर्ने प्रशस्त सुयोग प्रदान गर्नुपर्छ। यसो गरे तिनीहरूको उच्चारणमा क्रमशः सुधार आउनेछ।

१२. ३. हिज्जे भूल हुने कारणहरू अनि संशोधनका उपायहरू

हिज्जे भूल हुने कारणहरू –

क) मातृभाषाको प्रयोगमा एकरूपता तथा यसको संरक्षणको निम्ति प्रयुक्त व्याकरणका नियमहरूको उलंघन अथवा यस सम्बन्धी उचित ज्ञानको अभावको कारणले शिशुहरूले मात्र नभएर वयस्कहरूले पनि लेख्दा हिज्जे भूल गर्ने गर्छन्।

ख) लेखाईमा शीघ्रता अनि असावधानीको कारणले 'म' र 'भ' 'ख' र 'र' 'व', 'इ', 'ड', 'उ', 'घ' र 'ध' , 'ब' र 'व' आदि वर्णहरू उचित प्रकारले नलेखिए हिज्जे भूल हुने गर्दछ, जसको कारणले शब्दको अर्थमा पनि कहिले काँही फरक परेको देखिने गर्दछ।

ग) पुस्तकमा छापिएका शब्दहरूको भूल हिज्जेले प्रारम्भिक अवस्थाका पाठक तथा विद्यार्थीहरूको हृदयमा गहिरो प्रभाव पार्नेछ। दुईजना विद्यार्थीमाझ यदि कुनै शब्दको हिज्जे सम्बन्धी तर्क शुरू भए तिनीहरू दुवैले आ–आफ्ना पुस्तक पल्टाउन थाल्नेछन् र अन्तिम निर्णय लिनेछन्। तर यान्त्रिक गड़बड़ी वा अन्य कुनै कारणले पुस्तकमा विवाहित शब्दको हिज्जे भूल भए दुवेले त्यसैलाई सही ठान्नेछन् जो तिनीहरूको हृदयमा दीर्घस्थायी रूपमा रहने छ अनि त्यो सुधन सक्ने छैन।

घ) बाटो–घाटो र विभिन्न संस्थान तथा दोकानपाट आदिको नाम–पट (साइन बोर्ड), देवाल आदिमा टाँसिएको पोस्टर वा विज्ञापन आदिमा कुनै शब्दको हिज्जे भूल भए (यस्ता भूल हिज्जे भएका शब्दहरू प्रत्येक व्यक्तिको नजरमा घरिघरि परिरहने हुनाले बालक–बालिकाको कलिलो मस्तिष्कमा त्यही भूल हिज्जेको प्रतिरूप स्थायी रूपमा रहनेछ।

ङ) शिशुहरूको हृदयमा यदि कुनै प्रकारको मानसिक अन्तर्द्वन्द्व भए उसले जानेको शब्दको हिज्जे पनि भूल लेख्ने छ।

च) आञ्चलिक प्रचलन रहेको शब्दको उच्चारणगत त्रुटिको कारणले पनि हिज्जे भूल हुने गर्दछ। आफ्ना इलाकामा बोलिने गरेका शब्दहरूलाई छात्र–छात्राहरूले उस्तै प्रकारले लेख्ने हुनाले यस्तो दोष हुने गर्दछ।

छ) सादृश्यबोध पनि हिज्जे भूल हुने एउटा कारण हो। एकै प्रकारका शब्दहरू अर्थ नजानिएर कोहीबेला भूल लेखिने गर्दछ, जस्तै– मध्यस्थ/मुखस्थ शब्दहरूमा 'स्थ' को अर्थ हुन्छ,अ'स्थित' (अवस्थान)। 'मध्यस्थ' को अर्थ माझमा रहनु हुन्छ भने 'मुखस्थ' को अर्थ मुखमा अवस्थित वा मुखैमा रहनु हुन्छ। यही हिज्जेको सादृश्य रूपमा छात्र–छात्राले 'विपदग्रस्थ' लेख्यो भने हिज्जे भूल हुन जानेछ। जसको शुद्ध रूप 'विपदग्रस्त' हुनेछ अनि यसको अर्थ हो, विपदमा पर्नु वा विपदले घेरिनु।

संशोधनका उपायहरू :

क) आफ्नो मातृभाषाप्रति तिरस्कार तथा हेयको नभएर श्रद्धापूर्ण मनोभाव राखी यसको व्याकरणका नियमहरूलाई समुचित ढंगमा पालन गरे निश्चय नै हिज्जे भूल हुने छैन। भाषाका दृश्य रूप र ध्वनि रूपको पार्थक्यको उचित स्थान, शब्दोच्चारण रीति, ह्रस्व–दीर्घको उचित प्रयोग, हलन्त, विसर्ग, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, रेफको प्रयोग स्थानलाई ध्यान दिनु, 'ब' र 'व', 'न' र 'ण', 'श', 'ष' र 'स' को प्रयोगमा सावधानी, ध्वनिहीन वर्णहरू रहेको शब्दहरूको लेखाइमा सावधानी राखिए अवश्य नै हिज्जे भूल हुनेछैन।

ख) विद्यार्थीहरूले प्रत्येक शब्दको लेख्य रूपको चित्र आफ्नो स्मृतिपटमा अंकित गरी संचय गर्ने गर्दछ। यसैले पाठ्य–पुस्तक होस् अथवा बाटो–घाटो अनि विभिन्न संस्थान तथा दोकानपाटको नामपट्, देवालतिर टाँसिने पोस्टर वा विज्ञापनमा छापिने तथा लेखिने प्रत्येक शब्दको हिज्जे शुद्ध हुनु आवश्यक छ। यसबाहेक आफ्नो आदर्श व्यक्ति ठानेर छात्र–छात्राले शिक्षक–शिक्षिकाको हरेक कुरा अनुकरण र अनुशरण गर्ने हुनाले उनीहरूको लेखाईमा कहिले पनि कुनै शब्दको हिज्जे भूल हुनुहुँदैन।

ग) विद्यार्थीहरूले साधारणतः जुन–जुन शब्दहरूको हिज्जे भूल गरिरहन्छन्, त्यस्ता शब्दहरूको तालिका तयारी गरी श्रेणी कक्षामा सबैको आँखा घरिघरि परिरहने स्थानमा टाँगिदिनुपर्छ तर यो कार्य दीर्घ स्थायी हुनु हुँदैन, समय–समयमा त्यसलाई बदली गरेर नयाँ शब्दहरूको अर्को तालिका त्यहाँ झुण्ड्याइ दिनुपर्छ।

घ) शुद्ध हिज्जे शिक्षा दान गर्नलाई श्रेणी कक्षामा समय–समयमा श्रुतिलिपि लेख्ने अभ्यास गराइरहनुपर्दछ। यसरी लेखाइसकेपछि भूल भएका शब्दहरूलाई पुनः शुद्ध रूपमा लेख्नु लगाउनुपर्छ। छात्र–छात्राहरूले गर्ने गरेका हिज्जे भूल संशोधन गर्ने यो सर्वोत्तम उपाय हो।

ङ) कठिन हिज्जे भएका शब्दहरूलाई घरिघरि स्पष्ट उच्चारण गरी पढ्ने अभ्यास गर्नु लगाउनुपर्दछ। यसरी एउटै शब्दको हिज्जे घरिघरि शब्दोच्चारणसहित गरिरहनाले फेरिफेरि त्यस शब्दको हिज्जे भूल हुने सम्भावना कम्ती भएर जानेछ।

च) शिशुहरूलाई एउटा अलग्गै खातामा कठिन हिज्जे भएका शब्दहरू वर्णानुक्रममा सजाएर लेखिराख्ने निर्देश दिनु सकिन्छ। यसरी त्यो खातामा लेखिएका शब्दहरूलाई समय–समयमा पढ्ने र लेख्ने अभ्यास गरिरहे तिनीहरूको हिज्जे भूल हुने समस्या सजिलैसित समाधान हुनेछ।

१२. ४. सार संक्षेप

यस एकाईमा श्रवण, कथन, पाठन र लेखनको समयमा छात्र–छात्राहरूद्वारा हुने गरेका शब्दोच्चारण र हिज्जे भूलका कारणहरू अनि तिनका संशोधनका उपायहरू बारे संक्षेपमा विश्लेषण गरिएको छ।

१२. ५. प्रगति जाँच

१, शिशुहरूको शब्दोच्चारणमा हुने भूलहरूबारे चर्चा गर।

२, यस्ता भूलहरूको निवारण कसरी गर्न सकिन्छ?

३, लेखाईमा हुने हिज्जे भूलका कारणहरू खुट्याऊ।

४, हिज्जे भूललाई कसरी संशोधन गर्न सकिन्छ?

१३. मूल्याङ्कन

१३. १. भूमिका
१३. २. प्राथमिक शिक्षामा मूल्याङ्कनको विशेषता
१३. ३. जाँच
१३. ४. सामर्थ्य अनुरूप मूल्याङ्कन
१३. ५. प्राथमिक स्तरमा मूल्याङ्कन : परिकल्पना, प्रक्रिया र उपकरण
१३. ५. १. परिकल्पना
१३. ५. २. प्रक्रिया
१३. ५. ३. उपकरण
१३. ६. मूल्याङ्कन र मान निर्णय
१३. ६. १. तात्क्षणिक/उप–एकाई अनुरूप मूल्याङ्कन
१३. ६. २. सामयिक मूल्याङ्कन : परिकल्पना
१३. ६. ३. पार्विक मूल्याङ्कन
१३. ६. ४ सामग्रिक मूल्याङ्कन
१३. ६. ५. वाह्य मूल्याङ्कन
१३. ७. संशोधनी पाठ : पछि पर्नेलाई केही उपायहरू
१३. ८. पाठ सारांश
१३. ९ प्रगति जाँच

१३. १. भूमिका

'प्राथमिक शिक्षाको अन्तसम्म कुनै पनि लिखित परीक्षा हुनेछैन। चौथो श्रेणीसम्म कुनैपनि शिक्षार्थीलाई रोकेर राखिने छैन। सामग्रिक मूल्याङ्कनको आधारमा अपेक्षित सामर्थ्य आर्जन गर्न नसके कुनै कुनै शिक्षार्थीलाई पाँचौं श्रेणीमा एक वर्ष रोकेर राख्न सकिनेछ।'

उपर्युक्त संवैधानिक निर्देशमा दुईवटा महत्त्वपूर्ण बुँदाहरू देखिन्छ :– (१) प्राथमिक स्तरका शिक्षामा श्रेणीहरूलाई अलग अलग नहेरेर एउटै पर्यायको रूपमा राखिको छ। (२) प्राथमिक शिक्षालाई सार्वजनीक बनाउने लक्ष्य प्राप्त गर्ने।

प्राथमिक शिक्षाको सम्प्रसारणसित आशा गरिएको गुणगत मानलाई अक्षुण्ण राख्न जरूरी भएको छ त्यसर्थ नै परीक्षा व्यवस्थालाई हटाएर मूल्याङ्कन व्यवस्थामा परिवर्तित गरिएको छ र यसको प्रचलन पनि शुरू गरिएको छ। विभिन्न शिक्षाविदहरूका सिद्धान्तमा पनि यो धारावाहिक/अनवरत सार्विक मूल्याङ्कन प्रतिपादन गरेका छन् औ चौथो श्रेणीसम्म शिक्षार्थीलाई रोकेर नराख्ने एउटा विज्ञानसम्मत पदक्षेप ग्रहण गरिएको छ।

यसरी कुनै पनि श्रेणीमा रोकेर नराखिनेसित धारावाहिक मूल्याङ्कनको एकार्कामा निर्भरशील रहेको छ। यसैले धारावाहिक मूल्याङ्कन एउटा महत्त्वपूर्ण विषय हुनगएको छ। प्राथमिक स्तरका शिक्षाका विषय–वस्तुको

चयन अनि पठन–पाठन सामर्थ्य प्राप्त गर्ने धारणाले महत्त्व पाएपछि सामर्थ्य अनुरूप मूल्याङ्कन गरिनुपर्ने व्यवस्था अपनाएइको छ। संशोधन गर्नेपर्ने विषयपनि त्यसरी नै एकै प्रकारले सामर्थ्य अनुरूप गरिनुपर्छ।

तर परीक्षा–नम्बर–पास–फेल प्रोमोशन अनि पढ्नु–लेख्नु राम्रो–नराम्रो विचारहरूको व्यवस्था अंग्रेजी युगको शासन व्यवस्थादेखि नै चलेर आएको छ। यी अभ्यस्त धारणाबाट निस्किएर मूल्याङ्कनको नयाँ परिपाटी अवलम्बन गर्नलाई शिक्षार्थी–शिक्षक–अभिभावक सबैलाई केही समय त अवश्य लाग्ने नै छ। यो प्रसंगमा डा॰ अशोक मित्र कमिशनको मन्तव्य स्मरणीय छ कि वर्त्तमानमा शिक्षकको अल्पसंख्या र मूल्याङ्कन प्रक्रियामा स्वच्छताको अभावले यो परिपाटी सफल हुनसकेको छैन।

जसरी प्रत्येक शिक्षार्थीको उन्नतिको सठीक परिनाप जरूरी छ त्यसरी नै मूल्याङ्कनको फलाफल ठीकसित राखिनु जरूरी छ। यो कार्य समयसाध्य र श्रमसाध्य छ। यसैले मूल्याङ्कनको मूल लक्ष्य सठीक राखेर त्यसको प्रक्रिया र तथ्य लिपिबद्ध गर्दै यो कार्य सहल र सरल गरिने चेष्टा गर्नपर्छ।

भन्नसकिन्छ कि सठीक मूल्याङ्कन व्यवस्थामाथि नै शिक्षार्थी, शिक्षक र सम्पूर्ण प्राथमिक शिक्षाको उन्नतिको पनि निर्धारण गर्न निर्भर गर्दछ।

१३. २. प्राथमिक शिक्षामा मूल्याङ्कनको विशेषता :

पठन–पाठन र अरू कर्मनिर्भर विषयहरूको एउटा अभिन्न अंश मूल्याङ्कन हो।

शिक्षार्थीको सामर्थ्य अर्जन गर्नमा सहायक सिद्ध हुन्छ मूल्याङ्कनद्वारा। प्रत्येक पाठ–एकाईं र कर्म एकाईंका शिक्षार्थीका दुर्बलता मूल्याङ्कनद्वारा नै हटाएर पारदर्शिता ल्याउन सकिन्छ, कारण मूल्याङ्कन पछि संशोधनी पाठको व्यवस्था गर्न सकिन्छ। पास र फेल भन्ने शिक्षार्थीमा खाली छाप मात्र मारेर शिक्षार्थीको तत्कालीन सामर्थ्यको स्तर तय नगरेर मूल्याङ्कनले सत्य रूपमा स्वसिकाई गरिने कार्यलाई पनि सुनिर्दिष्ट गर्न सकिनेछ।

सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण भएको छ कि यथार्थरूपमा शिक्षार्थीले कति सिके त्यसको मूल्याङ्कन गरिनेछ तर कति सिकाइयो त्यसको मूल्याङ्कन भने गरिँदैन। मूल्याङ्कनको माध्यमले कसरी सिकाइयो यस विषयमा एउटा धारणा औंल्याउन सकिन्छ। अर्थात् शिक्षक/शिक्षिकाका पाठ परिचालना पद्धति ठीक छ कि छैन, कसरी शिक्षण प्रक्रियालाई उन्नतशील गर्नसकिन्छ भन्ने कुरा केवल मूल्याङ्कनले मात्र जान्न सकिन्छ। यी कुरा जानेपछि मात्र माथि उल्लेख गरिएको शिक्षार्थीका दुर्बलता हटाउनलाई प्रयोजनीय व्यवस्था ग्रहण गर्न सकिन्छ।

मूल्याङ्कन किन? भन्ने कुरा ध्यानमा राख्नुपर्छ। प्रचलित परीक्षा व्यवस्था र मूल्याङ्कन एउटै होइन। प्रचलित परीक्षा व्यवस्थामा मुखस्त गर्नु वा (Rote Learning) माथि जोड़ दिइएको छ अनि एउटा पत्रको परीक्षाले नै शिक्षार्थीको भाग्य निर्णय गर्दछ। परीक्षाफल प्रकाशित भएपछि संशोधनी पाठको कुनै व्यवस्था गरिँदैन यसैले शिक्षार्थीमा वैष्म्य सृष्टि हुँदछ अनि असमान प्रतियोगिता प्रतिकुल हुँदछ। प्रचलित परीक्षा व्यवस्थासित मूल्याङ्कनको भिन्नता यही स्पष्ट हुनजान्छ कि तथाकथित परीक्षा व्यवस्थामा पुस्तकमा पढ़ेका ज्ञान र तथ्यको मात्र जाँच हुनेछ तर वर्त्तमान मूल्याङ्कन व्यवस्थामा प्रयोग गरिने प्रक्रियाहरूको सहायताले शिक्षार्थीका व्यक्तित्वको सर्वागींन विकासको विचार गरिएको छ। सत्यतामा मूल्याङ्कनको एकातर्फ धारावाहिक अनवरतता छ भने अर्कोतर्फ सर्वोउन्मुखी विकासको पक्ष छ। अर्थात, शिक्षार्थीको केवल अनवरत मूल्याङ्कन मात्र नभएर पठन–पाठनका ज्ञानमूलक उपादानहरूलाई सीमाबद्ध गरेर राख्न हुँदैन तर यसलाई साथमा शिक्षार्थीको के कति बोध गर्नसके र त्यसको प्रयोग क्षमता, दक्षता, अपेक्षित दृष्टिकोण, सुअभ्यास, मानसिकता अनि मूल्यबोधको क्षेत्रहरू पनि निर्धारण

गर्नपर्छ। अझ, श्रेणीकोठाभित्र वा परीक्षापत्रको पृष्ठमा शिक्षार्थीको मौखिक र लिखित उत्तरको मात्र सामर्थ्यहरूको मूल्याङ्कन गरेर लाभ हुँदैन तर सामाजिक र व्यवहारिक जीवनमा शिक्षाको आचरण, क्रियाकलाप र व्यक्तिगत प्रक्रियाको माध्यमले सामाजिक मानिसकोरूपमा यी सामर्थ्यहरू मूल्याङ्कन गरिनुपर्छ। व्यक्ति जीवनमा यी मूल्यबोध, दृष्टिकोण र मानसिकता एउटा प्रगतिशील स्वस्थ सामाजिक जीवनको पक्षमा अनुकुल हुनुपर्छ शिक्षार्थीको विकास अत्यावश्यक भएको स्वीकार्दै यस विषयमा शिक्षक/शिक्षिका सदैव सचेत रहनु आवश्यक छ। वस्तुतः यो मूल्याङ्कन प्रक्रिया शिक्षार्थीको सफलता र दुर्बलता चिन्हित गरिने माध्यम हो र यही अनुसार संशोधनको व्यस्थाको प्रयोजन हुनेछ। यो मूल्याङ्कनले शिशुलाई एउटा पुस्तक पढ़ने यंत्रमात्र नभएर सर्वांगीन विकास भई भविष्यमा समाजको एक सफल नागरिकको रूपमा प्रतिष्ठापित गर्नपर्ने दृष्टिकोण राख्नुपर्छ।

यसर्थ, सत्यरूपमा नै भन्नु हो भने पठन–पाठन र शिक्षण प्रणालीको जाँच गर्ने सही परीक्षण गर्ने माध्यम नै मूल्याङ्कन हो। यो अध्यायलाई तीन भागमा विभक्त गर्नसकिन्छ। यसलाई उच्चतम पर्यायको रूपमा मूल्याङ्कनलाई राख्न सकिन्छ। त्यसपछिको पर्याय अभीक्षा र अन्त्यमा प्रचलित माननिर्धारण गर्ने परीक्षा व्यवस्थालाई राख्न सकिन्छ।

१३. ३. जाँच (Test)

मूल्याङ्कन र परीक्षाको पार्थ्यक्य छुट्याउन अघि नै धेरै आलोचना गरिसकिएको छ। यहाँ जाँच सम्बन्धी केही आलोचना गर्न आवश्य छ। जाँच मूल्याङ्कनकै विभिन्न कौशलमध्ये एक हो– यहाँ मौखिक र लिखित परीक्षा, विभिन्न क्रियाकलाप, पर्यवेक्षणको माध्यमले सहभागिता, समयानुकुलता, खेलकूद र सांस्कृतिक कार्यक्रममा अंशग्रहण इत्यादिको जाँच गरिन्छ। नियमितरूपमा पर्यवेक्षणको माध्यमले मूल्याङ्कनका कौशलहरू (Technique)–लाई नै जाँच (Test) भन्नसकिन्छ। परीक्षा केवल जाँचको एउटा स्थूल धारणा मात्र हो। उच्च र निम्न मानको रूपमा सर्वोच्च स्थानमा मूल्याङ्कन नै रहेको छ। त्यसपछि जाँचको स्थान आउँछ र अन्त्यमा परीक्षा। शिक्षार्थीलाई पर्यवेक्षण गर्दा अनि व्यवहारिक विषयमाथि महत्त्व दिएर जुन एकाईं अनुरूप मूल्याङ्कन गरिन्छ त्यसलाई नै जाँच भन्न सकिन्छ। जाँच मौखिक र लिखित दुवै प्रकारको हुनसक्छ। कार्यको माध्यमबाट वा कार्य गर्दा गर्दै पनि जाँच गर्न सकिन्छ। व्यवहारिक परीक्षाको अर्थ हुन्छ शिक्षार्थीमा आएको कौशलहरूको दक्षता जाँच गर्ने कार्य हुनजान्छ। जुन जुन अपेक्षित सामर्थ्यलाई आधार गरेर यो परीक्षा लिइन्छ त्यसमाथि सम्बन्धित मौखिक प्रश्न पनि गर्न सकिन्छ। तर त्यसलाई मौखिक परीक्षाको रूपमा नसोचेर व्यवहारिक परीक्षाकोरूपमा यो परीक्षा सम्पन्न गर्न सकिन्छ। तर प्रत्येक शिक्षार्थीलाई अलग अलग रूपमा नै जाँच (Test) लिनपर्छ। जाँच पत्र तयारी गर्दा विशेषगरी पाठ्यक्रम अन्तर्गत प्रत्यक्ष अभिज्ञतामूलक कार्यको क्षेत्रमा नै प्रयोग गर्न पर्नेछ। यसबाहेक सृजनात्मक र उत्पादनात्मक कार्य, स्वस्थ्य र शारीरिक विषयक अनि प्रकृति विज्ञानका क्रियाशील कार्यमाथि पनि यसको प्रयोग गर्नसकिनेछ।

१३. ४. सामर्थ्यअनुरूप मूल्याङ्कन :

अपेक्षित सामर्थ्य प्राप्त गर्ने धारणालाई प्राथमिक शिक्षाक्रममा गुणगत रूपमा एउटा उन्नत पर्यायको रूपमा लिनसकिनेछ।

सामर्थ्य अनुरूप मूल्याङ्कन गर्दा शिक्षार्थीले के कति विषय बुझेका छन् र कति अघि बड़न सफल भएका

छन् भन्ने जान्न सकिनेछ। र कहाँ कति बुझेको छैनन् त्यसको निम्ति शिक्षक/शिक्षिकालाई संशोधनी पाठको व्यवस्था गर्न सहज हुनेछ।

सामर्थ्यअनुरूप मूल्याङ्कनको व्यवस्थामा प्रत्येक सामर्थ्यको क्रमिकरूपमा एक एक गरेर एक एक विषयलाई जाँच गर्न सकिनेछ। प्राथमिक स्तरका शिक्षाक्षेत्रमा शिक्षार्थीलो विभिन्न कार्यको दक्षताको परिचय दिनमा र के कति सामर्थ्यमा शिक्षार्थी दक्ष भए भन्ने विषयमा यसले सहायता पुऱ्याउनेछ।

१३. ५. प्राथमिक स्तरका मूल्याङ्कन : परिकल्पना, प्रक्रिया र उपकरण :

विभिन्न विषय पठन – पाठनको कार्य सम्पादन गर्नलाई पाठ्यसूचि स कर्मसूचिसंगै मूल्याङ्कन सूचिको पनि उल्लेख गरिएको छ। यहाँ मूल्याङ्कनको सबै पक्षको साधारण परिचय दिन्छ।

१३. ६. परिकल्पना :

मूल्याङ्कन पाँचवटा भागमा विभक्त गर्न सकिन्छ :

१) तात्क्षणिक/उप–एकाईंको रूपमा (पठन–पाठन अनि क्रियाकलाप सम्पन्न हुँदा हुँदै संशोधन गरिने कार्यपनि एकैसाथ चलिरहनेछ)। उप–एकाईं वा एकाईंको अन्त्यमा यदि आवश्यक भए तात्क्षणिक मूल्याङ्कन र संशोधनी पाठको व्यवस्था गर्न सकिनेछ।

२) एकाईंअनुरूप (एउटा एकाईं पाठको अन्त्यमा मूल्याङ्कन मात्र क्रियान्वयन हुनेछ– त्यो दिनको पिरियडमा अरू पठन–पाठनको कार्य सम्पन्न हुनेछैन।

३) प्रत्येक पर्वको अन्त्यमा (मूल्याङ्कन पत्रमा परिणाम गर्नुपर्छ। संशोधन गर्नलाई विशेष समय दिनुपर्छ।) सार्विक मूल्याङ्कन गरिनुपर्छ।

४) **सामग्रिक मूल्याङ्कन :** वर्षको अन्त्यमा सम्पूर्ण पाठ्य विषयलाई लिएर सामग्रिक मूल्याङ्कनको व्यवस्था गरिनुपर्छ।

५) (क) दोस्रो श्रेणीको अन्त्यमा एक बाह्यमूल्याङ्कन पर्व परिषद्ले ग्रहण गरेको छ जसको परिणाम मूल्याङ्कन पत्रमा भने लिपिवद्ध हुँदैन। १९९९ देखि यो व्यवस्था चलिरहेको छ।

(ख) चौथो श्रेणीको अन्त्यमा पनि परिषद्ले मूल्याङ्कन पर्व ग्रहण गर्ने गरेका छन्। यसद्वारा सम्पूर्ण राज्यभरि प्राथमिक शिक्षाको अग्रगतिलाई निर्णय गर्न सामग्रिकरूपमा चित्र स्पष्ट हुनेछ (यो मूल्याङ्कन पर्वको परिणाम पनि मूल्याङ्कन पत्रमा लिपिवद्ध गरिनेछैन।) यसलाई सिफारिस मात्र गरिएको छ र भविष्यमा यसको विवेचना गरिनेछ।

१३. ७. प्रक्रिया :

१) **पर्ववेक्षण :**

(शिक्षार्थी स्वयंले खाता–किताब राख्नु, बस्ने ठाउँ मिलाउनु अनि श्रेणीकोठा सफा सुग्धर राख्नु, शरीर र पोषाक (लुगाफाटा) सफा राख्नु, विद्यालयका अन्य सहपाठी र शिक्षक/शिक्षिकासंगको आचरण इत्यादि।)

२) **गरेर देखाउनु :**

खेलकुद र शारीरिक चर्चा (कसरत, योग, व्यायाम, व्रतचारी, नृत्य, व्यक्तिगत वा दलगत, खेलकूद–अन्तर्विद्यालय अर्न्तश्रेणी आदि।)

३) **हात–कलमको कार्य :**

सृजनात्मक र उत्पादनात्मक कार्य (कुनै पनि चीज तयारी गर्नु, चित्र कोर्नु, बिरूवा रोप्नु, परिचर्चा, साज सजावट गर्नु, सांस्कृतिक अनुष्ठानहरू आयोजन गर्नु, उपकरणहरू संग्रह गर्नु इत्यादि)।

४) **मौखिक :**

पठन–पाठनसहित कार्यसम्पादनको सबै क्षेत्रमा–प्रश्नको उत्तर दिनु, प्रश्न सोध्नु, कुनै पनि विषय चिन्हित गर्नु, निर्देश पालन, कथन–उपकथन, वर्णन गर्नु, पठन, आवृत्ति इत्यादि)।

५) **लिखित :**

(केवल मूखस्थ भएको कुरा मात्रै लेख्नु होइन तर प्राप्त सामर्थ्य अनुरूप भए/नभएको हेर्नुपर्छ)–वर्ण, शब्द, वाक्य, अनुच्छेद, बोध, परीक्षा, हातले लेख्नु, सुन्दर लिपि आदि।

६) पाठ्यपुस्तकमा सामर्थ्य अनुरूप मूल्याङ्कनका पद्धतिहरू उदाहरणकोरूपमा दिइएको छ। शिक्षक/शिक्षिकाले त्यसको पर्यालोचना गर्नपर्छ। त्यसरी नै ती उदाहरणको समानान्तर वा स्वतंत्ररूपमा मूल्याङ्कनपत्र तयारी गर्नपर्छ।

७) केवल खातामा प्रश्न तयारी गर्नुमात्र नभएर शिक्षक/शिक्षिकाले अन्य कुनैपनि मूल्याङ्कन प्रक्रियाका पद्धतिहरू सोचेर प्रयोग गर्न सक्नेछन्। विद्यालयका विभिन्न ठाउँ, विद्यालय वरिपरिका विभिन्न वस्तुहरू सम्बन्धी मौखिक वा लिखित रूपमा प्रश्न गर्न सक्नेछन्। शिक्षार्थीले शब्द वा वाक्यमा उत्तर दिनेछन्। यसरी पर्यवेक्षणको मूल्याङ्कन गर्न सकिनेछ।

८) मूल्याङ्कनको अन्य प्रकारले जाँच : (शिक्षक/शिक्षिकाले पठनीय विषय अनि विशेष गरेर प्रत्यक्ष अभिज्ञतामूलक क्रियाकलापको क्षेत्रमा मूल्याङ्कनको यो प्रक्रिया ग्रहण गर्न सक्नेछन्)।

मूल्याङ्कनलाई केवल प्रश्नोत्तरको माध्यमले नीरस रूपमा सीमाबद्ध तरीकाले नगरेर यसलाई रूचिकर बनाउने प्रयास गर्नुपर्छ। आकर्षणीय बनाउने प्रक्रियाको रूपमा निम्न उल्लिखित केही पदक्षेपहरू ग्रहण गर्न सकिन्छ।

१३. ८. भाषाको क्षेत्रमा :

	कर्मसूचि	मूल्याङ्कनको विषय	मूल्याङ्कनका प्रकार
क)	गीत एकाईं/समग्ररूपमा...	शुद्ध उच्चारण, छन्दको ज्ञान, एकसूरमा गाउने प्रयास।	– ग्रेड/पर्याय वा मान
ख)	नाँच–एकाईं/समग्ररूपमा...	शारीरिक सक्षमता, अंग सञ्चालन, शरीरचर्चा	– ग्रेड
ग)	आवृत्ति–एकाईं दलगतरूपमा...	शुद्ध उच्चारण, गीत वा कवितामा अन्तर्निहीत भाव उपलब्धि, सठीकस्वरप्रवाह	– ग्रेड
	कर्मसूचि	मूल्याङ्कनको विषय	मूल्याङ्कनका प्रकार

घ)	गद्य पाठ/नाटक...	शब्द, सहीरूपमा वाक्य पढ्न, ठीकसित वक्तव्य दिनु, चरित्र सम्बन्धी धारणा	– ग्रेड
ङ)	हस्तलिपि प्रदर्शनी...	स्पष्टरूपमा मात्राबोधसहित वर्ण शब्द वा वाक्य लेख्नु	– ग्रेड

(यसप्रकारको मूल्याङ्कनले आनन्दमय परिवेश तयार गर्न सकिन्छ।)

चित्र हेरेर मूल्याङ्कन गर्नु :

मौखिक चित्र हेरेर नाम भन्नु	– ग्रेड
चित्रमा के के छन् त्यो सोध्नु	– ग्रेड
चित्र हेरेर परिचयमूलक शब्द वा वाक्य भन्नु	–ग्रेड
लिखित : चित्रको नाम लेख्नु (शब्दमा) चित्रका विषयवस्तुको विभिन्न अंशको नाम शब्द/वाक्यमा लेख्नु	– ग्रेड
चित्रका विभिन्न अंशको कार्य छोटो छोटो वाक्यमा लेख्नु	–ग्रेड

(भाषाको क्षेत्रमाझैं अरू विषयमा पनि विभिन्न प्रकारका मूल्याङ्कन आयोजन गर्न सकिन्छ।)

उपकरण :

मूल्याङ्कनका कुनै कुनै प्रक्रियामा उपकरणको आवश्यक्ता पर्दैन (जस्तै पर्यवेक्षण)। कुनै प्रक्रियामा खुबै कम उपकरण लाग्छ जस्तै मौखिक)। तर पकेट बोर्ड–कार्ड, कटआउट, चित्र, इत्यादि व्यवहार गर्नसकिन्छ।

कुनै कुनै प्रक्रियामा शिक्षार्थी आफैले सृजना धर्मी कार्यको माध्यमद्वारा तयार गरेका बस्तुहरू– वर्ण, शब्द, संख्या, वाक्य, ग्रिटिङ कार्ड इत्यादिको प्रयोग गर्न सकिन्छ।

कुनै कुनै उपकरणहरू संग्रह गर्न सकिने प्रकारका (जस्तै सुकेका पात, माटो, ढुंगा, हाँगा इत्यादि) लेख्ने खाता, पेन्सिल, चक, डस्टर, श्यामपट अनि प्रश्नपत्र इत्यादि छाड़ेर अन्य उपकरणहरू पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ। कम मूल्यमा प्राप्त गर्नसकिने, सहजै बुझ्नसकिने र व्यवहारयोग्य, विचित्र उपकरणहरू शिक्षार्थीलाई आकर्षणीय लाग्दछ। शिक्षार्थी आफैका अंग प्रत्यंग, लुगाफाटा, झोलाहरू पनि मूल्याङ्कनको निम्ति उपकरणको रूपमा प्रयोग गर्नसकिन्छ। यतिसम्म कि श्रेणीकोठालाई पनि उपकरणको रूपमा प्रयोग गर्नसकिन्छ। यतिसम्म कि श्रेणीकोठालाई पनि उपकरणको रूपमा प्रयोग गर्नसकिनेछ।

सांस्कृतिक कार्यक्रममा व्यवहार गरिएको उपकरण जस्तै महापुरूषहरूका जन्मजयन्ती पालन गर्दा तयार पारिएको मञ्च सजाउने उपकरण, नाटकका चरित्रको पोशाक इत्यादिलाई पनि मूल्याङ्कनको उपकरणको रूपमा प्रयोग गर्नसकिनेछ।

१३. ९. मूल्याङ्कन र मान निर्णय :

प्रचलित परीक्षा व्यवस्थामा नम्बर दिएर पास वा फेल चिन्हित गर्ने विषयमा जुन समालोचना उठेको छ त्यसको मूल कारण हो त्यो शिक्षार्थीलाई दिइने मार्क्स यथेष्ट र निर्भरयोग्य छैन। १०० मार्क्समा ५९ मार्क्स दि इन्छ भने यो किन ५८ वा ६० हुन सक्तैन? सत्यतामा भन्नु हो भने परीक्षा बदली भए यो मार्क्स आवश्यक रूपमा बदली हुनसक्छ।

दोस्रो, मार्क्सको आधारमा शिक्षार्थीलाई राम्रो/नराम्रो भनिनु वा व्यक्तिगत कतिपय शिक्षार्थीको मार्क्सद्वारा गुणगतमान निर्णय गर्नु त्रुटिपूर्ण देखिन्छ। अझ अंग्रेजी–नेपाली–गणित–भूगोल प्रवृतिहरू स्वतन्त्र विषयको जाँच गर्दा गणित झैं विषय जस्तै मार्क्स दिइनु त्रुटिपूर्ण हुनसक्छ। अनि यस्तो हाँस्यकर कार्य किन भइरहेछ भन्ने दलीलमा अघिदेखि नै यसरी चल्दै आएको परम्परा छ भन्ने गरिन्छ।

यही मान निर्णय (मार्क्स)–को बदलीमा शुरू भएको छ ग्रेड प्रथा। पूर्णमान १०० प्रतिशत नै राखेर त्यसलाई पाँचवटा भाग वा ग्रेडमा बाँड़िएको छ। अनि यसको तात्पर्य एउटा वर्गमा चिन्हित गर्नु नै ग्रेड प्रथा हो। यहाँ मार्क्स वा संख्याको उल्लेख गरिनु नै त्यही ग्रेड निर्णयमा सुविधाको निम्ति हो।

मूल्याङ्कन पत्रमा यसलाई स्पष्टरूपमा देखाइएको छ।

प्रगतिपत्र (शिक्षार्थीको प्रगतिको स्मारक लिपि गरिन्छ अनि अभिभावकले शिक्षार्थीको प्राथमिक शिक्षामा के कति प्रगति भएको छ भनी बुझ्नसक्छन्)–मा कुनै मार्क्स देखाएको हुँदैन, त्यो प्रगतिपत्रमा मार्क्स भर्ने कुनै ठाउँ नै हुँदैन। यहाँ प्रति पर्व प्रत्येक विषयमा प्राप्त ग्रेड उल्लेख गरिएको हुन्छ। कार्य निर्भर विषयमा तीनैवटा पर्वमा चारवटा ग्रेडमात्र रहनेछ– 'क' खुबै राम्रो, 'ख' राम्रो, 'ग' सन्तोषजनक र 'घ' सहयोगको खाँचो।

विभिन्न पर्यायमा मूल्याङ्कनको प्रकृति र यसलाई कसरी ग्रहण गर्न सकिन्छ भन्ने तथ्य निम्नरूपमा गर्न सकिन्छ –

१३. क) तात्क्षणिक/उप–एकाईअनुरूप :

उप–एकाईं के हो? एउटा पाठको समस्या, अभिज्ञता र उद्देश्य अनुरूप परस्परमा सम्बन्धित एकगुच्छ विषयवस्तु जुन शिक्षार्थीको पठन–पाठनको समयमा सहजै बुझ्न र बुझाउन सकिन्छ अनि शिक्षक/शिक्षिकालाई पनि सो पाठ बुझाउन (शिक्षण कार्यमा) सहजरूपमा सहायता गर्दछ त्यसलाई पाठ/कर्मएकाईं भनिन्छ। अनि त्यही पाठको कुनैपनि सुनिर्दिष्ट अंशलाई उप–एकाईं भनिन्छ। उप–एकाईं/एकाईंअनुसार प्राप्त पिरियड संख्यालाई शिक्षक/शिक्षिकाले भाग गरेर शिक्षण कार्य गर्दा पाठलाई राम्ररी बुझाउन सकिन्छ। यसलाई शिक्षार्थीको उमेर र मानसिक स्तरअनुरूप भने शिक्षक/शिक्षिकाले बुझाउनपर्छ।

मूल्याङ्कन परिकल्पना : यदि ४० मिनटको पिरियड भए प्रथमको २० मिनटको पाठ परिकल्पनामा १० मिनट मूल्याङ्कन गर्नको निम्ति छुट्याउनसकिन्छ। यसको निम्ति १० वा १५ मार्क्स पूर्णमान राख्नसकिन्छ। यो परीक्षामा शिक्षार्थीको मौखिक सामर्थ्य र दक्षताका अग्रगतिको परिमाण अनि शिक्षार्थीमा भएको दुर्बलता चिन्हित गर्ने लक्ष्य राख्नपर्छ। यसको निम्ति मौखिक वा लिखित दुवै प्रकारको जाँच गर्नसकिन्छ। रहेको १० मिनट संशोधनको कार्य गर्न सकिन्छ– व्यक्तिगत र दलगतरूपमा संशोधनी कार्य गर्नपर्नेछ।

ख) सामयिक मूल्याङ्कन : परिकल्पना :

१) एउटा एकाईंको अन्त्य भएपछि वा केही एकाईंको अन्त्य भएपछि सामयिक मूल्याङ्कन गरिनुपर्छ यो प्रकारको मूल्याङ्कनमा शिक्षार्थीद्वारा पठन–पाठन विषयमा अर्जित ज्ञान, बोध र प्रयोग सम्बन्धी अनि कर्मनिर्भर विषयमा कार्यको माध्यमले पारदर्शिता उन्नयन प्रचेष्टा जाँच गरिनेछ। यसप्रकारको मूल्याङ्कनमा लिखित प्रश्नपत्र हुनेछैन। शिक्षार्थीले कागत वा खाता लिएर आउनेछन् शिक्षक–शिक्षिकाले शिक्षार्थीको नाम, क्रम संख्या र श्रेणी त्यो कागज वा खातामा लेख्ने निर्देश दिनेछन्।

२) एकदेखि डेड़ घण्टा यो परीक्षा चल्नेछ। शिक्षक/शिक्षिकाले अघिबाटै प्रश्न तयारी गरेर ल्याउन पर्नेछ। प्रथममा श्यामपटमा २/३ वटा प्रश्न लेखिदिनु पर्नेछ अनि ती प्रश्न समाधान गर्नलाई निर्दिष्ट समय तोकिदिनुपर्नेछ। कस्तो प्रकारले प्रश्नको उत्तर दिनुपर्छ त्यो राम्ररी बुझाउनपर्नेछ। ती प्रश्नहरू सकिएपछि पुनः २/३ वटा प्रश्न श्यामपटमा लेखिदिन पर्नेछ। यो प्रक्रिया समय रहुञ्जेल गर्न पर्नेछ।

३) **सामयिक मूल्याङ्कनको मार्क्स :** पाठएकाईंको आयतन हेरेर २० देखि ४० मार्क्ससम्म एउटा एकाईंको निम्ति राख्नपर्नेछ। अनुपस्थिति शिक्षार्थीको निम्ति अर्को परीक्षा व्यवस्था गर्नपर्नेछ।

४) **संशोधन :** यसपछिको पिरियडमा संशोधन कार्य गर्नसकिनेछ। शिक्षक/शिक्षिकाले अवस्था अनुसार व्यक्तिगत र दलगतरूपमा संशोधन कार्य गर्न पर्नेछ रहेको समय निर्दिष्ट विषयको पाठ–परिकल्पना शिक्षक/शिक्षिकाले गर्नुपर्नेछ।

ग) पर्व अनुसार (पार्विक) मूल्याङ्कन :

प्रत्येक पर्वमा लिखित परीक्षाको पूर्ण अंक ७० र मौखिक ३० गरेर १०० मार्क्सको पूर्णमान राख्नपर्ने।

घ) सामग्रिक मूल्याङ्कन :

वर्षको अन्त्यमा वार्षिक परीक्षाको रूपमा नै यो सामग्रिक मूल्याङ्कन गरिनुपर्छ।

ङ) बाह्य मूल्याङ्कन :

पश्चिम बंगालका प्रत्येक सरकारी प्राथमिक पाठशालामा सन् १९९९ सालदेखि दोस्रो श्रेणीको अन्त्यमा दुई वर्षको पाठलाई लिए यो बाह्यमूल्याङ्कन व्यवस्था शुरू गरिएको छ। बाह्यमूल्याङ्कनको मूल उद्देश्य प्राथमिक स्तरमा प्रचलित धारावाहिक र अनवरत मूल्याङ्कन व्यवस्थालाई अझ सुदृढ़ गराउनु हो। मूल्याङ्कनको विषयहरू प्रथम भाषा नेपाली र गणित दुई वटाछन्। एउटा प्रश्नोत्तर पुस्तिकामा यी विषयको मूल्याङ्कन गरिन्छ जसमा एउटा पाठशालाका शिक्षक/शिक्षिका अर्को पाठशालामा गएर परीक्षा लिनेछन् अनि मूल्याङ्कन शेष भएपछि ती उत्तर पुस्तिका जाँच गरेर मार्क्ससमेत दिएर तालिका (Tabulation) तयारी गर्नेछन्। अर्को दिननै पाठशालामा ती परीक्षा दिने विद्यार्थीको उत्तर पुस्तिका हेरेर तिनीहरूको परिणाम अनुसार सबल र दुर्बल छुट्याई दुर्बलहरूलाई संशोधन पाठको व्यवस्था शिक्षक/शिक्षिकाले गर्नेछन्। यी उत्तर पुस्तिकालाई एक वर्षसम्म विद्यालयमा अभिभावकलाई देखाउनलाई संरक्षण गरेर राख्न पर्नेछ।

ध्यानमा राख्नुपर्ने विषय के छ भने यो बाह्यमूल्याङ्कन व्यवस्था कुनैपनि शिक्षार्थीलाई परीक्षा व्यवस्था वा पास/फेर गराउने र प्रतियोगिताको रूपमा गरिएको होइन तर सत्यतामा हेर्नु हो भने यो बाह्यमूल्याङ्कन एक प्रकारले सफलता निर्णयको सूचक स्वरूप निर्देशकको रूपमा समीक्षा मात्र गरिएको हो। यसलाई हेरेर केवल शिक्षार्थीको दुर्बलता मात्र चिन्हित गर्नु होइन तर पाठशालामा हुने पाठ परिचालना, पाठ्ययपुस्तक रचना, शिक्षार्थीले प्राप्त गर्ने सामर्थ्यहरू। प्रश्नोत्तर पुस्तिकामा विषय अनुरूप प्रश्न राख्दा सामर्थ्य अनि विषय जाँचगर्दा हरदर ६०–८० प्रतिशत शतांश हुनैपर्छ।

संशोधनी पाठः पछि पर्नेलाई केही उपायहरू :

क) मूल्याङ्कन ठीकसित गरिएपछि परेका शिक्षार्थीलाई सहजै चिन्हित गर्न सकिनेछ।

ख) पछि परेका शिक्षार्थीको निम्ति कुनैपनि कार्यक्रम ग्रहण गर्ने समयमा पछि परेका सठीक कारण खोज्नुपर्छ।

ग) कारणहरू यस्ता पनि हुनसक्छन–पारिवारिक असम्पन्नता (आर्थिक र सामाजिक दुर्बल), घरमा पढ़ने–लेख्ने परिवेश नहुनु, खाता–किताब यत्नसित नराख्नु, विद्यालय र शिक्षक/शिक्षिकासंग सहायता माग्न संकोच गर्नु, शिशु श्रमिकको रूपमा काम गर्नु, पढ़न नसक्दा हीनताबोध अनुभव गर्नु इत्यादि कतिपय पठन–पाठनमा पछि पर्ने कारणहरू हुन सक्छन्।

घ) पठन–पाठनमा नै दुर्बलता छ/छैन त्यसको समीक्षा गर्नुपर्छ।

ङ) दीर्घ अभिज्ञताको माध्यमद्वारा शिक्षक/शिक्षिकाले अवश्य नै शिक्षार्थीको आचरण लक्ष्य गर्छन् अनि शिक्षार्थी पछि पर्नुको कारण सहजै खोज्नेछन्। यस विषयमा शिक्षक/शिक्षिकाले यी आचरणगत परिवर्तन ल्याउनुलाई सठीक पद्क्षेप लिएर अपेक्षित परिवर्तन गराउनुपर्ने क्षेत्रमा विशेष लक्ष्य राखेर कार्य गर्नुपर्नेछ।

च) शिक्षक/शिक्षिकाले शिक्षार्थीहरूप्रति आत्मीयतापूर्ण सहानुभूति राखेर पछि परेका दुर्बलता कतिसम्म हटाउन सकिएको छ र सकिनेछ त्यो विषयमा गम्भीर भई सोच्नपर्नेछ।

छ) संशोधनी पाठलाई पनि सामर्थ्य अनुरूप नै सम्पन्न गर्नपर्नेछ। अर्थात् पठन–पाठन र मूल्याङ्कन जसरी सामर्थ्यअनुरूप हुन्छन् संशोधनमा पनि मूलतः त्यही भाव हुनपर्छ। जस्तै भाषाको क्षेत्रमा वर्णको सठीक मात्राको व्यवहार, हस्तलिपि, वर्णद्वारा शब्द र शब्दद्वारा वाक्यगठन, वाक्यद्वारा भावप्रकाशको क्षमता इत्यादि।

१३. ९. पाठ सारांश

यस पाठमा हामीले परीक्षाको सट्टा मूल्याङ्कन व्यवस्था लागू गरिने तथा यसरी मूल्याङ्कन गर्दा एक जना शिशुको विभिन्न पक्षहरूलाई पर्यवेक्षण गरी उनीहरूको मान उच्च गर्ने दिशामा शिक्षक/शिक्षिकाको निरन्तर प्रयास बारे पढ़यौं। मूल्याङ्कन गर्दा याद गर्नु पर्ने विषयहरू परिकल्पना, प्रक्रिया र उपकरणहरू, विभिन्न प्रकारका मूल्याङ्कन, तथा मूल्याङ्कन गरी सकेपछि पछि परेका विद्यार्थीहरूलाई शिक्षक–शिक्षिकाहरूले कसरी सहयोग गर्नुपर्छ भन्ने विषयमा विस्तृत रूपमा जानकारी पाउन सक्यौ।

१३. १०. तपाईंको प्रगति जाँच गर्नोस्

१) मूल्याङ्कन भनेको के हो?

२) मूल्याङ्कन किन जरूरी छ?

३) मूल्याङ्कन र परीक्षामा के भिन्नता छ?

४) जाँच (Test) भन्नाले के बुझिन्छ?

५) मूल्याङ्कनलाई कति भागमा विभक्त गर्नसकिन्छ? के के?

६) मूल्याङ्कनका प्रक्रियाहरू के के हुन्?

७) तात्क्षणिक मूल्याङ्कन भनेको के हो?

८) संशोधनी पाठको जरूरी किन पर्छ?

१४. पाठ योजना (Lesson plan)

१४. १. भूमिका
१४. २. बृहत पाठ योजना तयारी अनि प्रस्तुतिकरण
१४. ३. बृहत पाठ योजनाका नमूना

१४. १. भूमिका

अघिल्ला वर्षमा हामीले शिक्षण कौशलसित सम्बन्धित अणु शिक्षण पाठ योजना बारे जानकारी पायौं। अब यहाँ पाठ योजनाको अनिवार्यता, यसको तयारी तथा प्रस्तुतिकरण बारे जान्ने छौं।

१४. २. बृहत पाठ योजना (MACRO LESSON PLAN)

श्रेणीमा साधारणत पढ़ाईने समय ३५ देखि ४० मिनटको हुन्छ। यस अवधिमा कुनै पनि विषय पढ़ाउनको निम्ति शिक्षक–शिक्षिकाले जुन प्रस्तुतिकरण लिन्छन्, आवश्यक शिक्षण सहायक जोगाड़ गर्न, प्रश्नहरूको सोधाई, श्यामपटमा गरिने कार्य अनि अन्तमा गएर विद्‌यार्थीहरूको मूल्याङ्कन गर्नमा पाठ योजनाले सहयोग गर्छ।

यसर्थ, श्रेणीमा पढ़ाइने विषयको निम्ति शिक्षक शिक्षिकाले उक्त जम्मै विषयको तयारीपनलाई जुन योजना बचाउँछन् त्यसैलाई बृहत शिक्षण पाठ योजना (Macro Lesson plan) भनिन्छ।

यहाँ तल साधारणत एक बुहत शिक्षण पाठ योजनाको नमूना दिइएको छ। अझ यसबारे विस्तृत रूपमा पछिबाट हुने वर्कसप अवधिमा चर्चा गरिनेछन्।

बृहत शिक्षण पाठयोजनाको नमूना

विद्यालयको नाम : सरकारी नि॰ बु॰ पा॰
श्रेणी : चौथो
औसत उमेर : १० +
शिक्षिक/शिक्षिकाको नाम : नैनकला राई
मिति : २३.०२.२०१२

उद्देश्य
- **प्रत्यक्ष :** छात्र–छात्राहरूको सुनाई, पठन अनि बोध र प्रयोग दक्षताको विकास गराउनु
- **परोक्ष :** आजको पाटको आधारमा मीठोबोलीको प्रभावबारे नैतिक ज्ञान प्रसार गर्नु।

विषय : मातृभाषा
विशेष पाठ : मीठो बोली (कविता)
पाठ विभाजन :
आजको पाठ : मीठो बोली (सम्पूर्ण)

सोपान	विषय	पद्धति विवरण	श्यामपट कार्य	छात्र–छात्राको कार्य	उपकरण प्रयोग
प्रस्तुति (Preparation)	पूर्व ज्ञानको परीक्षा आजको पाठ घोषणा	श्रेणीमा प्रवेश गरेपछि श्रेणी विन्यास गर्नेछु अनि आवश्यक परे उपस्थिति लिनेछु। आजको पाठप्रति विद्यार्थीहरूको ध्यान आकर्षण गराउन निम्न लिखित प्रश्नहरू सोध्नेछु। (१) नानी! हो तिमीहरू आमा–बाबासित कसरी बोल्छौ? (२) आफ्ना गुरूहरूसित कसरी बातचित गर्छौ? तिमीहरूले क–कसका कविताहरू पढ़ेका छौ? उत्तर पाएपछि आज हामी 'मीठो बोली' (कविता) पढ़ने छौं भनी आजको पाठ घोषणा गर्नेछु।	विषय – नेपाली विशेषपाठ : मीठो बोली (कविता)	छात्र–छात्रहरूले पूर्व ज्ञानको परीक्षामा सोधिएका प्रश्नहरूको उत्तर दिने चेष्टा गर्ने छन्।	
उपस्थापन (Presentation)	**विषय** 'मातृभाषा' (नेपाली) **विशेष पाठ** 'मीठो बोली) (कविता)	आजको पाठ घोषणा भएपछि म मीठो बोली कविताको आदर्श पठन गर्नेछु, सम्पूर्ण श्रेणीलाई पनि पढ़न लाउनेछु अनि दुइ/चार विद्यार्थीहरूलाई सस्वर वाचन गर्न लाउनेछु। आजको पाठको लहर–लहर, गर्दै, कठिन शब्दार्थहरूको अर्थ श्यामपटमा लेखिदिँदै सरल भाषामा व्याख्या गर्नेछु। कविले भन्नु भएको छ सबैसित (सानो–ठूलो) साथी संगीसित मीठो प्रकारले बातचित गर्नुपर्छ। मीठो बोली बोल्दा कुनै डर हुँदैन। बुड़ाबुड़ी सबैसित मीठो बोली गर्नुपर्छ, रूखो बोली बोलेर अरूलाई पीरमा पार्नु हुँदैन। बुड़ाबुड़ी भनेको	**शब्दार्थ** रूखो = खस्रो, नमीठो बोली तुच्छ = नीच पीर = दुःख हर्षित = प्रसन्न/खुशी वचन = बोली	छात्र–छात्रहरूले शिक्षकको निर्देश पालन गर्दै सस्वर वाचन गर्नेछन्।	श्यामपट चक डस्टर पाठ्य पुस्तक रूखोबोली र मीठा बोली बोल्दाको प्रभाव चार्ट

सोपान	विषय	पद्धति विवरण	श्यामपट कार्य	छात्र–छात्राको कार्य	उपकरण प्रयोग
		उमेर पुगीसकेका हुन्छन! अनि तिनीहरू धेरैदिन बाच्दैनन्। रूखो बोली सुन्दा खेरी उनीहरू मनदुखाउँछन् मीठो बोली बोल्दा कसैको धन खर्च हुँदैन तर जोसित मीठो बोली बोल्छौं, उनीहरू खुशी हुनेछन्।		श्यामपटमा लेखिदिएको शब्दार्थ खातामा सार्नेछन् अनि बीच–बीचमा सोधिएको प्रश्नहरूको उत्तर दिने कोसिस गर्नेछन्।	
प्रयोग (Application)	श्रेणी कार्य	आजको पाठ बुझे–नबुझेको जाँच गर्न केही प्रश्नहरू मार्फत विद्यार्थीसित विचार–विनिमय गर्नेछु। (१) हामीले सबैसंग कस्तो बोली गर्नुपर्छ? (२) रूखो बोली बोल्नाले के हुन्छ? (३) मीठो बोली बोल्दा मन कस्तो हुन्छ?		सोधिएको प्रश्नहरूको उत्तर दिनेछन्	
	गृह कार्य	गृहकार्यको रूपमा आज पढ़ाइएको कविता मुखस्थ गर्ने साथै कठीन शब्दमा अर्थहरू याद गरेर आउने आदेश दिनेछु।		गृहकार्यका कामहरू घरबाट गरेर ल्याउनेछन्।	
	तात्क्षणिक मूल्याङ्कन	श्रेणीकार्यको रूपमा सोधिएको प्रश्नहरूको उत्तरको आधारमा विद्यार्थीहरूके मूल्याङ्कन गर्नेछु। (क) उमेश, कविता (ख) रेखा, सविता (ग) धन्सुराम (घ) ..... (ङ).....			
	श्रेणी त्याग	घण्टीको संकेत पाएपछि श्यामपट सफा गरेर चलाएको सामाग्रीहरू यथोचित स्थानमा राखी श्रेणी त्याग गर्नेछु।			

नेपाली

Sl No.	Unit Name	No. of PCPs	Time Alloted
1.	प्रथम श्रेणीदेखि आठौं श्रेणीसम्म प्रचलित नेपाली (प्रथम भाषा)– को पाठय सूची अनि प्रारम्भिक स्तर पाठयसूचीको विषयहरूमा विस्तृत अनि पयार्प्त ज्ञान, प्राथमिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणमा व्याकरण शिक्षणको प्रयोजनीयता	2	3 hrs
2.	प्रारम्भिक स्तरमा मातृभाषा शिक्षणका लक्ष्य, उद्देश्य अनि आवश्यकता –		
	2.1 भाषा शिक्षणका विभिन्न स्तरहरू	2	3 hrs
	2.2 मातृभाषा शिक्षणका विभिन्न पद्धतिहरू		
	2.3 मातृभाषा शिक्षणका सहायक उपकरणहरू		
3.	राष्ट्रीय पाठयक्रम रूपरेखा – 2005 अनि त्यस अनुरूप ब्याकरण	1	$1\frac{1}{2}$
	शिक्षण प्रयोजनियता (सम्मोचारित, पर्यायवाही, विपरीतार्थक, अनेकार्थक, वाग्धारा, वाक्य गठन, वाक्य भेद, चिन्ह प्रयोग, भाव विस्तार आदि)	1	$1\frac{1}{2}$ hrs
4.	प्रतिवेदन रचना, अनुच्छेद रचना, पत्र–रचना, निबन्ध रचना	2	1 hrs
5.	उच्चारण अनि हिज्जे समस्या अनि समाधानका उपाय	1	$1\frac{1}{2}$ hrs
6.	सार्मथ्य आधारित पाठ योजना अनि पाठ परिकल्पना प्रस्तुतिकरण	1	$1\frac{1}{2}$ hrs
7.	अनवरत अनि सार्विक मूल्यांकन अनि एकाई जाँच पत्र तयारी	1	3 hrs
8.	प्रक्रियागत आधारित पाठ योजना (Process Based Lesson Plan)	2	3 hrs
	शिक्षण पूर्वाधि (Pre – Intership)		
	शिक्षण प्रक्रिया (Intership)	12 PCP	18 Hrs.

प्रक्रियामूलक शिक्षण
(Processed Based Teaching)

भूमिका :

शिक्षण (Teaching) एक दक्षतामूलक (Skill based) पेशा अथवा कार्य हो। शिक्षण तथा पाठदानको कार्य लाई उचित ढंगमा संचालन गर्नको लागी शिक्षक-शिक्षिकालाई आवश्यकता पर्दछ। यस्तो प्रकारको दक्षता वृद्धिको निम्ति विभिन्न कौशल अवलम्बन गर्नुपर्दछ। प्रक्रियागत शिक्षण (Prossed Based Teaching) वा प्रक्रियागत शिक्षण पाठ योजना यस्तै प्रकारको एउटा शिक्षण कौशल हो। किय आचिसन नामक भएका एकजना अमेरिकन शिक्षाविदलाई प्रक्रियामूलक शिक्षण जनक भनिन्छ। तिनले भिडियो टेप रेकर्डरलाई शिक्षणको कार्यमा व्यवहार गरेका थिए एवं प्रस्ताव गरेका थिए कि यस प्रकारको यान्त्रिक कौशलको माध्यमद्वारा अपेक्षाकृत वस्तुनिष्ठ (Objectively) शिक्षण दक्षताको (Teaching-skill) विकास गराउनु संभव हुन्छ। आचिसनको यो प्रारम्भिका प्रस्ताव भविष्यमा गएर नयाँ शिक्षण प्रणालीको रूपमा स्थापित भएर गयो। यहि शिक्षण कौशललाई प्रक्रियागत शिक्षण अथवा Prossed Based Teaching भनिन्छ।

प्रक्रियामूलक -शिक्षण परिभाषा (Definition of Prossed Based Teaching) :

अणु-शिक्षणको सवै जनाले ग्रहण गर्न सकने कुनै एउटा स्थिर अनि निविचत परिभाषा छैन। विभिन्न शिक्षाविदहरूले यसैलाई विभिन्न रूप अनि प्रकारले व्याख्या गरेका छन। शिक्षाविद **बुश (Bush)** ले भनेका छन् ''प्रक्रिया गत शिक्षण एक यस्तो प्रकारको शिक्षण-प्रशिक्षण कौशल हो जसको माध्यमद्वारा शिक्षक-शिक्षार्थीले निर्दिष्ट कतिवटा दक्षता धेरै कम समयमा अपेक्षाकृत नियन्त्रित चर्चाको सुयोग पाउने छन्।'' शिक्षाविद् **डि० डब्लू० आलेन (D.W. Allen)** ले प्रक्रियागत शिक्षण पाठ योजनाको परिभाषा दिदै भनेका छन् — ''समय श्रेणी आयतनको पक्षभन्दा अणु शिक्षण संक्षिप्त शिक्षण हो।''

आधुनिक कालमा शिक्षाविद् और मनोविद्गणले प्रक्रियामूलक शिक्षणको सबैले ग्रहण गर्न सक्ने परिभाषा निर्धारित गरेका छन् — ''शिक्षण सम्बन्धित एकाई दक्षताको अपेक्षाकृत क्षुद्र सरल परिवेशमा कम समयमा चर्चाको निम्ति जुन शिक्षण प्रणाली प्रयोग गरिन्छ त्यसलाई **प्रक्रियागत शिक्षण (Processed Based Teaching)** भनिन्छ।''

रचनाको समय शिक्षकले शिक्षणकौशल पद्धति, शिक्षा उपकरण (TLM) व्यवहार गर्दा धेरै विचार पुरयाउनु पर्दछ। यसपछि छात्रहरूको आग्रह, रूचि, दक्षता, सामर्थ्य इत्यादि विचार गर्नुपर्दछ। यसको फलस्वरूप, शिक्षार्थीले मनोवैज्ञानिक ढंगमा पाठ ग्रहण गर्ने सुयोग पाउदँछन्।

प्रक्रियामूलक-शिक्षणका विशेषताहरू (Characteristic of Process Based Teaching) :

प्रक्रियामूलक-शिक्षणका (Process Based Teaching) का कतिपय विशेषताहरू छन् —

1. **स्वभाविक शिक्षण प्रक्रिया :** प्रक्रियामूलक शिक्षण कुनै यान्त्रिक शिक्षण प्रक्रिया होइन। यो एउटा स्वभाविक शिक्षण प्रक्रिया हो।
2. **शिक्षक-शिक्षकाको आचरणमा उन्नति :** प्रक्रियागत शिक्षण शिक्षकको आचरणमा उन्नति ल्याँउदछ एवं श्रेणी-शिक्षणमा शिक्षकको क्षमता वृद्धि गर्दछ।
3. **विश्लेषणत्मक (Analytical):** प्रक्रियागत शिक्षण एक विश्लेषण प्रणाली हो। यहाँ शिक्षण परिस्थितिको कुनै एउटा अंशलाई महत्व दिइने गरिन्छ।
4. **शिक्षार्थीहरूको अल्प संख्या :** प्रक्रियागत शिक्षणमा श्रेणीमा अल्प संख्या (5 देखि 7 जना) शिक्षार्थीहरूलाई केन्द्रित गरेर शिक्षण संचालन हुन्छ।
5. **थोरै समयमा शिक्षण :** प्रक्रियामूलक शिक्षणमा साधारण शिक्षणमा जस्तो धेरै समय खर्च गर्नु पर्दैन। साधारणतः कुनै एक दक्षतामाथि चर्चा गर्नुको निम्ति पाँच दश मिनट समय लाग्छ।

तत्काल मूल्यांकनमूलक शिक्षण : प्रक्रियामूलक शिक्षणमा तत्काल मूल्यांकन माथी महत्व दिइन्छ। यो शिक्षणमा Feed back तत्कालै ग्रहण गारिन्छ।

यसबाहेक पनि प्रक्रियामूलक शिक्षण मूल्यांकन आधारित एवं यो शिक्षण प्रक्रिया 6 वटा स्तरहरू भएर अग्रसर हुदँछ यी स्तर तथा उपदानहरू हुन् —

(क) पर्यवेक्षण (ख) विश्लेषण (ग) प्रस्तुति (घ) अनुशीलन (ङ) मूल्यांकन (च) संचालन।

श्रेणीगत शिक्षण (Intership Teaching) एवं प्रक्रियामूलक शिक्षणमाझ तुलना
(Difference between process based and process based teaching)

साधारण शिक्षण (Teaching) अथवा श्रेणीगत शिक्षण संग प्रक्रियामूलक शिक्षणको पार्थक्यहरू निम्नलिखित रूपमा आलोचना गरिन्छ।

श्रेणीगत शिक्षण/ वृहत (Internship Teaching)	**प्रक्रियामूलक शिक्षण (Pre-Internship Teaching)**
1. साधारण शिक्षणको प्रधान उद्देश्य हो शिक्षार्थीहरूको निर्दिष्ट उद्देश्यनुरूप ज्ञान लाभ गर्नुसाहयता गर्नु।	1. प्रक्रियामूलक शिक्षणको प्रधान उद्देश्य हो शिक्षकउई प्रशिक्षण दिनु अनि उनीहरूमा पारदर्शिता वृद्धि गर्नुहो।
2. साधारण शिक्षण संश्लेषणधर्मी हुन्छ।	2. प्रक्रियामूलक शिक्षण विश्लेषणधर्मी हुन्छ।
3. शिक्षार्थीको संख्या निकै बेसी हुन्छ।	3. शिक्षार्थीको संख्या अनेक कम हुन्छ।
4. श्रेणीमा अध्ययनरत छात्रहरू नै शिक्षार्थीहरू हुन्।	4. प्रशिक्षणार्थी शिक्षक/शिक्षिकाहरू शिक्षार्थी हुन्छ।
5. श्रेणी कोठाको परिस्थिति वास्तविक (Real) अनि स्वाभाविक हुन्छ।	5. श्रेणी परिस्थिति प्राय: जसो कृत्रिम हुन्छ।
6. समय साधारणत: 40–45 मिनट लाग्छ।	6. समय 5–7 मिनटको हुन्छ।
7. फिडव्याक (Feedback) पाउन समय लाग्छ।	7. साथ साथै ''फिडव्याक'' पाइन्छ।
8. श्रेणीगत पाठ दान गर्दा शिक्षार्थी–शिक्षक उनीहरूको भूल संबन्धमा सचेत नहुन पनि सक्छन्।	8. प्रक्रियामूलक शिक्षण शिक्षार्थी–शिक्षण उनीहरूको त्रुटिहरू सम्बन्धमा सहपाठीहरूबाट साथ–साथै जान्न पाउनेछन्।
9. श्रेणीगत पाठदान–परिकल्पना, उपस्थान, प्रयोग, मूल्यांकन यी चार सीमाहरूमा सिमित हुन्छ।	9. पर्यवेक्षण, विश्लेषण, प्रस्तुति, अनुशीलन, मूल्याङ्कन, संचालन सीमाहरूमा सिमित हुन्छ।

प्रक्रियामूलक शिक्षण चक्र (Process based Teaching cycle): प्रक्रियामूलक शिक्षण एक दक्षता आधारित शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम (Programme) हो। शिक्षार्थी–शिक्षकले यो शिक्षण दक्षताद्वारा पाठदान गर्ने सर्वाधिक लाभ गर्ने छन्। प्रक्रियामूलक शिक्षणका दक्षताहरू आर्जन गर्दा विभिन्न स्तहरू (माथि उल्लेख) लाई आत्मसाथ गरेर अधि बड़नु पर्दछ। यी विभिन्न चरणहरूलाई स्तर अनि क्रम अनुसार भाग गरेर आलोचना गर्न सकिन्छ। जस्तै–प्रस्तुति स्तर (Orientation phase) एवं अनुशीलन स्तर (Practice phase).

प्रस्तुति स्तर (Orientation phase): प्रस्तुति स्तरमा विद्यार्थी–शिक्षकले जे सिक्छन् ती हुन् — प्रक्रियामूलक शिक्षण, कौशल, शिक्षा–दक्षता, फिडव्याक प्रक्रिय, पाठयोजना प्रस्तुति एवं प्रक्रियामूलक विषयसंग सम्बन्धित सटीक धारणा लाभ गर्नु हो। प्रस्तुति स्तलाई निष्ठासंग अनि सम्पन्न गर्नुपर्दछ। यदि यसो नभए शिक्षक–शिक्षार्थी कसो गर्नु उचित हुन्छ अथवा कसरी प्रक्रियामूलक शिक्षण सिक्नेछन्, भन्ने विषयलाई सधै ध्यानमा राख्नु पर्दछ।

अनुशीलन स्तर (Practice phase) : प्रक्रियामूलक शिक्षण (Process Based Teaching) को प्रधान स्तर हो अनुशीलन। शिक्षक-शिक्षार्थी जति धेरै अनुशीलन गर्नेछन् त्यति धेरै त्यस विषयमा आफ्नो दक्षता र ज्ञानको वृद्धि गर्ने छन्। 6 वटा स्तरहरूलाई लिएर शिक्षक-शिक्षार्थीहरूले अनुशीलन स्तरलाई अगाड़ी लिएर लैजानु पर्छ।

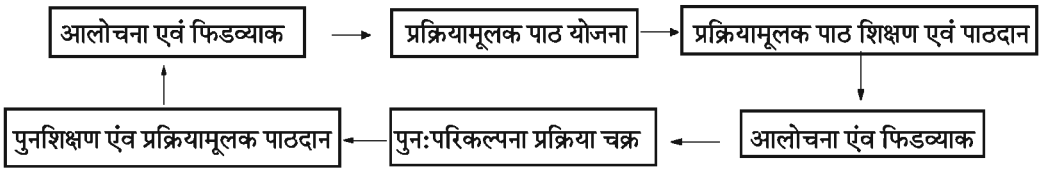

प्रथम स्तर : प्रथम स्तरमा शिक्षार्थी-शिक्षकले प्रक्रियामूलक पाठ परिकल्पना वनाँउदा जुन दक्षता (Skill) आउदँछ ती सबैलाई उन्नत गर्नु को निम्ति तिनीहरूको स्तर अनुसार बुझेर बनाउन आवस्यक देखिन्छ।

द्वितीय स्तर : यस पश्चात शिक्षार्थी-शिक्षकले त्यस पाठयोजना अनुसार पूर्व निर्धारित अल्प शिक्षार्थीहरूको अगाड़ी आफ्नो दक्षता प्रस्तुत गर्नेछन्। यो स्तरलाई भिडियो टेप वा अडियो टेपद्वारा संरक्षित राख्न सकिए अझ बढ़ी राम्रो हुनेछ।

तृतीय स्तर : तृतीय स्तर आलोचना र फीडव्याकको स्तर हो। यो स्तरमा अपेक्षा गरिएको दक्षलाई शिक्षक-शिक्षार्थीले सठीक रूपमा प्रस्तुत गर्न सके सकेनन् कहाँ कहाँ के भूल भयो त्यसलाई लिएर आलोचना गरिनेछ। सठीक प्रस्तुति दिएमा प्रशंसा अनि भूल भएमा कसरी त्यो भूललाई सध्याउन सकिन्छ त्यससंग सम्बन्धित परामर्श दिने गरिन्छ। यस्तो स्थितिमा सुपरभाइजर वा उपस्थित अनुभवी शिक्षकको भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हुदँछ।

चतुर्थ स्तर : तृतीय स्तरको आलोचना एवं फीडव्याकको आधारमा शिक्षार्थी-शिक्षकले परिकल्पना पुर्न-नविनीकरण गर्दछन्।

पञ्चम स्तर : यस स्तरमा पुन: शिक्षक-शिक्षकले संसोधित पाठ-योजनालाई अल्प सदस्यहरू लिएर फेरि एउटा शिक्षार्थी दललाई शिक्षण गर्नेछन्।

षष्ठम स्तर : षष्ठम स्तर पुन: पाठदानमाथि आधारित आलोचना एवं फिडव्याक गर्ने काम हुदँछ।

यसरी नै जबसम्म शिक्षक-शिक्षार्थीहरूबाट अपेक्षा गरिएको दक्षता र परिणाम प्राप्त हुँदैन तबसम्म शिक्षण-पुर्नशिक्षणको पुनरावृत्ति चलिरहन्छ।

प्रकियमूलक शिक्षण पाठ-परिकल्पानाका कम अथवा स्तर :
(STEP IN PROCESS BASED TEACHING LESSON PLAN)

प्रक्रियामूलक शिक्षणका पाठयोजनाका उपदान अथवा क्रमसमुहहरूलाई प्रधानत: तीनवटा श्रेणीमा भाग गरेर आलोचना गरिएको छ। ती हुन- (i) प्राक् सक्रिय स्तर (ii) अन्तर सक्रिय स्तर (iii) उत्तर सक्रिय स्तर

(i) प्राक सक्रिय स्तर (Orientation phase) : प्रक्रियामूलक शिक्षण प्रक्रियाको शुरूमा स्वैभन्दा प्रथममा श्रेणी कक्षामा रहेका विशेषज्ञ शिक्षकले शिक्षक-शिक्षार्थी हरूसित प्रक्रियामूलक शिक्षणको सम्वन्धमा आलोचना गर्नेछन्। यो स्तरमा निम्नलिखित कुराहरूलाई मध्यनजर गरिन्छ।

प्रथम स्तर :

(a) प्रक्रियामूलक शिक्षणको सम्वन्धमा धारणा दान।

(b) प्रक्रियामूलक शिक्षणमा व्यवहार गरिनु पर्ने उचित र अनुचित प्रयुक्ति (Technique) हरूको सम्वन्धमा धारणा दान।

(c) प्रक्रियामूलक शिक्षणको पद्धतिलाई लिएर आलोचना गरिन्छ।

(d) प्रक्रियामूलक शिक्षणको कौशल प्रयोग गर्नको निम्ति प्रयोजनीय उपादानहरूलाई कसरी व्यवहार गर्नु पर्दछ त्यस सम्वन्धमा धारणा दान।

(e) प्रक्रियामूलक शिक्षणको गुण र अवगुण विषयमा आलोचना गर्नु।

(f) शिक्षक-शिक्षकको जिज्ञासा अनुसारको भरपर्दो वास्तविक भरपर्दो वास्तविक उत्तर दिनु।

द्वितीय स्तर : द्वितीय चरणमा शिक्षार्थी-शिक्षकलाई शिक्षण दक्षनाहरूको धारण व्याख्या गरिदिनुपर्दछ जसद्वारा शिक्षार्थी-शिक्षकहरूको ज्ञान एवं उपलव्धिमा वृद्धि हुदँछ।

तृतीय स्तर : कुनै विषेश दक्षता (Skill) तृतीय स्तरमा निर्वाचन गर्नु पर्दछ। कारण निर्दिष्ट कुनै समयमा एउटा विषेश दक्षतालाई लिएर प्रक्रियामूलक शिक्षण संचालन हुदँछ।

चतुर्थ स्तर : चतुर्थ चरणमा पूर्व निर्धारित दक्षता अनुसार शिक्षार्थी-शिक्षकलाई मोडल पाठ (आर्दश पाठ) को उपास्थापन (Presentation) गराइन्छ। विशेष उद्देश्य हुन्छ विषेश दक्षता संग-सगै (Components) हरूको प्रर्दशनको माध्यमवाट शिक्षार्थीहरूले देखेर सिक्ने अनुकरण गर्न सक्नेछन्।

मोडेल पाठ विभिन्न प्रकारले गराउन सकिन्छ। जस्तै :

(a) ह्यान्डवुक (Handbook) र सहायक चित्रहरूसगै व्याख्या गरेर।

(b) भिडियो टेपद्वारा पनि व्याख्या गर्ने सकिन्छ।

(c) अडियो टेप सुनाएर व्याख्या गरेर।

(d) सजीव मोडेल प्रर्दशन गर्ने व्यवस्था गरेर जस्तै :कुनै विशेषज्ञ शिक्षकले प्रर्दशनी पाठ (Demonstration Lesson) गराएर।

पञ्चम स्तर : पञ्चम चरणमा मोडेल पाठ पर्यवेक्षण (Observation) गरिन्छ। यस चरणमा जे अनि जसरी पढ़ाइन्छ त्यसलाई हेरेर, सुनेर वुझ्नुपर्छ अनि त्यसलाई पर्यवेक्षण गर्नुपर्दछ। यस चरणमा शिक्षार्थीहरूलाई एक मोडेल पाठको नक्सा दिएको हुन्छ।

(ii) अन्तर सक्रिय स्तर (Interactive phase) :

षष्ठम चरण : छैटौ चरणमा शिक्षार्थीहरूले एउटा मोडेल प्रक्रियामूलक पाठ योजना प्रस्तुत गर्दछन्। प्रक्रियामूलकपाठ योजना ठीक भयो भएन त्यो वुझ्नको निम्ति विशेशज्ञ शिक्षकका परामर्श लनि पर्दछ। प्रयोजन अनुसार विशेषज्ञ शिक्षकल यो पाठ योजना हेररेर संसोधन, संयोजन वा विभाजन गरेर आर्दश प्रक्रियामूलक पाठ योजना तयारीमा साहयता गर्नेछन्।

सप्तम चरण : यस चरणमा शिक्षार्थीको शिक्षण दक्षता अनुशीलनको व्यावस्था गर्नुपर्दछ। त्यसको निम्ति उपयुक्त शर्तपुरण गर्नु पर्दछ।

NCTE प्रक्रियामूलक शिक्षण मोडेल विकाश गनेको निम्ति कतिवटा नयाँ कुराहरू थप्ने सिफारिस गरिएको छ। यी हुन्

(a) श्रेणीमा शिक्षार्थीको संख्या ५ देखि १० जना हुन्छन्।

(b) श्रेणीमा शिक्षार्थी-शिक्षकहरू नै शिक्षार्थी हुन्छन् यसोसले एकै उमेर सीमा भएका शिक्षार्थीहरू आफ्नो साथी समुह छनौट गर्न सक्नेछन्।

(c) समयसीमा ५-७ मिनट हुदँछ।

(d) सुपरभाइज विशेषज्ञ शिक्षक एवं एकै उमेरका सहपाठी साथीहरूको समुहले गर्नेछन्।

अष्ठम चरण : अष्ठम चरणमा शिक्षार्थीहरूले ६ मिनट लगाएर प्रस्तुत गरेको पाठ टीका अनुसार ५-१० जना वास्तव छात्र वा एकै उमेर भएका शिक्षार्थी - शिक्षकको दललाई शिक्षण (teaching) गरिन्छ। विशेषज्ञ शिक्षणलाई पर्यवेक्षण (observation) गर्दछन्। पर्यवेक्षणको समयमा समय अनुसार पाठदान भयो, भएन, आचरण (components)-हरू ठीक छ छैन, व्यवहार गरियो गरिएन इत्यादि कुराहरूलाई ध्यानमा राख्नु पर्दछ।

नवम चरण : नवम चरणमा शिक्षार्थी-शिक्षकले जस्तो प्रर्दशन गर्छन त्यसको आलोचना, विश्लेषण गर्नु, तत्काल फिडव्याक (प्रतिक्रिया) दिनुपर्दछ एवं ती कुराहरू शिक्षार्थी-शिक्षकले सुन सकुन अनि नोट गर्नु सकुन यस प्रकारले भनिनु पर्दछ।

दशम चरण : प्राप्त फिडव्याकको आधारमा शिक्षार्थी-शिक्षकले उनीहरूको परिकल्पना परिमार्जन वा पुर्ननवीकरण गर्दछन्।

एकादश चरण : शिक्षार्थी–शिक्षकले पुनः प्रक्रियामूलक शिक्षण प्रदर्शन गरेर परिमार्जित परिकल्पना अनुसार यस पटक भने शिक्षार्थी–शिक्षक फेरि नयाँ सेटिग वनाउन सक्नेछन्।

वाहौ चरण : फेरि विशेषज्ञ शिक्षक वा एउटै उमेरका साथीहरूको शिक्षण पर्यवेक्षण गरेर फिडव्याक दिनेछन्।
यसरी नै अणुशिक्षणको क्रम संचालन हुदँछः

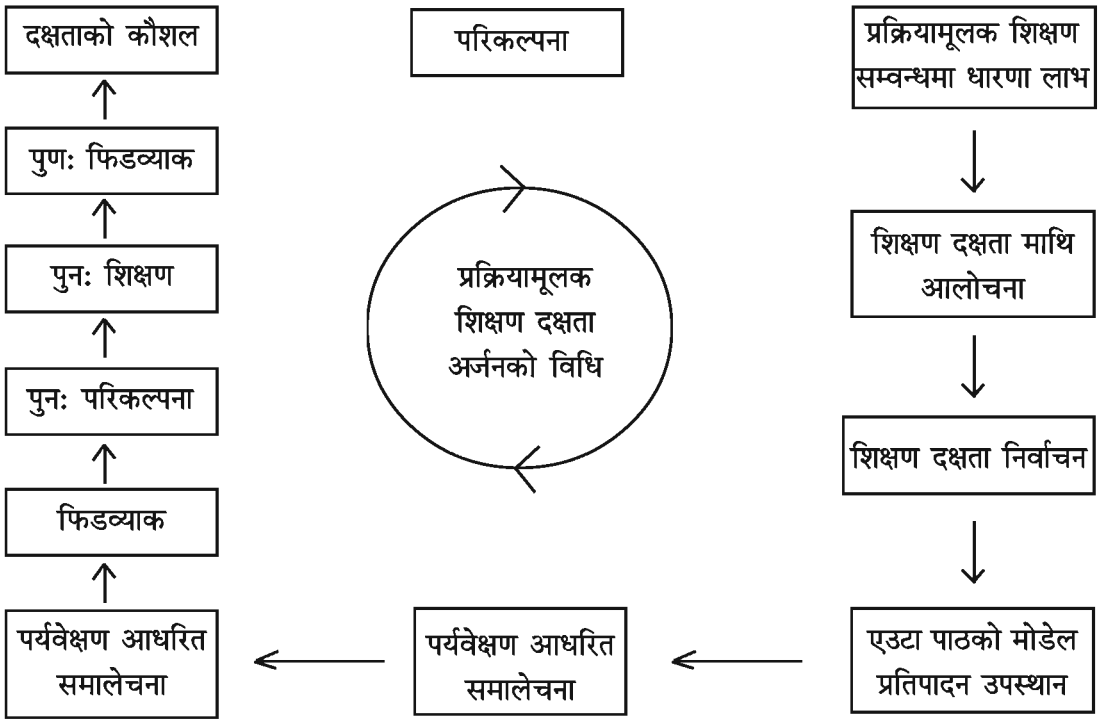

(iii) उत्तर सक्रिय स्तर (Post active phase)

प्रक्रियामूलक शिक्षणको उत्तर सक्रिय स्तरलाई संचालन स्तर भनिन्छ। यो स्तरमा शिक्षार्थी–शिक्षक दक्षतको कौशल आर्जन पश्चात दक्षतालाई उच्च श्रेणी कक्षमा स्वाभाविक परिस्थितिमा यस प्रकारको दक्षता निर्वाचन (Post active phase) व्यवहार गर्न आवस्यक छ शिक्षार्थी–शिक्षकले त्यो गर्न सक्दछन्। यस्ता शिक्षण दक्षता (Teaching Skills) निर्वाचनको समय शिक्षणमूलक उद्देश्यहरूलाई प्रधानता दिनु उचित हुनेछ। शिक्षण दक्षताले शिक्षार्थी–शिक्षकलाई प्रक्रियामूलको शिक्षणको परिस्थितिवाट उनीहरूको अवस्थान परिवर्तन गर्नमा साहयता गर्दछ।

प्रक्रियागत शिक्षणमा सुपरभाइजरको भूमिका (Role of the supervisor in Process Based teaching) : प्रक्रियामूलक शिक्षणमा सुपरभाइजरको नेपृत्वमा ने सुपरभाइजरको संचालित हुदँछ। विशेषज्ञ शिक्षक नै सुपरभाइजरको रूपमा हुदँछ। तिनको शिक्षार्थी–शिक्षकसंग निरन्तर आलोचना गर्दछन् जसले गर्दा शिक्षक–शिक्षार्थीहरूले सिकेको दक्षतालाई वास्तविक परिस्थितिमा श्रेणी कक्षामा प्रयोग गर्न सकनेछन्। प्रथममा तिनले आफ्नो पाठदान गर्नेछन् एवं शिक्षार्थीहरूलाई त्यहि अनुरूप प्रर्दशन गर्नेछन् एवं शिक्षार्थीहरूलाई त्यही अनुरूप प्रर्दशन गर्न लगाउनेछन्। यस पश्चात तिनी शिक्षार्थीहरूको अनुरूप पाठदान तयारी एवं पाठ दान प्रर्दशन गर भन्नेछन्। त्यसै समय तिनले अन्यय श्रेणीको शिक्षार्थीहरूलाई विभिन्न कार्यको दायित्व अर्पण गर्नेछन् अनि दिएको निम्ति निर्देसमा दिनेछन्। ए क–एकजना शिक्षार्थी–शिक्षक प्रशिक्षण लिइ सके प्रश्चात अन्य शिक्षार्थीहरूसिल अथवा शिक्षार्थी समुह तथा दलहरूसित आलोचना निर्धारित पाठ प्रर्दशन विषय माथि गर्नेछन्। यस पश्चात सुपरभाइजरले उनीहरूको मूल्यांकन तालिका (Evaluation sheet) प्रस्तुत गर्नेछन्। एवं शिक्षार्थीहरूसित फिडव्याक विनिमय (Exchange)गर्नेछन्। यो उमेर प्रक्रिया आफ्नो क्रम अनुसार चलिनै रहन्छ। साधरणतः निर्धारित दक्षता शिक्षार्थी हरूमा नआइञ्जेल सम्म सुपरभाइजरले अधिक परिश्रम गर्नुपर्ने हुन्छ।

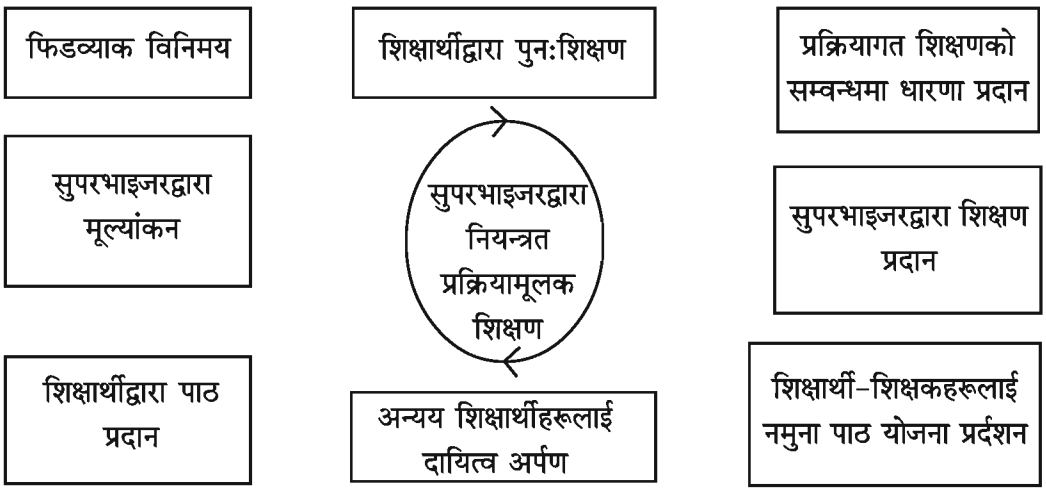

सुपरभाइजर नियन्त्रित प्रक्रियामूलक शिक्षण चक्र

प्रक्रियागत शिक्षणको सुविधा (Merits of Process Based Teaching)

प्रक्रियागत शिक्षणको अनेक सुविधा तथा गुणहरू छन्

१. प्रक्रियागत शिक्षणले शिक्षार्थी-शिक्षकहरूको शिक्षण कौशल आर्जन र विकसित गर्नमा साहयता गर्दछ।

२. प्रकियामूलकु शिक्षण वृहत शिक्षणको एक अंश हो। यदि वृहत शिक्षण सही गर्नु छ भने प्रक्रियामूलक शिक्षणमा दक्ष हुनु आवश्यक छ।

३. शिक्षणका जटिल Task लाई विशेष classroom आचरण का स-साना अनेक दक्षताको प्रयोग गरेर हेर्नुपर्छ। यसर्थ मा के वुझिन्छ भने प्रक्रियामूलक शिक्षणपद्धतिको अर्थ एवं धारणाको उपलब्धि हासिल गर्नुमा सहायता गर्दछ ।

४. विषेश पर्यवेक्षण तालिका अनुसार प्रक्रियामूलक शिक्षण प्रणाली व द्धरूपले एवं वस्तुनिष्ठरूपले पर्यवेक्षण (observation) गर्न सकिन्छ।

५. अनुशीलन (Practice) को माध्ममबाट शिक्षण दक्षता अर्जित हुदँछ। अनुशीलन गरेर सठीक रुपमा शिक्षण दक्षता आर्जन गर्न संभव हुदँछ। शिक्षणको प्रयोगशालामा मूल प्रतिपादन विषय नै प्रक्रियामूलक शिक्षण हो।

६. प्रक्रियामूलक शिक्षण कुनै पनि विषयमा ज्ञान आर्जन साथै दक्ष हुनुमा साहयता गर्छ।

७. प्रक्रियामूलक शिक्षणमा तत्काल फिडव्याक (प्रतिक्रिया) दिन लनि सकिन्छ।

८. शिक्षार्थी-शिक्षकको व्यक्तिगत दक्षता माथि विशेष ध्यान दिइन्छ, एवं उनीहरूको व्यक्तिगत दक्षता वृद्धि माथि प्रक्रियामूलक शिक्षणले विशेष प्राथमिकता दिदँछ।

प्रक्रियामूलक शिक्षणका (Demerits of Practice Teaching):-

प्रक्रियामूलक शिक्षणका केहि सीमावद्वता (Limitation) अथवा त्रुटि हरू छन्:

१. प्रक्रियामूलक शिक्षण दक्षता आधारीत अर्थात् शिक्षकको निर्दिष्ट दक्षता वृद्धिमाथि जोड़ दिदँछ यसले विषयवस्तुमाथि जोड़ दिदैन।

२. यो परिकल्पना चौतर्फे खर्चिलो हुन्छ। (Overall Expensive)

३. प्रक्रियामूलक शिक्षणको निम्ति विभिन्न यत्रपातिको दरकार हुन्छ। जस्तै:अडियो टेप (Audio Tape), अन्यन्य खर्च लाग्ने सामनहरू जस्तै:भिडियो, क्यामेरा आदि।

४. प्रक्रियामूलक शिक्षणको विभिन्न दक्षताहरूको समन्वय गर्नु अत्यन्तै कठिन कार्य हो।

५. प्रक्रियामूलक शिक्षणले स्वभाविक समय तालिकालाई नष्ठ (लथालिङ) पार्दछ।

प्रक्रियामूलक शिक्षणको सीमावद्वता (Limitation) लाई अस्वीकार गर्न सकिन्दैन। तरैपनि वर्तमानमा प्रक्रियामूलक शिक्षणको

व्यवस्था सारा पृथ्वी भरिनै व्यापक लोकप्रयाता हामी पाउँछौ। हाम्रोदेशमा पनि विभिन्न प्रतिकूल परिवेश लाई चुनौती दिदै प्रक्रियामूलक शिक्षण विकाशको अग्रगतिमा अधि वढिरहेछ।

प्रक्रियामूलक शिक्षणका आचरणगत तत्वहरू(Components)

मूलतः श्रेणीकक्षामा पाठदानको समयमा एकजना शिक्षकले विषय आधारित विभिन्न प्रकारको आचरण (व्यवहार) गर्नु पर्दछ। यी आचरणहरूलाई शिक्षाविज्ञानको तत्त्व (Component) भनिन्छ। जसरी शिक्षकलेकुनै पाठ्य विषय जब श्रेणीमा उपस्थापन (Presentation) गर्छन् त्यससमय तिनले विषयवस्तु व्याख्या (Lecture) दिनेछन शिक्षाउपकरण (L.T.M) व्यवहार गर्ने छन्। यी सवैलाई तत्त्व (Component) भनिन्छ। एकजना शिक्षकको पेशागत सफलता श्रेणीमा पाठदानको समयमा शिक्षकले तत्त्व (Component) हरू कति सम्म दक्षतासंग उपस्थान गर्न सक्छन त्यसमाथि निर्भर गर्दछ।

शिक्षण दक्षता (Teaching skill) कतिवट छन् वा हुनुपर्ने त्यस सम्वन्धमा शिक्षाविदहरू मध्ये पनि मतपार्थक्य छ। आलेन के रेवान ले 16 वटा तेरोनले 19वटा एवं डव्लु आर वोर्जले 18 वटा आचरण तत्व हरुको कुरा गरेका छन्।

N.C.T.E., माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षा पर्षद क्षेत्रमा मोठ वीसवटा कौशलहरू (skill) प्रयोग माथि महत्व दिएको छ। पश्चिम वंग प्राथमिक शिक्षा पर्षदको D.El.Dd को सिलेवस प्रक्रियामूलक योजनाको 5 वटा कौसल (skill) वा दक्षता निर्धारण गरिएको छ। Part-I को निम्ति यी Skill अथवा दक्षता निर्धारण गरिएको छ। तिनीहरू हुन:

१. समन्वय साधन दक्षता (Skill of Integrating knowledge and Experience)
२. शिशु केन्द्रित सिकाई संचालय दक्षता (Skill of facilitating child centric learning)
३. विद्यार्थीहरुलाई प्रश्न गर्न प्रेरित वनाउने दक्षता (Skill of encouraging learners to enquire questions)
४. विद्यार्थीहरूमा पर्यवेक्षण विकास दक्षता विकास (Skill of Developing observation in learners)
५. सिकाई परिस्थितिसित कृतकला संयोग साधन दक्षता। (Skill of Integrating proforming art with learning situations)

पठन पाठनको क्षेत्रमा यी पाँचवटा कौशलहरू सुसम्वन्धित रूपमा प्रयोग गर्न सक्ने एक जना शिक्षकले मात्र पाठदान गर्न सफल बन्ने छन्।

ज्ञान अनि समन्वय दक्षता (Skill of Integrating knowledge and Experience):शिक्षाक्षेत्रमा समन्वय साधन भन्नाले विभिन्न विषयवस्तुहरू माझ स्वाभाविक सम्पर्क स्थापनाको साहयताले लक्षित ज्ञान औ धारणा विकाश बुझिन्छ। यस शिक्षण प्रकियामा शिक्षकको मूल उद्देश्य हो सही तरिकाले अभिज्ञताको उपस्थापन (Presentation)। राष्ट्रिय पाठ्क्रम २००५, शिक्षाको अधिकार ऐन २००९ एवं निर्माणवाद (Constructivity) शिक्षिकाले समन्वय साधन दक्षता वृद्धिमाथि ध्यान दिनुपर्ने हुन्छ।

समन्वय साधन दक्षताका उपादान अनुसार शिक्षक (Components)

१. **शिक्षार्थीद्वारा अन्य विषयहरूसंग समन्वयकरणः** शिक्षार्थीहरूले पाठदानको समय जुन विषयमा पाठदान गरिन्दैछ त्यससंग सम्वन्धित अन्यन्य विषयहरूमा सम्पर्क स्थापनाको दक्षता अर्जन गर्नुपर्दछ।

जस्तै : तृतीय श्रेणीको ''हाम्रो परिवेश'' पाठ्यपुस्तकको ''शरीर'' एकाईको उपएकाई (लोर्थ्रके परेवातिमी खाउ) पाठदानको समय लोर्थ्रके अन्य प्राणीको सादृश्यता (Simmilarity), असमानता (dissimillarity) शिक्षार्थीलाई वुझाएर उनीहरूवाट पनि यस्तो किसिमको उदाहरणहरू सोध्नु पर्दछ।

शिक्षार्थीहरूबाट दृष्टान्त ग्रहण : शिक्षार्थीहरूले पाठदान पश्चात उनी हरुबाट मौखिक उदाहरण वा विशेष उदाहरण सोध्नुपर्दछ यसबाट उनीहरू व्यवहारिक र सैद्धान्तिक ज्ञानको समन्वय हुदँछ।

जस्तै : लोर्थकेले चारखुट्टाले दौड़न्छ तर खाने बेलामा अगाड़ीको दुई खुट्टाहरूलाई हातको प्रयोग गर्दछ, त्यसरी नै बाँदरले पनि त्यसै गर्दछ। मान्छेको दुई हात हुन्छ, चिम्पाजीको पनि दुई हात हुन्छ तर ती सबै मा पार्थक्य पाइन्छ।

दृष्टब्यःशिक्षण पुवार्ध प्रकियामूलक दक्षता विकास एउटा पाठ योजना नमुना यहाँ दिहको छ। अन्य शिक्षण दक्षताका पाठ योजना नमुना वर्कशप अवधिमा दिहने छ।

शिक्षण पूवार्ध प्रकियामूलक शिक्षणदक्षता/कौशलहरूको विकास

Pre-Intership teaching skills

उपदक्षता/आचरणमुलक तत्वहरू

sub-skills/Behavioural components

(१) शिक्षार्थीको सहायताद्वारा अन्यन्य
विषयहरूसित समन्वय गर्नु
Striking inter-subject integration with the help of learners.

(२) शिक्षार्थीहरूबाट दृष्टान्त ग्रहण
Allowing learner to integrate & eliciting of such integration

(३) शिक्षार्थीहरूलाई दृष्टान्तद्वारा सठीक ज्ञान अनि अनुभव समन्वय गराउनु सहयोग गर्नु
Helping learner to integrate knowledge and experiences appropriately through examples

(४) साधरणीकरण
Skill of generalising knowledge/experience with the help of learner in a participatory and interactive classroom situation.

(ii)शिशु केन्दित सिकाई संचालन दक्षता
SKILL OF FACILITATING CHILD CENTRIC LEARNING

(१) प्रत्येक शिक्षार्थीको सकिय अंशग्रहण
Ensuring active participation of every learner.

(२) विशेष सिकाई अनुभव/प्रतिक्रिया सम्बन्धि शिक्षार्थिको मत प्रकाशमा सहायता गर्नु।
Encouraging expression of opinion on specific learning experiences learning outcome.

(३) शिक्षार्थीहरू माझमा विचार–विमर्ष हेतु उत्साह
Encouraging inter-group and intra-group interaction & peer-interaction and pupil-teacher, teacher-pupil etc. interaction.

(४) शिक्षार्थीहरूद्वारा सिद्धान्त ग्रहण गर्नमा सहयोग
Helping in decision making

(iii) विद्यार्थीहरूलाई प्रश्न गर्न प्रेरित बनाउने दक्षता/कौशल
SKILL OF ENCOURAGING LEARNERS TO ENQUIRE

तत्वहरू (Components)

(१) विद्यार्थीहरूलाई प्रश्न गर्न उत्साह प्रदान
Allowing learner to question/enquire

(२) प्रश्न गर्नमा नमनीयता
Allowing flexibility in questioning.

(३) प्रश्न गराईमा सठीकता वा प्रश्न गठनमा सहयोग पुन्याउनु
Ensuring appropriateness in questioning

(४) विषयसित सम्बन्धित प्रश्न सार्न्दभिक प्रश्न
Ensuring relevance in questioning

(iv) विद्यार्थीहरूमा पर्यवेक्षण दक्षता विकास गराउने दक्षता / कौशल

SKILL OF DEVELOPING OBSERVATION IN LEARNER

(१) विद्यार्थीहरूमा पर्यवेक्षणनकरण

Exposing learners to observable situation

(२) अवस्था अनुरूप पुन: पर्यवेक्षणकरण

Allowing learners to review and reflect on the observed phenomena (as per the requirement of the situation)

(३) विद्यार्थीहरूमा कार्यकरण सम्पर्क स्थापन

Allowing learners to relate effects to causes / causes to effects.

(४) पर्यवेक्षण अनि सिद्धान्त प्रतिफलनकरण

Allowing learners to apply their observations and thinking on situation

(V) सिकाई परिस्थितिसित कृतकला संयोग साधन दक्षता

SKILL OF INTEGRATING PERFORMING ART WITH LEARNING SITUATION

(१) विषय समूहप्रति प्रत्यक्ष अंशग्रहण

(Encouraging active participation in the lesson through performance)

(२) सृजनात्मक सृष्टि

(Encouraging creativity through performance)

(३) विषय वस्तुको नाटय रूपान्तरण

Encouraging dramatisation of lesson / learning situations.

(४) व्यावहारिक जीवनमा विषय वस्तुको प्रयोग

Encouraging application of the lesson / learning situations to real life situation.

प्रक्रियामूलक शिक्षण पाठ–योजना नमूना

ज्ञान अनि अनुभव समन्वय साधन दक्षता (Skill of integrating knowledge & experience)

प्रशिक्षण केन्द्र	:	प्रशिक्षण केन्द्रको नाम	विषय	:	मातृभाषा (नेपाली)
श्रेणी	:	चौथो	पाठ	:	कम्प्युटरको चमत्कार
विद्यार्थी संख्या	:	८ – १० जना	उप–एकाई	:	
समय	:	५ – ७ मिनट	आजको पाठ	:	सम्पूर्ण
प्रशिक्षणार्थी शि०/शि०	:				
दिनांक	:				

आचरणगत तत्वहरू (Behavioral components)

- विद्यार्थीद्वारा विभिन्न विषयहरूसित समन्वय

  (Striking inter-subject integration eith the help of learners)

- विद्यार्थीद्वारा समन्वीकरण अनि दृष्टन्त ग्रहण

  (Allowing leaner to integrate and aliciting examples of such integration)

- उदाहरण मार्फत विद्यार्थीहरूलाई सठीक ढंगमा ज्ञान अनि अनुभव समन्वय
  (Helping learning integrate knowledge and experience appropriately through examples)
- विद्यार्थीहरूको श्रेणीगत अंशग्रहण अनि विचार विनिमय सहयोगद्वारा ज्ञान अनि अनुभव साधरणीकरण विभिन्न विषयहरूसित समन्वय
  (Skills of gerneralizing knowledge and experience with the help of learners in a participatory and interactive classroom situation)

शिक्षक/ शिक्षिकाको कार्य/ आचरण (Teacher's Activities)	विद्यार्थीहरूको संभावित क्रिया-कलाप (student's expected Activities)	आचरणमूलक तत्वहरू (Behavioural Components)
१। वर्त्तमान युग विज्ञानको युग हो। मानिसले गर्नु पर्ने गाहो कामहरू विजुली र ब्याट्रील चल्ने मेशिनहरू गरिन्छ, गराइन्छ। तिनी-हरू भन क-कसले यस्ता विजुली र व्याट्रीले चल्ने मेशिन देखेका छौ? भनी सोधिनेछन।	विद्यार्थीहरू सोच विचार गरी उत्तर दिनेछन, जस्तै रेडियो, टी० भी०, फ्रिज, वासिङ, मेशिन, घट्टा, इस्त्री इत्यादि।	विद्यार्थीद्वारा विभिन्न विषयहरूसित समन्वय ऐ० ----ऐ०----
२। कुन-कुन यन्त्र केवल विजुलीले चल्छ?	टी० भी०, कम्प्युटर आदि।	----ऐ०----
३। कम्पुटरको वारेमा तिमीहरूले उन विषयमा पड़का छौ?	विज्ञान अनि कम्प्युटरमा विषयमा पढ़ेका छौं।	विद्यार्थीद्वारा समन्वीकरण अनि दृष्टान्त ग्रहण
४। कम्पुटरमा के-के काम गर्न सकिन्छ?	गीत सुन्न सकिन्छ, फिल्म हेर्न सकिन्छ।	----ऐ०----
५। अझ के-के काम गर्न सकिन्छ?	हिसाव गर्न, नक्सा बनाउन, विभिन्न किसिमका गेम खेल्न सकिन्छ।	
६। रेडियो र टि० भी० मा के भिन्नता छ-के विन्नता छ?	रेडियोमा केवल सुन्न सकिन्छ तर टी० भी० मा सुन्न सहित वोल्ने मानिस वा विभिन्न वस्तु देख्न पनि सकिन्छ।	----ऐ०----
७। कम्प्यूटरमा यी सन गर्ने अंगहरू हुन-मनिटर, माउस, कि वोर्ड	विद्यार्थीहरू खातामा यी नामहरू सार्नेछन। Monitor, CPU (Central Processing Unit), Keyboard, Mouse	उदाहरण मार्फत विद्यार्थीहरूलाई सठीक अनि अनुभव समन्वय
8. चार्ल्स ब्याबेजले 1823 मा हिसाब गर्न सक्ने मेशिन बनाए (डिफरेन्स इञ्जिन)	विद्यार्थीहरु अतिरिक्त ज्ञान लाभ गर्नेछन क्यासकुलेटर सर।	.....ऐ०.....
9. 1643 मा नै पास्कलले जोड़ने घटाउने मेशिन बनाए	ब्याट्रीले	
10. जोड़ने घटाउन तथा अरू हिसाब गर्न साधारण अरू कस्ता मेशिन वा यन्त्र प्रयोग गर्न सकिन्छ।	अवाकसको प्रयोग गर्न कोशिश गर्नेछन्।	
11. क्यालकुलेटर के ले चल्छ? न्याट्रीले	न्याट्रीले	साधारणीकरण
12. 3000 खीष्ट पूर्व नै अवाकस बनिसकेको थियो। (अवाकस देखाउँदै)	• काम छिटो भन्दा छिटो गर्न कोशिश गर्नेछन्। • थाक्दैन, भूल गर्दैन, अल्छी गर्दैन।	
13. कम्प्यूटरमा मानिसलाई (हामीलाई) कसरी गरेको छ? अरू के-के काम गर्छ।	• आराम नगरी काम गर्छ। • नक्सा बनाउन, गीत सुन्न, फिल्म हेर्न, खेल विभिन्न जानकारी हेतु प्रयोग गरिन्छ।	.....ऐ०.....

शिक्षक/ शिक्षिकाको कार्य/ आचरण (Teacher's Activities)	विद्यार्थीहरूको संभावित क्रिया-कलाप (student's expected Activities)	आचरणमूलक तत्वहरू (Behavioural Components)
14. कम्प्यूटरको प्रयोग कहाँ कहाँ हुन्छ ?	घर, स्कूल, कलेज अनि विभिन्न कार्यलयतिर हुन्छ।	
15. नयाँ नयाँ शब्द अनि कुन कुन बैज्ञानिक हरूको नाम सिक्यौं ?	माउस की बोर्ड, अवकास, डिफरेन्स मेशिन चाल्स ब्याबेज, पास्कल, जोन व्यूम्बून	साधारणीकरण

नोट : अन्य दक्षता/कौशल सम्बन्धि पाठ योजनाको नमूना वर्कशप अवधिमा दिइने छन्।

श्रेणीगत पाठ योजना प्रस्तुतिकरण
(PREPARATION OF INTERSHIP LESSON PLAN)

पाठ परिकल्पनाको धारणा बारे जर्मन शिक्षानिद् जोहन हर्बटद्वारा प्रकाशमा आएको हो। पाठदानको क्षेत्रमा तिनले एकाई परिकल्पनामाथि (Unit Plan) विशेष महत्व दिएका छन्। अर्कोतिर शिक्षाविद् डिऊ ओ किलप्याट्रिकले शिक्षार्थीहरूको अभिज्ञतामाथि विशेष रूपले दृष्टि राख्ने कुरा पाठ परिकल्पनाको क्षेत्रमा भनेका छन्।

• **पाठ-परिकल्पनाको प्रयोजनीयता :** शिक्षक-शिक्षिका दिन-प्रतिदिन श्रेणी (पाठ) संचालको निम्ति जुन परिकल्पना रचना, गर्छन, त्यसैलाई पाठ-परिकल्पना (Lesson Plan) भनिन्छ। अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा श्रेणी कक्षामा निर्दिष्ट समयसिमाभित्र विभिन्न जटिल विषयहरूको विभाग अथवा स्तरनै हो पाठ-परिकल्पना हो।

पाठ-परिकल्पनाको प्रारूप यसप्रकार छन् :

1. पाठ-परिकल्पनाको एउटा निर्दिष्ट उद्देश्य निहित हुन्छ।
2. पाठ-परिकल्पनाको संचालनको क्षेत्रमा विशेषरूपमा विद्यार्थी/शिक्षार्थीहरूमाथि धेरै आकर्षण स्थापित हुँदछ।
3. पाठदान तथा शिक्षणको क्षेत्रमा शिक्षकको भूमिका गौण (Secondary) हुन्छ।

• **पाठ-परिकल्पनाको प्रयोजनीयता कारणहरू हुन्:**

1. पाठ-परिकल्पनाद्वारा शिक्षक-शिक्षिकाहरू शिक्षणको उद्देश्य एवं पद्धति सम्बन्धि अवगत हुन सक्नेछन्।
2. पाठ-परिकल्पनाले शिक्षार्थीहरूको श्रेणीलाई नियन्त्रणमा ल्याउन अनि शिक्षण प्रक्रियालाई यथेष्ठ कार्यकर अनि प्रभावकारी बनाउन ठूलो भूमिका खेल्ने छ।
3. पाठ-परिकल्पनाले पाठयक्रमको प्रत्येक एकाईलाई अत्यन्त सहजताका साथ बुझ्न सहायता गर्छ।
4. श्रेणी कक्षामा शिक्षार्थीहरूको आवश्यकताछलाई पूर्ण गर्नलाई पाठ-परिकल्पनाको रचना हुने गर्दछ।

पाठ-परिकल्पनाका सुविधाहरू : (Advantages of Lesson Plan)

पाठ-परिकल्पना धेरै सुविधाहरू छन् जस्तै —

(क) मनोविज्ञान अनुरूप : पाठ-परिकल्पना चरनाको समय शिक्षकले शिक्षणकौशल पद्धति, शिक्षा उपकरण (TLM) व्यवहार गर्दा धेरै विचार पुरयाउनु पर्दछ। यसपछि छात्रहरूको आग्रह, रूचि, दक्षता, सामर्थ्य इत्यादि विचार गर्नुपर्दछ। यसको फलस्वरूप, शिक्षार्थीले मनोवैज्ञानिक ढंगमा पाठ ग्रहण गर्ने सुयोग पाउदँछन्।

(ख) उपकरण तयारी: कुनै पाठको इकाई (Unit), धारणा स्थापित (Concepts Establishment) को निम्ति कुन कुन शिक्षण उपकरण जरुरी पर्दछ त्यो शिक्षकले आफनै वरिपरीको परिवेशबाट तयारी गर्न सक्छन्, यसको फलस्वरूप शिक्षार्थीहरू विशेषरूपले उपकृत हुन्छन्।

(ग) **वास्तविक विषयवस्तु उपस्थापन :** विषयवस्तु निर्दिष्ट रहनु एवं परिकल्पित हुनु पाठदानको समयमा अप्रयोजनीय वस्तुहरू आउनु सुयोग कम्ति हुनु हो अर्थात् भन्नुपर्दा शिक्षक–शिक्षिकाले पाठदानको प्रक्रियामा वास्तविक विषयमाथि प्रस्तुति दिनुपर्दछ।

(घ) **विषय अनुरूप सम्बन्धित वास्तविक उपकरणहरूको व्यवहार :** पाठ–योजनाको परिकल्पना गर्दा सैद्धान्तिक ज्ञानको प्रयोग हुदँछ। तर शिक्षण प्रक्रियामा चार्ट, मानचित्र, मोडेल इत्यादि। वास्तविक वस्तुहरूलाई शिक्षण उपकरणको रूपमा प्रयोग गरेर पढ़ाइने विषयलाई जीवन्त तूल्याई पाठदान गर्न सकिन्छ।

(ङ) **श्रेणीकक्षाको अनुशासन रक्षा :** पूर्ण प्रस्तुतिकरणको निम्ति शिक्षक/शिक्षिका श्रेणीमा पाठदानको समयमा शिक्षार्थीहरू प्रश्नहरूको उत्तर दिन सक्छन्। फलस्वरूप श्रेणीमा अनुशासन रक्षा सहज बन्दछ।

(च) **समयको वचत :** सम्पूर्ण गतिविधि शिक्षकको तत्परतामा निहित रहेकोले निर्दिष्ट समयमा पाठ्यक्रमलाई शेष गर्न सम्भव हुन्छ। यसको फलस्वरूप समयको अपव्यय हुँदैन।

(छ) **मूल्यांकन सम्भव हुन्छ :** पाठ्यक्रमसूचिको माध्यमबाट श्रेणीमा पाठदानको समाप्ति साथ–साथै श्रेणीकक्षा भित्रनै मूल्यांकनको साथ–साथै संसोधनी पाठदान गर्न सकिन्छ।

- **पाठ–परिकल्पनाको निम्ति के के प्रयोजन छ ?**

पाठ–परिकल्पना तयारीको निम्ति शिक्षक–शिक्षिकाको लागी निम्निलिखित विषयहरूको ज्ञान हुन आवश्यक छ —

1. **विषयज्ञान :** जुन विषयलाई लिएर पाठ–योजना तयरी गरिन्छ त्यो विषयलाई शिक्षकले यथेष्ट रूपमा बुझेको हुनुपर्द छ अर्थात् जुन विषयमा पढ़ाउन जान अधि सम्बन्धित विषयको यथेष्ट ज्ञान हुनु आवश्यक छ।

2. **शिक्षानीति एवं पद्धति सम्बन्धि धारणा :** पाठ–योजना रचना पूर्व नै नीति, उद्देश्य एवं पद्धति सम्बन्धमा विशेषरूपले धारणा बुझेको हुनुपर्दछ।

३. **स्पष्ट उद्देश्य :** जुन विषयमा पाठ–योजना तयारी गरिन्छ त्यो पढ़ाउनको के के उद्देश्य रहेको छ, त्यस विषयप्रतिको शिक्षकता स्पष्ट धारणा रहन आवस्यक छ।

४. **श्रेणी स्तर सम्बन्धमा धारणा :** शिक्षक–शिक्षिका जुन श्रेणीको निम्ति पाठ–योजना तयारी गर्छन त्यो पूर्व त्यो विषयमा सम्पूर्णरूपमा अवगत रहन आवश्यक छ। शिक्षार्थीहरूको उमेर, सामर्थ्य, ग्रहणक्षमता, प्रवृत्तिलाई मध्यनजर राखेर पाठ–योजना तयारी गर्नुपर्छ।

५. **शिक्षण उपकरणको व्यवहार :** श्रेणी कक्षामा पाठदानको अवधि पाठ–योजना अनुसार कहिले कुन स्थितिमा कस्तो उपकरणको प्रयोग गर्नाले शिक्षार्थीहरूको मनोबल वढ़छ एवं पाठदान सफल छन्द, त्यसप्रति शिक्षक–शिक्षिकाले ध्यान पुरयाउनु पर्नेछ।

६. **बिषयलाई उप–एकाईहरूमा विभाजन :** पाठ–योजना रचना गर्दा यदि पाठ–योजना वृहत भए शिक्षक–शिक्षिकाले उपरोक्त एकाई विभिन्न उप–एकाईहरूमा विभाजन गर्नु पर्ने स्थिति सिर्जना हुन्छ, त्यसलाई शिक्षक – शिक्षिकाले बुझनु पर्दछ।

७. **समय ज्ञान :** शिक्षक–शिक्षिकाले पाठ–योजना वनाउँदा यो स्मरण गर्न आवश्यक छ कि निर्दिष्ट श्रेणी घण्टामित्र पाठदान संचालन गर्न संभव छ /छैन त्यस विषय अथार्त् समय ज्ञानको प्रयोजनलाई मध्यनजर राख्नु पर्नेछ।

८. **नमनीयताः** निर्दिष्ट नियम वमोजिम पाठ–योजना रचना गर्नाले शिक्षक–शिक्षिकाले श्रेणी कक्षामा पाठ–दानको समय परिवर्तन गर्न सक्छन्।

- **पाठ–परिकल्पनाको विभिन्न पद्धतिको विवरणः**

पृथ्वीका विभिन्न देशहरूले पाठ–परिकल्पना लेखन पृथ्वीका रीति, विभिन्न मनोवैज्ञानिक परिकल्पना अर्न्तगत सवै समयमा हर्वटको पंच सक्छौं। हर्वटका पाँचवटा सोपानहरू मध्ये तीनवटा प्रधान छन् –प्रस्तुति (Preparation), उपस्थापन (Presentation), मूल्यांकन (Evaluation)। हाम्रो पाठ–परिकल्पना लेखनमा साधरणतयाः यहि तीनवटा पद्धतिहरूको उल्लेख गरिएको हुँदछ।

वर्तमान परिप्रेक्षमा हाम्रो देशमा प्रचलित पाठ–परिकल्पनाहरूको विवरण निम्न छन्:

साधरणत हामी जुन पाठ–परिकल्पना रचना गर्छौं त्यसका प्रथममा कतिवटा प्रयोजनीय तथ्यहरू दिने गरिन्छ। यी तथ्यहरूलाई प्राथमिक तथ्य भनिन्छ। अवश्य नै यी सवै तथ्यहरूसंग उपस्थित विषवस्तुहरूको कुनै विशेष कुनै सम्वन्ध हुँदैन। उपरोक्त परिस्थिमा यस्ता तथ्यले समग्रमा पाठ–परिकल्पनालाई अझै धेरै अर्थपूर्ण वनाउनमा सहायता गर्छ। यस क्षेत्रमा निम्नलिखित प्रकारले प्राथमिक तत्थ्यलाई स्थापित गर्न सकिन्छ –

प्राथमिक तथ्य

विद्यालयको नाम :	विषय
श्रेणी :	पाठ–एकाई :
शिक्षार्थीको हरदर उमेर :	उप–पाठ–एकाई :
शिक्षक/शिक्षिकाको नाम :	(क)
समयसीमा :	(ख)
	(ग)
तारिख :	
	आजको पाठ–चिन्हित अंश

- **अपेक्षित सिकाई दक्षता :** अपेक्षित सिकाई दक्षता (Expected Learning Competency) भन्नाले शिक्षार्थीले निर्दिष्ट एकाई सम्वन्धि पाठ सकेपछि के के सिक्छन् त्यसै विषय आधारित शिक्षार्थीको सामर्थ्यलाई बुझिन्छ। शिक्षार्थीहरूमा संभावित सिकाई क्षमता हासिल गर्ने स्थितिमा शिक्षकहरूले गुरूत्वपूर्ण भूमिका वहन गर्नु पर्ने स्थिति तयार हुँदछ। यो उपेक्षित सिकाई दक्षता कुन एकाईमा के छ वा कस्तो हुन्छ ? त्यस विषयमा शिक्षक–शिक्षिकाले शिक्षार्थीहरूसंग अर्न्तकिया गरेर यी सब विषयमा चर्चा गर्न पर्दछ।

  अपेक्षित सिकाई दक्षतालाई पाँच भागमा विभक्त गर्न सकिन्छ, जो निम्न छन् :

  (क) **ज्ञानमूलक सामर्थ्य** (Knowledge Based Competency)

  (ख) **बोधमूलक सामर्थ्य** (Understanding Based Competency)

  (ग) **प्रयोगमूलक सामर्थ्य** (Application Based Competency)

  (घ) **दक्षतामूलक सामर्थ्य** (Skill Based Competency)

  (ङ) **मूल्यबोध** (Value Based Competency)

  पाठ्य विषयहरूलाई मध्यनजर राख्दै शिक्षक–शिक्षिकाले यी पाँचवटा सामर्थ्य शिक्षार्थीहरूमा वृद्धि गराउन सकेसम्म चेष्टा गर्नु पर्दछ।

  पाठ्यकम कमिटी उपरोक्त चारवटा सामर्थ्यलाई छात्रहरूमा वास्तविक रूपमा प्रदान गर्ने चेष्टा गर्दछ। यो दक्षता विकाश पाठ्य पुस्तकलाई लिएर शिक्षक शिक्षिकाले सम्पादन गर्ने एउटा स्तर/सोपानकम व्यवस्था हो। यदि यसको कुनै पनि एउटा सानो भन्दा सानो स्तरमा पनिभूल भएमा समस्त परिश्रमनै व्यर्थमा जानेछ।

क) **ज्ञानमूलक सामर्थ्य :** ज्ञानमूलक सामर्थ्य भन्नाले शिक्षार्थी कुन विषयलाई कति स्मरण गर्न सक्षम छ, शिक्षार्थीमा देखेर चिन्ने सामर्थ्य कस्तो छ यस किसिमको अभिज्ञता अर्जन लाई ज्ञानमूलक सामर्थ्य बुझिन्छ।

ख) **बोधमूलक सामर्थ्य :** वोधमूलक सामर्थ्य भन्नाले शिक्षार्थी एउटा विषयसंग अर्को विषयको सम्पर्क निर्णय गर्न सक्छन् यस किसिमको अभिज्ञता आर्जनलाई वोधमूलक सामर्थ्य बुझिन्छ।

ग) **प्रयोगमूलक सामर्थ्य :** प्रयोगमूलक सामर्थ्य भन्नाले शिक्षार्थी ले विषयको पाठ एकाई ग्रहण पश्चात कुनै घटनाको कारण निर्णय सिद्धान्त लिने क्षमता एवं व्यक्तिगत जीवनमा यी अर्जन गरेका अभिज्ञताको प्रयोग गर्ने सामर्थ्यलाई बुझिन्छ।

घ) **दक्षतामूलक सामर्थ्य :** शिक्षार्थीहरूले आफ्नो कुनै अभिज्ञता हात र कलम प्रयोग गरेर देखाउन सक्छन्। विषयलाई छिटो छरितो बनाउन सक्छन, नक्सा कोर्न सक्छन्, तालिका निर्माण गर्न सक्छन्, यी सव कार्यलाई दक्षतामूलक सामर्थ्य भन्न सकिन्छ।

ङ) **मूल्य आधारित दक्षता :** आजको पाठ पढ़ेपछि वा सिके पछि विद्यार्थीहरुले हुन प्रकारको मूल्य (Value) सिकोछन्ट त्यो स्पष्ट हुनु आवश्यक छः।

- **पाठ-परिकल्पना को उद्देश्य (Objectives of lesson planing):**

पाठ-परिकल्पना श्रेणीमा पाठदान पूर्व एउटा अत्यन्त महत्यपूर्ण विषय हो। परिकल्पना विना कुनै कार्य सफल हुँदैन। जसरी श्रेणी कक्षामा शिक्षकको निम्ति पाठदान एउटा महत्यपूर्ण कार्य हो भने त्यसैगरि पाठ-परिकल्पना गर्नु शिक्षकको अर्को प्राथमिक महत्वपूर्ण कार्य ठर्हछ।

शिक्षण एउटा किया-कलाप आधारित (Activity Based) कार्य हो। त्यसैले शिक्षण कार्य परिकल्पना अनुरूप हुनुपर्दछ। परिकल्पनाहीन कर्म योजनाले श्रेणीमा विश्रृंखलता सृष्टि गर्छ। यदि शिक्षक आफ्नो अभिज्ञताद्वारा पढ़ाइने विषयको सामर्थ्य वा उद्देश्य शिक्षार्थीहरू मध्ये बुझाउन सक्दैनन् यस्तो स्थितिमा शिक्षाको मुख्य लक्ष्य वाहिरिएर जानेछ। यसैकारण शिक्षक-शिक्षिकाले अवस्य नै उद्देश्यमूखी परिकल्पना तयार गर्नु पर्दछ।

प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शिक्षा अथवा कुनै पनि स्तरमा पाठ-परिकल्पना अनुरूप शिक्षादान गर्न पनर्छ। विषेश गरि प्राथमिक अनि उच्चप्राथमिक स्तरमा शिक्षण परिकल्पना अनुसार नभएको शिक्षादान सम्पूर्ण रूपले व्यर्थ भएर जानेछ। जसले मृत्युपर्यन्त समाजको वोझ वढ़ाएर लैजानेछ।

उद्देश्यको श्रेणी विभाग :

पाठदानको उद्देश्य समुहलाई दुई भागमा विभक्त गर्न सक्छौ। जस्तै :—

क) विशेष उद्देश्य (Specific Objectives) ख) साधारण उद्देश्य (General Objectives)

क) **विशेष उद्देश्य :** विशेष उद्देश्य भन्नाले कुनै एकाईद्वारा पाठदानको विशेषता बुझाउनलाई भनिन्छ/बुझिन्छ। कतिपय प्रमुख उद्देश्यहरूलाई मध्यनजर राखी कुनै एकाईलाई पाठ्यक्रमभित्र अर्न्तभुक्त गरिएको हुन्छ। विशेष उद्देश्य अनुसार प्रदान गरिएको पाठको पाठदान एवं पाठग्रहणद्वारा शिक्षार्थीको ज्ञान आर्जन, वोधक्षमताको विषय वस्तुको वास्तविक जीवनमा प्रयोग एवं दक्ष वनाउँदै लैजाउनु हो।

उदाहरण

विषय	:	हाम्रो परिवेश
श्रेणी	:	तृतीय
एकाई	:	आकाश
उपएकाई	:	ताराहरूको देशमा प्रकाशको नदी

शिक्षार्थीहरुले यो पाठ-एकाईद्वारा रातमा आकाश कस्तो हुन्छ भन्ने विषयमा ज्ञान आर्जन गर्छन्। वोध क्षमताको विकास कमशः हुन्छ। रात्रिकालीन आकाशको नक्सा वनाउने चेष्टा गर्नेछन्, राती आकाशको स्थिति विषयको ज्ञानलाई प्रयोग गर्न सक्छन्।

क) **साधारण उद्देश्य :** कतिपय साधारण उद्देश्यहरुलाई अगाड़ी राखेर कुनै एकाईलाई पाठ्यक्रमलाई मध्यनजर राख्दा शिक्षार्थीहरुले कुनै पनि विषयमा आग्रही भई उठ्ने दक्षता, पर्यवेक्षणको क्षमता विकाशमा सहायता पाउँदछन्।

उदाहरण

विषय	:	हाम्रो परिवेश
क्षेणी	:	तृतीय
एकाई	:	रात्री आकाश

यो एकाईद्वारा पाठग्रहणको मध्यमले शिक्षार्थीहरुमा रात्रीकालीन आकाशको सम्पर्कमा जिज्ञासा जन्माउँदछ। पयवेक्षण क्षमताको विकाश अर्जन हुन्छ, शिक्षार्थीहरू परिवेश विज्ञानका पाठहरू लिएर आग्रही वन्नेछन्।

सर्वदा यो मनमा राख्नु पर्दछ कि ''उद्देश्य'' पाठ्यकमको एउटा अत्यन्तम मौलिक उपादान हो। अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा लक्ष्य भेद् गर्ने यात्राको 'माइल खुट्टी' हो उद्देश्य। साधारनत: शिक्षामूलक उद्देश्य भन्नाले शिक्षाको लक्ष्यको परिमाण योग्य कुरा वुझिन्छ।

शिक्षण–सिकाई उपकरण (Teaching-Learning Material: T.L.M) : विषयवस्तुलाई वास्तविक रूप प्रदान गर्न शिक्षक/शिक्षिकालाई शिक्षण सहायक उपकरण व्यवहार गर्नु पर्दछ। वस्तुत: विषयवस्तुलाई श्रेणी कक्षलाई अथवा श्रेणीकक्षा वाहिर सिक्ने–सिकाउने प्रकियालाई सहज, जीवन्त एंव आकर्षणीय गराउँदै लैजान यी सव सामाग्री सिक्ने–सिकाउने माध्यमको रूपमा व्यवहार गरिन्छ। यसैलाई शिक्षण सहायक उपकरण अथवा Teaching Learning Material (TLM) भनिन्छ।

हामीले यो कुरा मनमा राख्नुपर्दछ कि सिकाउने प्रक्रिया अर्न्तगत शिक्षण उपकरण विषयको एकाई अनुरूप वेग्ला–वस्लै हुनपर्छ। यी सिक्ने–सिकाउने शिक्षण उपकरण चयन एवं प्रयोगको माध्यमद्वारा शिक्षकको क्षमता प्रकाशमा आउँदछ।

उदाहरण : हाम्रो परिवेश पाठ्यपुस्तकको ''ताराहरुको वीचमा प्रकाश नदी'' एकाई पाठदानको समय LTM वा शिक्षण उपकरण रात्रीकालीन आकाशको एउटा चार्ट, कर्मपत्र, निर्देशक दण्ड एवं श्रेणीकक्षामा भएको साधरण उपकरणहरु व्यवहार गर्न सकिन्छ।

- **प्रस्तुति स्तर (Preparation Stage) :** प्रस्तुति स्तरमा पूर्वज्ञान अनुरूप नयाँ पाठ प्रवेशको निम्ति विभिन्न कौशल ग्रहण गर्नु पर्छ। जस्तै :
  - i) शिक्षार्थीहरूसंग सामाजिक विषयहरूसित सम्वन्धित एवं श्रेणीको पाठ्य विषयसंग सामजस्य स्थापित गरि त्यस अनुसार शिक्षार्थीहरुसंग आफ्नो मतामत विनिमय गर्नु।
  - ii) शिक्षार्थीहरुलाई मौखिक प्रश्नग्रहण, दलगत कुनै कार्यद्वारा विषयहरुसंग सम्पर्क स्थापित गर्न सकिन्छ।
  - iii) कर्मपत्र वा कार्य पृष्ठ सम्पूर्णताको स्थिति हेरेर आजको पाठ प्रवेश गर्न सकिन्छ।

पश्चिम वंगाल प्राथमिक शिक्षा पर्षदको निर्देशानुसार पूर्व तयारीको स्तर पाठ्य पुस्तकका पछिलो पृष्ठहरुमा दिएका कतिपय नियम एवं निर्देश पालनलाई व्यवहारिकरण गर्न पर्दछ।

उपस्थापन स्तर (Presentation Stage) :

प्रस्तुति स्तर (Preparation Stage)					
विषय वस्तु Input	शिक्षक/शिक्षिकाको भूमिका Teacher's Role	मैलिक युक्ति Rational	शिक्षार्थीको कार्य Student's Activity	निर्धारित समय Time	शिक्षार्थीकी प्रतिक्रिया Students Response/ Learning outcome
श्रेणी सजावट, दल भाग पूर्व झानको पुनरावृति आजको पाठमा प्रवेश	श्रेणीकक्षामा प्रवेश गरेर शिक्षार्थी हरूसंग विचार–विनिमय, दल भाग, आलोचना, कर्म पत्रको सहायता प्रश्नोत्तरको सहायताद्वारा	मनोयोग आर्कषण, आग्रह वृद्धि, नयाँ पाठमा प्रवेश	शिक्षकहरुसंग विचार आदान–प्रदान गर्छन्। शिक्षकहरुको आदेश पालन गर्नेछन्।	शिक्षक/शिक्षिकले निर्धारण गर्नेछन्।	शिक्षकलाई सौजन्यको रुपमा हेर्नेछन्। पाठ्य विषयमा प्रवेश गर्छन्।

शिक्षक/शिक्षिकाले श्रेणीकक्षामा कस्तो प्रकारले पाठ–संचालन गर्छन् त्यसको विवरण उपस्थापन स्तरमा दिइने गरिन्छ। उपस्थापनको ढाँचा अनुसार ६ वटा बूँदाहरुमा उपस्थापनको विवरण प्रदान गरिन्छ। जस्तै :

१. **विषयवस्तु (Input) :** स्तरमा विषयवस्तु भन्नाले त्यो विषय वा एकाई अथवा उप एकाई पाठदान गरिन्छ त्यसको विशेष सामर्थ्यहरु उल्लेखित रहन्छ। यी सामर्थ्यहरु शिक्षक–शिक्षिकाले निर्धारण गर्छन्।

२. **शिक्षक–शिक्षिकाको भूमिका :** श्रेणीकक्षामा प्रवेश गरेर शिक्षक–शिक्षिकाले पढ़ाइने विषयको विषयवस्तु व्याख्या र विश्लेषण गरेर छात्र–छात्राहरुको अधि राखिदिनुपर्छ। शिक्षक–शिक्षिकाले कर्मपत्र तथा विषय सम्वन्धित चित्रहरु, चार्टहरु,

व्यवहार गर्नपर्दछ। उपस्थापन स्तरमा जुन जुन दलहरू विभक्त गरिएका थिए ती हरेक दलवाट अथवा दललाई केन्द्रित गरेर सोध्नुपर्छ, आलोचना गर्नुपर्दछ। शिक्षार्थीहरुलाई जुन विषयमा पढ़ाई यो त्यस विषयमाथि संक्षेप अथवा सारांश भन्न तथा लेख्न लगाउनु पर्दछ। प्रयोजन भएको खण्डमा उपकरण पनि व्यवहार गर्नुपर्दछ। पाठदानको यो स्तरमा शिक्षक–शिक्षिकाले शिक्षार्थीहरूवाट व्याख्या विश्लेषण विस्तार गर्ने क्षमता वृद्धि गर्ने लक्ष्य राख्नु पर्दछ। साहित्यको क्षेत्रमा आर्दश पठन, सस्वर पठनवप र मौन पठन अनि शब्दार्थ गराउनु पर्दछ।

३. **मौलिक युक्ति (Rationale) :** मौलिक युक्ति भन्नाले निर्धारित विषयवस्तु पाठदानको समय एवं पाठग्रहणको समय शिक्षार्थीहरू मध्ये आग्रह, मनोयोग, विचार क्षमता वृद्धि, विश्लेषण क्षमता वृद्धि अर्जन गरेको ज्ञानलाई व्यावहारिक जीवनमा प्रयोग गर्ने क्षमता वृद्धि हुनलाई बुझिन्छ।

४. **शिक्षार्थीहरूको सक्रियता अथवा शिक्षार्थीहरूको कार्य वा शिक्षक र शिक्षार्थी माझ विचार विनिमय :** यो स्तरमा शिक्षार्थी हरूले शिक्षकले भनेको कुरा सुन्नेछन्, शिक्षकसंग पाठ्यविषयलाई लिएर आलोचना एवं विचार विनिमय गर्नेछन्। शिक्षक–शिक्षिकाले जुन कार्य दिन्छन् त्यसलाई उत्साहपूर्वक पालन गर्नेछन्। शिक्षार्थीहरूले गरिएको कार्यलाई श्रेणीकक्षामा शिक्षक–शिक्षिकाले घुमि–घुमि हेर्नेछन्। भूल–त्रुटि भईहाले संसोधन गरिदिनेछन् एवं शिक्षार्थीको प्रश्नको उत्तर दिनेछन्। यदि शिक्षकको व्यवहार यस्तो रह्यो भने शिक्षादान सफल एवं सार्थक भएर जानेछ।

५. **समय :** प्रस्तुति स्तर, उपस्थापन स्तर एवं मुल्याकंन स्तरमा कति समय खपन हुन्छ त्यो शिक्षार्थी, शिक्षक–शिक्षिकाले पाठ अनुरूप निर्धारण गर्नेछन्।

यसोसले वर्तमान पाठ्यक्रम अनुसार एवं पाठदानको पद्धति अनुरूप ४५ मिनटभित्र पाठदान गर्न असम्भव हुन्छ। यो कुन विषयको पाठदान गरिन्दैछ, त्यसमाथि निर्भर गर्छ। यस्तो पनि हुन सक्छ, कुनै एकाईं प्रथम क्लासमा मात्र शेष नहुन पनि सक्छ, अथवा निर्धारित समयमा नसकिन पनि सक्छ।

६. **शिक्षार्थीको प्रतिक्रिया (Response/Learning out-come) :** कुनै निर्दिष्ट एकाई पाठदान पूर्व शिक्षकले उद्देश्यहरू निर्धारण गर्नु पर्दछ। जब यी उद्देश्यहरू वास्तविक रूपमा देखा पर्छन् त्यसलाई नै शिक्षार्थीहरूको प्रतिक्रिया भनिन्छ।

उपस्थापन स्तर

विषयवस्तु	शिक्षक/शिक्षिकाको भूमिका	मौलिक युक्ति कार्य	शिक्षार्थीको क्रिया–कलाप	निर्धारित समय	शिक्षार्थीहरूको प्रतिक्रिया
रातको आकाश सम्बन्धमा संक्षिप्त विवरण	शिक्षकले रातको आकाशको विवरण उपकरणको सहायताले दिनेछन्र यसपछि कर्मपत्र दिनेछन्।	रातको आकाश सम्बन्धि धारणा	शिक्षकको निर्देश मान्नेछन्, कुनै जिज्ञासा भएमा प्रश्न गर्ने छन्। कर्मपत्र गर्ने छन्।	शिक्षक/शिक्षिका ले समय ठीक गर्ने छन्।	रातको आकाश सम्बन्धि सठीक धारणा जन्माउनु, पाठप्रति आग्रही बन्नु।

- **मूल्याकंन स्तर (Evaluation Stage) :**

पाठ–परिकल्पना लेखनको अन्तिम स्तर मूल्यांकन हो। शिक्षक/शिक्षिकाले गरेको पाठदान कतिसम्म कार्यकर हुदँछ, शिक्षार्थीले पाठ्य विषयवस्तु ग्रहण गर्न सकेका छन् कि छैनन् त्यो जाँचेर शिक्षक/शिक्षिकाले कस्तो र कुन कौशल अवलम्वन गर्नेछन्, त्यसको विवरण यो स्तरमा लिपिवद्ध गरिन्छ। प्रस्तुति, उपस्थापन स्तर जस्तै यो स्तरमा पनि ६ वटा वूँदाहरूमा मूल्यांकन दिइन्छ। जस्तै :

(i) **विषयवस्तु :** कर्मपत्र प्रदान, मौखिक प्रश्नकरण, सृजनात्मक कार्यहरूमा उत्साह प्रदान।

(ii) **शिक्षकको कार्य :** श्रेणीमा उपस्थित शिक्षार्थीहरुलाई कर्मपत्र प्रदान एवं उनीहरुको आवस्यकता वुझ्नुपर्दछ। मौखिक प्रश्नहरु गर्नु पर्दछ। कुनै वस्तुहरु तयार गर्ने निर्देश दिनुपर्छ। शिक्षार्थीहरुको कमसंख्या अनुसार शिक्षार्थीको मूल्यांकनको मान निर्धारण गरेर सोहि वमोजिम त्यसलाई लिपिवद्ध राख्नुपर्दछ।

(iii) **मौलिक युक्ति :** आजको पाठ उद्देश्य अनुरुप भयो भएन त्यो हेररेर सम्वन्धित सठीक धारणा लाभ।

(iv) **शिक्षार्थीको कार्य :** शिक्षार्थीको निर्देश मानेर अभिझतापत्रमा उत्तर लेख्नेछन् अथवा कर्मपत्र पूर्ण गर्नेछन्। दिएको निश्चित समयमा कार्य सम्पन्न गरेर फेरि शिक्षककोमा सुम्मनेछन्। मौखिक प्रश्न सोधिएमा त्यसको वास्तविक उत्तर दिनेछन्।

(v) **समय :** समय निर्दिष्ट हुँदछ। यो क्षेत्रमा शिक्षक/शिक्षिका नै चुढ़ान्त सिद्धान्त लिन सक्नेछन्।

(vi) **शिक्षार्थीको प्रतिक्रिया :** शिक्षार्थीहरु विषय सम्वन्धित सठीक धारणा लाभ गर्नेछन्।

कर्मपत्र (Worksheet) :

कर्मपत्र भन्नाले कुनै विषयवस्तु निर्भर निर्देशिका अथवा शिक्षार्थीको पूर्व अभिझता माझ समन्वय स्थापित गर्ने अपेक्षित कार्य हो। कर्मपत्रमा प्राक्-प्राथमिक औ प्राथमिक स्तरका पाठ्यसूचीको सम्वन्ध एकअर्काका सम्पुरक हुन्। साधरणत: शिक्षार्थीहरुलाई विभिन्न प्रकारका पारदर्शिता वुझाउनलाई प्रत्येक पाठको शेषमा कर्मपत्र (Worksheet) दिन सकिन्छ। नयाँ पाठ शुरु गर्नु अघि एवं पाठदान चलिहरेको अवस्थामा पनि कर्मपत्र प्रदान गर्दा असुविधा हुँदैन। अर्थात् प्रस्तुति, उपस्थापन, मूल्याकंन स्तरमा पनि कर्मपत्र दिन सकिन्छ।

मूल्याकंन स्तर (Evaluation Stage)					
विषयवस्तु	शिक्षक/शिक्षिकाको भूमिका	मैलिक युक्ति	शिक्षार्थीको कार्य	निर्धारित समय	शिक्षार्थीहरुको प्रतिक्रिया
कार्यपत्र मौखिक प्रश्नकरण सृजनात्मक कार्यहरुमा उत्साह प्रदान कार्यपत्र प्रदान गृह कार्य प्रदान	श्रेणीमा शिक्षार्थी हरुलाई मौखिक प्रश्न गर्नु, नक्सा, चार्ट तयारी निर्देश दिनु इत्यादि। कार्यपत्र दिएर श्रेणी मूल्यांकन सिकाईलाई निरन्तरता प्रदान गर्नु।	विषय स्पष्ट धारणा वुझ्नु।	शिक्षकको निर्दे श पालन गर्दै अभिझता पत्रमा उत्तर लेख्नेछन्। मौखिक प्रश्नको उत्तर दिनेछन्।	१० मिनट	विषयवस्तुको सठीक धारणा लाभ।

कर्मपत्र एकप्रकारको सिकाई-शिक्षण उपकरण हो, श्रेणी कक्षामा विषयवस्तु पाठदानको पूर्व अभिझानतासंग समन्वय गरेर नयाँ पाठ पढ़ाउनको निम्ति शिक्षक-शिक्षिकाले विभिन्न पथ अवलम्बन गर्न सक्छन्। यस्तो अवस्थामा नक्सा सहितको विभिन्न उपकरण व्यवहार गर्नपर्छ। अव फेरि कर्मपत्रको प्रयोग पनि गर्न सक्छन।

प्रस्तुति स्तरमा कर्मपत्रको व्यवहार : कर्मपत्र प्रस्तुति स्तरमा प्रदान गर्न अधि शिक्षक-शिक्षिकाले अवस्य नै याद राख्नु आवश्यक छ कि दिइने कर्मपत्रको विषयवस्तुसंग नयाँ पाठ प्रवेशसंग कुनै एउटा दृष्टिकोणमा सम्पर्क स्थापित भएको हुनुपर्दछ।

उपस्थापन स्तरमा कर्मपत्र व्यवहार : कर्मपत्रलाई उपस्थान गर्दा-गर्दै पनि व्यवहार गर्न सकिन्छ। त्यस्तो स्थितिमा विषयवस्तु उपस्थापन पश्चात दलगत कार्यको समय यस कर्मपत्र दिन सकिन्छ। यदि उपस्थापन स्तरमा कर्मपत्र दिइन्छ भने त्यो तयारीको समय विषयवस्तुसंग सम्वन्धित प्रसंग राखेर कर्मपत्र निर्माण गर्नुपर्दछ।

श्रेणीगत पाठ योजनाको नमूना

मातृभाषा/गणित/अंग्रेजी/परिवेश परिचय

जम्मा शिक्षण दिन : ☐ जम्मा पाठ योजना : ☐ विषय संख्या : ☐

विद्यालयको नाम :
श्रेणी : चौथो
औसत उमेर : 9 +
समय अवधि : 4० मिनट
तारीख
शिक्षक / शिक्षिकाको नाम :
क्रम संख्या :

विषय : मातृभाषा (नेपाली)
पाठ एकाई : भारतको झण्डा

आजको पाठ : भारतको झण्डा (सम्पूर्ण)

	उद्देश्यहरू
उद्देश्य	मुख्य उद्देश्य : (1) सन्ने, बोल्ले, पढ्ने क्षमताको विकास (2) पर्यवेक्षण क्ष्मतको विकास (3) तथ्यग्रहण क्षमता विकास (4) नयाँ शब्द (शब्द भण्डार) विकास विशेष उद्देश्य (क) मातृभूमिप्रतिको श्रद्धा अनि भक्ति विकास (ख) सृजनात्मक भावना विकास

प्रस्तुति स्तर (Preparation Stage)

	विषयवस्तु/उपादान	शिक्षक / शिक्षकाको भूमिका	मौलिक युक्ति	विद्यार्थीको भूमिका	समय	विद्यार्थी प्रतिक्रिया
प्रस्तुति	मौखिक जानकारी	हालचाल जत्ले छन् अनि उनीहरूले आफ्नो पाठशालामा कस्ता कस्ता कार्यहरू संचालन भएको देखेका छन्, सो बारे जानकारी लिने छन्।	स्मरण शक्ति जाँच	विद्यार्थीले सोच-विचार गर्नेछन् अनि एकाएक गर्दै भन्ने छन्।	2 मिनट	एका-एक विचार विमर्श गरी प्रतिक्रिया व्यक्त गर्नेछन्
	मौखिक जानकारी	पाठशाला पन्ध्र अगस्त कसरी मनाइन्छ, वा कुनै स्थानमा पन्ध्र अगस्त मनाएको दृश्य बारे जानकारी लिने छन्।	पूर्व ज्ञान जाँच	झण्डोत्तलन गर्नेछन् अनि मिठाई खानेछौ भन्ने छन्।	2 मिनट	विद्यार्थीहरूमा पुर्नस्मरण क्षमता दर्शाने छन्
	नयाँ पाठ घोषणा भारतको झण्डा पाठ घोषणा	झण्डोत्तलन गरे पछि के गीत गाइन्छ, सोध्निेछन्, गाउन लाउनेछन्। भारतको झण्डा देखाउनेछन्।	गायन दक्षता जाँच आग्रह सृष्टि पर्यवेक्षण	भारतको झण्डा आग्रही भएर हेर्नेदन्	1 मिनट	विद्यार्थीहरूमा भारत झण्डाको स्मरण वड्नेछ।

उपस्थापन स्तर (Presentation Stage)

	विषयवस्तु उपादान	शिक्षक / शिक्षकाको भूमिका	मौलिक युक्ति	विद्यार्थीको भूमिका	समय	विद्यार्थी प्रतिक्रिया
खोजी (Exploratopm)	आज.....।। भाषण दिनु भयो।	शिक्षक/शिक्षिकाले भारत स्वतन्त्र भएको दिन श्यामपटमा लेख्ने छन्– १५ अगस्त १९४७	तथ्य प्रदान	श्यामपटमा शि०/शि० को लेखन मन लाएर हेर्ने छन् अनि मुख्य तथ्य खातामा सार्नेछन्।		तारिख जानेको भए वताउनेछन्, ज्ञानको परिचय दिनेछन्।
		स्वतन्त्र दिवस मनाएको कारणवारे बताउने छन्	बोध क्षमता विकास	शि०/शि० ले बताएको कारणहरू बारे मन लाएर सुन्नेछन् अनि जिज्ञासु भएर प्रश्न सोध्नेछन्।	८ मिनट	विद्यार्थीहरूमा रंग सम्बन्धि स्पष्ट हुनेछ।
	तीन रंगको भाग	तीन रंगको झण्डा पुनः देखाउने छन् अनि दलमा विभाजित वा विद्यार्थीहरूले झण्डाको रंगबारे सोध्ने छन्।	विषयसित कलाविषयको समन्वय			ज्ञान विस्तृत हुनेछ। उत्साहित हुनेछन्।
	आर्दशपठन	बीचको चक्र बारे सोध्नेछन् अनि केहि विद्यार्थीलाई सस्वर पठन गर्न पनि लाउने छन्। यसरी पढ्दा भूल गरेमा संसोधन गर्ने छन्। शिक्षकले आजको पाठको अंशको आर्दश	जिज्ञासा उत्पन्न गराउनु	चक भनी बताउनेछन्। यस्तै चक आकारका वस्तुहरू, गाड़ी, साइकल, वसको, चक्का, बारे उदाहरण दिने छन्।		उत्साहित हुनेछन्।
विवरण (Explanation)	स–स्वर पठन गुरूले भन्नुभयो	पठन गर्ने छन्। शि०/शि० ले झण्डाको रंग देखाउदै एका–एक अर्थ	पठन क्षमता विकास बौद्धिक अनि नयाँ	सस्वर पठन गर्ने छन्। ध्यान लाएर सुन्नको साथै	१० मिनट	जिज्ञासा बड़नेछ रंगबारे नयाँ
	उन्नति गरीरहन पर्छ। (पाठ्यपुस्तक)	बताउने छन् अनि चकको अर्थ पनि बताउनेछन्। श्यामपटमा रंगको अर्थ पनि लेख्ने छन्। पहेलो वा गेरूवा – साहस र त्याग सेतो – सत्य र शन्ति हरियो – वीरता र साहस चक्र – गति / प्रगति	ज्ञान अनि सृजनात्मकता विकास	श्यामपटमा लेखिको अर्थ खातामा सार्नेछन् अनि अर्थ बुझ्न कोशिष गर्नेछन्।		ज्ञान पाउनेछन्।

उपस्थापन स्तर

	विषयवस्तु उपादान	शिक्षक / शिक्षकाको भूमिका	मौलिक युक्ति	विद्यार्थीको भूमिका	समय	विद्यार्थी प्रतिक्रिया
विस्तृतिकरण (Elaboration)	विषयलाई अन्य विषयसित समन्वय	प्रत्येक रंगको अर्थ सहित प्रत्येकको उदाहरण दिदै अझ गहिरो अर्थ बताउने छन् विषयलाई विज्ञान, कृषि, भूगोलित समन्वय गराउनेछन्। जस्तै रंगलाई कलसित हरियो रंगलाई कृषिसित इत्यादि।	बोध क्षमता विकास विभिन्न विषयसित समन्वय दक्षता विकास	गहिरिएर अर्थ वुइनेछन्। अरू विषयसितको ज्ञान वुइनेछन्। अरू विषयसितको ज्ञान प्रयोगलाउन छन्।	७ मिनट	भारतको झण्डाको प्रत्येक रंग र चक्रअर्थ गहिरोसित बुइनेछन्।

मूल्याङ्कन स्तर (Evaluation Stage)

	विषयवस्तु उपादान	शिक्षक / शिक्षकाको भूमिका	मौलिक युक्ति	विद्यार्थीको भूमिका	समय	विद्यार्थी प्रतिक्रिया
मूल्यांकन	मौखिक मूल्यांकन	शिक्षार्थीले आज पाठ बुझे–नवुझेको जाँच गर्न केही मौखिक प्रश्न गर्नेछन् : (1)भारतको झण्डामा कतिवटा रंगहरू छन्? (2)गेरूवा / सेतो / हरियो रंगको अर्थ के के हुन्? (3)चक्रको अर्थ के हो ?	कुनै रंगको अर्थ नबुझे त्यो दूर हुनेछ।	प्रश्नको उत्तर दिने छन् जस्तै : (1) तीनवटा – (2) गेरूवा अर्थ – (3) सेतो अर्थ – (4) हरियो अर्थ – (5) चक्रको अर्थ –	3 मिनट	उत्तर दिन पाउँदा उत्साहित बन्नेछन् अनि अझ बढ़ी सिक्न आग्रही वन्नेछन्
	कार्यपत्र आधारित मूल्यांकन गृह कार्य	शिक्षकले कार्यपत्र मार्फत मूल्याकंन गर्नेछन् खाली स्थान भर्नु जोडी मिलाउनु झण्डामा रंग भर्नु पठन–पाठनलाई निरन्तरता प्रदान गर्न आज पढ़ेको पाठ घरमा याद गरेर आउने आदेश दिनेछन्।	बौद्धिक क्षमता जाँच प्रयोग क्षमता वृद्धि सिकाई निरन्तरता	सही उत्तर लेख्ने चेष्टा गर्नेछन् अनि शिक्षक /शिक्षिकालाई देखाउने छन्। घरमा पाठ पढ़नेछन्।	7 मिनट	सिकाई प्रति प्रत्येकको ने सहभागिता रहनेछ। प्रयोग दक्षता बड़ने छ। पठन–पाठनमा घरको भूमिका

कार्यपत्र नमूना

श्रेणी : ————————— विषय : ——————————

नाम : —————————— पाठ : ———————————

1. तलका खाली ठाउँमा उचित शब्द छानेर लेख :

(क) भारतको झण्डामा ————————— (तीन/पाँच) वटा रंगहरू हुछन्।

(ख) भारतवर्ष स्वतन्त्र भएको साल हो —————————— (14 अगस्त 1953/15 अगस्त 1947)।

(ग) भारत वर्षमा —————————— (अंग्रेजी/जापानी) हरूले 2 सय वर्षसम्म राज गरे।

(घ) चकको अर्थ हो ——————————(गति/घुम्नु)।

(ङ) मानिसले सधैं ——————————(उन्नति/बसीरहनु) गर्नु पर्छ।

2. जोड़ा मिलाऊ :

(क)	(ख)
(क) गेरूवा रंग को अर्थ	वीरता र साहस
(ख) सेतो रंगको अर्थ	साहस र त्याग
(ग) हरियो रंगको अर्थ	सत्य र शान्ति

3. तलका भारतको झण्डामा ठीक रंग लगाऊ अनि बीचमा चक्र बनाऊ :

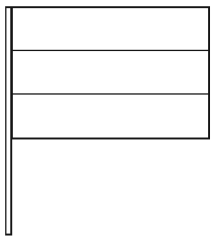

4. वाक्य बनाऊ :

झण्डा =

रंग =

सत्य =

खेतपाती =

प्रगति =

Note